श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

❖ सिनगार ❖

श्री किताब महासिनगार की जो हुकमें बरनन किया

मंगला चरण

बरनन करो रे रूहजी, हकें तुम सिर दिया भार ।
अर्स किया अपने दिल को, मांहें बैठाओ कर सिनगार ।।१।।

रूह चाहे बरनन करूं, अखंड सरूप की इत ।
सुपने में सत सरूप की, किन कही न हक सूरत ।।२।।

रात दिन बसें हक अर्स में, मेरा दिल किया अर्स सोए ।
क्यों न होए मोहे बुजरकियां, ऐसा हुआ न कोई होए ।।३।।

किन कायम[1] द्वार न खोलिया, अव्वल से आज दिन ।
जो कोई बोल्या सो फना मिने, किन पाया न बका वतन ।।४।।

अर्स बका हक बरनन, सो बीच फना जिमी क्यों होए ।
अव्वल से आज दिन लगे, बका सब्द न बोल्या कोए ।।५।।

ए चेतन कहावे झूठी जिमी, सो सब जड़ तूं जान ।
जो थिर कहावे अर्स में, सो चेतन सदा परवान ।।६।।

१. अखंड ।

ए झूठी रवेसें[1] और हैं, और अर्स में और न्यामत[2] ।
ए किया निमूना अर्स जानने, पर बने ना तफावत[3] ।।७।।

सतलोक मृतलोक दो कहे, और स्वर्ग कह्या अमृत ।
जो नीके किताबें देखिए, तो ए सब उड़सी असत ।।८।।

इन झूठी जिमी में केहेत हों, सांच झूठ हैं दोए ।
जब आगूं अर्स के देखिए, तब इनमें न सांचा कोए ।।९।।

अर्स हमेसा कायम, ए दुनी न तीनों काल ।
हुआ है ना होएसी, तो क्यों दीजे अर्स मिसाल ॥१०॥

ए बारीक बातें अर्स की, इन दिल जुबां पोहोंचे नाहें ।
ए हुकम कहावे हक का, इलम हुकम के मांहें ॥११॥

सत सुख कई सरूप में, कई आनन्द आराम ।
कई खुसाली खूबियां, अंग छूटे न आठों जाम ॥१२॥

अर्स सबे है चेतन, हर चीज में सब गुन ।
सब न्यामतें एक चीज में, कमी न मांहें किन ॥१३॥

इन झूठी जिमी में बरनन, सत सरूप को कह्यो न जाए ।
कबूं किन कानों ना सुनी, सो क्यों जीव हिरदे समाए ॥१४॥

ए लीला जानें सृष्ट ब्रह्म की, जाए पोहोंच्या होए तारतम ।
ए दृष्ट पूरन तब खुले, जाए अव्वल आखिर इलम ॥१५॥

कहे वेद वैराट कछुए नहीं, जैसे आकास फूल ।
ए चौदे तबक जरा नहीं, ना कछू डाल न मूल ॥१६॥

कतेबे भी यों कह्या, चौदे तबक ए जोए ।
एक जरा नजरों न आवहीं, जाके टूक न होवें दोए ॥१७॥

ऐसा चौदे तबक का निमूना, क्यों हक को दिया जाए ।
ए सब्द झूठी जिमी का, क्यों सकिए अर्स पोहोंचाए ॥१८॥

१. रसमें, चाल । २. अमूल्य पदार्थ । ३. फर्क ।

कही जाए न सोभा इन मुख, ना कछू दई जाए साख ।
एक जरा हरफ न पोहोंचहीं, जो सब्द कहिए कई लाख ॥१९॥

ना अर्स बका किन देखिया, ना कछू सुनिया कान ।
तरफ भी किन पाई नहीं, तो करे सो कौन बयान ॥२०॥

एक कह्या अर्स-अजीम[१], दूजा सदरतुल-मुंतहा[२] ।
तीसरा कह्या मलकूत[३], जो अर्स[४] फरिस्तों[५] का ॥२१॥

ए तीनों अर्स मुख थें कहें, पर बेवरा न पासे किन ।
ए दुनियां क्यों समझे, हकीकत खोले बिन ॥२२॥

हक हुकम जाहेर हुआ, दोऊ हादी हुए मेहेरबान ।
खुली हकीकत मारफत, तो जाहेर करूं फुरमान ॥२३॥

ए तीनों गिरो का बेवरा, एक रूहें और फरिस्ते ।
तीसरी खलक आम जो, कुन्न केहेते उपजे ॥२४॥

रूहें गिरो कही लाहूती, और फरिस्ते जबरूती ।
और गिरो जो तीसरी, जो कही मलकूती ॥२५॥

अव्वल खासल खास रूहन की, गिरो फरिस्तों की खास कही ।
और कुन्न की तीसरी, ए जो आम खलक भई ॥२६॥

दुनियां सरीयत फरज बंदगी, और फरिस्तों बंदगी हकीकत ।
रूहों हकीकत इस्क, और इन पे है मारफत ॥२७॥

रूहें आसिक सोई लाहूती, जाके अर्स-अजीम में तन ।
कह्या हकें दोस्त रूहें कदीमी[६], जो उतरे अर्स से मोमिन ॥२८॥

अर्स कह्या दिल मोमिन, जो मोमिन दिल आसिक ।
सो मोमिन कछुए न राखहीं, बिना अर्स बका हक ॥२९॥

सोई मोमिन जानियो, जो उड़ावे चौदे तबक ।
एक अर्स के साहेब बिना, और सब करे तरक ॥३०॥

१. परमधाम । २. अक्षरधाम । ३. वैकुंठ । ४. धाम । ५. देवताओं । ६. पुरातन ।

उतरे हैं अर्स से, वे कहे महंमद मेरे भाई ।
सो आखिर को आवसी, ए जो अहेल[1] इलाही ॥३१॥

वे फकीर अतीम हैं, मुझे उठाइयो उनों में ।
हक बरकत दुनियां मिने, होसी सब इनों से ॥३२॥

मोहे इलम दिया हक ने, सो इनों को देसी इमाम ।
आखिर बड़ाई इनों की, कहे मुसाफ हदीसें तमाम ॥३३॥

ए मांग्या अलिएं हकपे, मुझे उठाइयो आखिरत ।
मेहेंदी के यारों मिने, मैं पाउं निसबत ॥३४॥

इमाम जाफर सादिक, उनोंने मांग्या हकपे ।
मुझे उठाइयो आखिरत, मेहेंदी के यारों में ॥३५॥

मूसा इबराहीम इस्माईल, जिकरिया एहिया सलेमान ।
दाऊदें मांग्या मेंहेंदी जमाना, उस बखत उठाइयो सुभान ॥३६॥

लिख्या यों फुरमान में, सब आवेंगे पैगंमर ।
जासी जलती दुनियां सब पे, कोई सके न मदत कर ॥३७॥

आखिर महंमद छुड़ावसी, और आग न छूटे किन से ।
सब जलें आग दोजख की, ए लिख्या जाहेर फुरमान में ॥३८॥

सब पैगंमर सरमिंदे, होसी बीच आखिरत ।
इत छिपी न रहे कछुए, खुले पट हकीकत मारफत ॥३९॥

पीठ देवे दुनी को, सो मोमिन मुतलक[2] ।
देखो कौल सबन के, सब बोले बुध माफक ॥४०॥

मांहें मैले बाहेर उजले, सो तो कहे मुनाफक ।
मासिवा-अल्लाह[3] छोड़ें मोमिन, तामें कुफर नहीं रंचक ॥४१॥

पाक दिल पाक रूह, जा में जरा न सक ।
जा को ऊपर ना डिंभक[4], एक जरा न रखे बिना हक ॥४२॥

१. वारिस । २. बिल्कुल । ३. परमात्मा के सिवाय और सब को । ४. दिखावा - बनावट ।

सरभर एक मोमिन के, कई कोट मिलो खलक ।
जा को मेहेर करें मोमिन, ताए सुपने नहीं दोजक ॥४३॥

तुम सुनो मोमिनों वचन, जो धनिएँ कहे मुझे आए ।
साथ आया अपना खेलमें, सो लीजो सबे बोलाए ॥४४॥

मोहे कह्या आप श्री मुख, तेरी अर्स से आई आतम ।
तो को दिया अपनायत जानके, हक बका अर्स इलम ॥४५॥

निज हुकम आया सिर मोमिनों, जिनके ताले निज नूर ।
ऐसे ताले[1] हमारी रूह के, क्यों न करें हम हक जहूर ॥४६॥

ब्रह्मसृष्ट हुती बृज रास में, प्रेम हुतो लछ बिन ।
सो लछ अव्वल को ल्याय रूह अल्ला, पर न था आखिरी इलम पूरन ॥४७॥

जो लों मुतलक इलम न आखिरी, तो लों क्या करे खास उमत ।
पेहेचान करनी मुतलक, जो गैब हक खिलवत ॥४८॥

लिख भेज्या फुरमान में, हक रमूजें इसारत ।
सो पाइए इलम हक के, जब खुलें हकीकत मारफत ॥४९॥

जो कीजे बरनन हक बका, होए जोस मेहेर हुकम ।
निसबत हक हादीय सों, और आखिर इस्क इलम ॥५०॥

अर्स अरवाहों को चाहिए, खोलें रूह की नजर ।
तब देखें आम खलक को, ज्यों खेल के कबूतर ॥५१॥

तो न लेवें निमूना इनका, ना लेवें इनकी रसम ।
हक बिना कछुए ना रखें, अर्स अरवाहों ए इलम ॥५२॥

इत सब मुतलकियाँ[2] चाहिए, बरनन करना मुतलक ।
लिख्या आखिर जाहेर होएसी, सूरत बका जात हक ॥५३॥

लिख्या अव्वल फुरमान में, जाहेर होसी कयामत ।
जो लों होए इलम मुकैयद[3], तोलों जाहेर न हक मारफत ॥५४॥

१. भाग्य में । २. पूर्णतः - सम्पूर्णतः। ३. सीमित - अधूरा ।

जेती चीजें अर्स में, सो सब मुतलक न्यामत ।
सो मुतलक इलम बिना, क्यों पाइए हक खिलवत ॥५५॥
ए जो चौदे तबक का बातून, तिन बातून का बातून नूर ।
ताको भी बातून नूर बिलंद, केहेना तिन बिलंद का बातून जहूर ॥५६॥
ए बातून अर्स बारीकियां, सो होए मुतलकियों इलम ।
अर्स बका करें जाहेर, सबों भिस्त देवें हुकम ॥५७॥
बरनन करें बका हक की, हम जो अर्स अरवा ।
लेवें सब मुतलकियां, हम सें रहे न कछू छिपा ॥५८॥
और बात बारीक ए सुनो, अर्स छोड़ न आए मोमिन ।
और बातें मुतलक खेल की, करसी अर्स में देखे बिन ॥५९॥
हम झूठी जिमी में आए नहीं, झूठ रहे न हमारी नजर ।
ब्रह्मांड उड़ावे अर्स कंकरी, तो रूहों आगे रहे क्यों कर ॥६०॥
और माया देखाई हम को, करी वास्ते हमारे ए ।
होसी पूरन हमारी अर्स में, रूहें उमेद करी दिल जे ॥६१॥
हम रूहें न आइयां खेल में, हक अर्स सुख लिए इत ।
हक हुकमें इलम या विध, सुख दिए कर हिकमत ॥६२॥
हम तो हुए इत हुकम तले, मैं न हमारी हम में ।
ए मैं बोले हक का हुकम, यों बारीक अर्स माएने ॥६३॥
हुकम किया चाहे बरनन, ले हक हुकम मुतलक ।
करना जाहेर बीच झूठी जिमी, जित छूटी न कबूं किन सक ॥६४॥
दिन एते हक जस गाइया, लदुन्नी का बेवरा कर ।
हकें हुकम हाथ अपने लिया, जो दिया था महंमद के सिर पर ॥६५॥

॥प्रकरण॥१॥चौपाई॥६५॥

हुकमें इस्क का द्वार खोल्या है

अब हुकमें द्वारा खोलिया, लिया अपने हाथ हुकम ।
दिल मोमिन के आए के, अर्स कर बैठे खसम ॥१॥

हक अर्स दिल मोमिन, और अर्स हक खिलवत ।
वाहेदत बीच अर्स के, है अर्स में अपार न्यामत ।।२।।

ए साहेदी जाहेर सुनो, जो लिखी मांहें फुरमान ।
अर्स कह्या दिल मोमिन, अर्स में सब पेहेचान ।।३।।

हक हादी रूहें अर्स में, इस्क इलम बेसक ।
जोस हुकम मेहरबानगी, हकीकत मारफत मुतलक ।।४।।

दिल मोमिन अर्स कह्या, सब अर्स में न्यामत ।
सो क्यों न करे दिल बरनन, जाकी हक सों निसबत ।।५।।

सब बातें हैं अर्स में, और अर्स में वाहेदत ।
हौज जोए बाग अर्स में, अर्स में हक खिलवत ।।६।।

सो अर्स कह्या दिल मोमिन, सो काहे न करे बरनन ।
जिन दिल में ए न्यामत, सो मुतलक अर्स रोसन ।।७।।

हम सिर हुकम आइया, अर्स हुआ दिल हम ।
एही काम हक इलम का, तो सुख काहे न लेवें खसम ।।८।।

कह्या अर्स हमारे दिल को, हैं हमहीं हक हुकम ।
क्यों न आवे इस्क हक का, यों बेसक हैयाती इलम ।।९।।

चरन बासा हमारे दिल में, रहे रूह के नैनों मांहें ।
क्यों न्यारे हम से रहें, हम बसें हक हैं जांहें ॥१०॥

मेरे सब अंगों हक हुकम, बिना हुकम जरा नाहें ।
सोई हुकम हक में, हक बसें अर्स में तांहें ॥११॥

हम अरस-परस हैं हक के, ए देखो मोमिनों हिसाब ।
हम हकमें हक हममें, और हक बिना सब ख्वाब ॥१२॥

हक हुकमें सब मिलाइया, अर्स मसाला पूरन ।
हादी रूहों जगावने, करावने हक बरनन ॥१३॥

आखिर मोमिन आकिल[१], कह्या जिनका दिल अर्स ।
तो हक दिल का जो इस्क, सो मोमिन पीवें रस ॥१४॥

विचार करें दिल मोमिन, जो अर्स मता दिल हम ।
तो हक दिल होसी कौन न्यामत, जो हक वाहेदत[२] खसम ॥१५॥

देखो मोमिनों के दिल में, कही केती अर्स बरकत ।
विचार देखो हक दिल में, क्या होसी हक न्यामत ॥१६॥

हक हादी अर्स मोमिन, सो तो पेहेले हक दिल मांहें ।
जो चीज प्यारी रूह को, तो हक पल छोड़ें नाहें ॥१७॥

जो मता[३] कह्या दिल मोमिन, सो मोमिन दिल समेत ।
सो बसत हक के दिल में, सो हक दिल मता रूह लेत ॥१८॥

जो रूह पैठे हक दिल में, सो मगन मांहें न्यामत ।
जो तित पड़ी कदी खोज में, तो छूटे ना लग कयामत ॥१९॥

जो सुराही हक की पीवना, सो इस्क हक दिल मिने ।
सो मोमिन पीवे कोई पैठके, और पिया न जाए किने ॥२०॥

कुलफ था एते दिन, द्वार इस्क न खोल्या किन ।
सो खोल दिया हकें मेहेर कर, अपने हाथ मोमिन ॥२१॥

गंज[४] खोलसी इस्क का, मोहोर हुती जिन पर ।
लेसी अछूत प्याले मोमिन, हकें खोली मोहोर[५] फजर ॥२२॥

ए पिएँ प्याले मोमिन, हक सुराही सराब ।
लाड़ लज्जत लें अर्स की, ए मस्ती मांहें आब ॥२३॥

हक सुराही ले हाथ में, दें मोमिनों भर भर ।
सुख मस्ती देवें अपनी, और बात न इन बिगर ॥२४॥

अमल ऐसा इन मद का, अर्स रूहें रही छकाए ।
छाके ऐसे नींद सुपन में, जानों अर्स में दिए जगाए ॥२५॥

१. बुद्धिमान । २. एक दिल, एकत्व । ३. पूंजी, ज्ञान का खजाना । ४. खजाना । ५. मुहर ।

पेहेले एक ए हक के दिल में, रूहों लाड़ कराऊं निस दिन ।
बेसुमार बातें हक दिल में, सब इस्क वास्ते मोमिन ॥२६॥

ए खेल किया वास्ते इस्क, वास्ते इस्क पेहेचान ।
जुदे किए इस्क वास्ते, देने इस्क सुख रेहेमान ॥२७॥

मोमिन उतरे इस्क वास्ते, वास्ते इस्क ल्याए ईमान ।
ईमान न ल्याए सो भी इस्कें, इस्कें न हुई पेहेचान ॥२८॥

कम ज्यादा सब इस्कें, इस्कें दोऊ दरम्यान ।
इस्कें बंदगी या कुफर, सब वास्ते इस्क सुभान ॥२९॥

छोटी बड़ी या जो कछू, ए जो चौदे तबक की जहान ।
ए भी हक इस्क तो पाइए, जो होए बेसक पेहेचान ॥३०॥

जो न्यामत हक के दिल में, तिन का क्योंए ना निकसे सुमार ।
सो सब इस्क हक का, रूहों वास्ते इस्क अपार ॥३१॥

ए इलम आया जब रूह को, तब पेहेचान आई मुतलक ।
जो हरफ निकसे दुनी का, सो सब देखे इस्क हक ॥३२॥

जब ए इलम रूहों पाइया, इस्क हो गया चौदे तबक ।
और देखे न कछुए नजरों, सब देखे इस्क हक ॥३३॥

रूह देखे अपने इस्क सों, होसी कैसा हक इस्क ।
कैसा इलम तो को भेजिया, जामें सक नहीं रंचक ॥३४॥

त्रिलोकी त्रैगुन में, कहूं नाहीं बेसक इलम ।
सो हकें भेज्या तुम ऊपर, ए देखो इस्क खसम ॥३५॥

किए चौदे तबक तुम वास्ते, इनमें मता है जे ।
ए भी हक इस्क तो पाइए, जो देखो हक इलम ले ॥३६॥

फुरमान भेज्या हकें इस्कें, इस्कें लिखी इसारत ।
तुमें कुन्जी दई हकें इस्कें, खोलनें हक मारफत ॥३७॥

फुरमान कोई न खोल सके, सो भी इस्क कारन ।
खिताब दिया सिर एक के, सो भी वास्ते इस्क मोमन ॥३८॥

सब दुनियां हक इस्क हुआ, तो देखो अर्स में होसी कहा ।
ए आया इलम रूहन पर, हकें भेज्या ए तोफा[1] ॥३९॥

विचार किए इत पाइए, हुआ एही अर्स सहूर ।
वाको लिख्या कुरान में, ए जो कह्या नूर का नूर ॥४०॥

ए जाहेर कही हक वाहेदत, हक हादी उमत बातन ।
सो करूं जाहेर बरकत हादियों, पर अव्वल नफा लेसी मोमिन ॥४१॥

चरन ग्रहों नूर जमाल के, जिनने अर्स किया मेरा दिल ।
सो बयान करत है हुकम, हक सुख लेसी मोमिन मिल ॥४२॥

अर्स हमेसा कायम, जो हक का हुआ तखत ।
सो कायम दिल मोमिन का, जित है हक खिलवत ॥४३॥

कदमों लाग करूं सिजदा, पकड़ के दोऊ पाए ।
हुकम करत हैं मासूक, बीच आसिक के दिल आए ॥४४॥

मासूक तुमारी अंगना, तुम अंगना के मासूक ।
ए हुकमें इलम दृढ़ किया, अजूं रूह क्यों न होत टूक टूक ॥४५॥

इतहीं सिजदा बंदगी, इतहीं जारत[2] जगात[3] ।
इतहीं जिकर हक दोस्ती, इतहीं रोजा खोलात ॥४६॥

दिल को तुम अर्स किया, तुम आए बैठे दिल मांहें ।
हम अर्स समेत तुम दिल में, अजूं क्यों जोस आवत नाहें ॥४७॥

दिल अर्स हुआ हुकमें, तुम आए अपने हुकम ।
इस्क इलम सब हुकमें, कहू जरा न बिना खसम ॥४८॥

बुध जाग्रत इलम हक का, और हकै का हुकम ।
जोस अर्स का दिल में, ए सब मिल दिल में हम ॥४९॥

१. उपहार । २. दर्शनार्थ तीर्थयात्रा । ३. दान पुण्य ।

अब दिल में ऐसा आवत, ए सब करत चतुराए ।
फेर देखूं इन चतुराई को, तो हक बिन हरफ न काढ़्यो जाए ॥५०॥

हक चतुराई ना चौदे तबकों, हक बका कही न किन तरफ ।
ला मकान सुन्य छोड़ के, किन सीधा कह्या न एक हरफ ॥५१॥

हक चतुराई हक इलम, और हकै का हुकम ।
ए तीनों मिल केहेत हैं, है बात बड़ी खसम ॥५२॥

ला मकान सुन्य के परे, हुआ नूर अछर ।
कोट ब्रह्मांड उपजे खपे, एक पाउ पल की नजर ॥५३॥

अछरातीत नूरजमाल, ए तरफ जानें अछर नूर ।
एक या बिना त्रैलोक को, इन तरफ की न काहू सहूर ॥५४॥

तो कह्या आगूं हक बुध के, चौदे तबकों सुध नाहें ।
सो बुध जाग्रत महंमद रूहअल्ला, दई मेरे हिरदे मांहें ॥५५॥

पातसाही एक खावंद की, बीच साहेबियां दोए ।
ए वाहेदत की हकीकत, बिना मारफत न जाने कोए ॥५६॥

सो बुध दोऊ अर्सों की, दोऊ सरूप थें जो गुझ ।
ए सुख कायम अर्स रूहन के, सो कायम कुंजी दई मुझ ॥५७॥

और सुख बारीक ए सुनो, कहे नूर[१] नूरतजल्ला[२] दोए ।
नूरतजल्ला के अंदर की, सुध नहीं नूर को सोए ॥५८॥

जित चल न सके जबराईल, कहे आगूं जलत मेरे पर ।
जलावत नूर तजल्ली[३], मैं चल सकों क्यों कर ॥५९॥

सो सुध बातून[४] नूरजमाल की, अर्स अजीम के अन्दर ।
दोऊ हादियों मेहेर कर, पट खोल दिए अंतर ॥६०॥

जो सुध नहीं नूर जाग्रत, नूरजमाल का बातन ।
सो बेसक सुध हके मोहे दई, सो मैं पाई वजूद सुपन ॥६१॥

१. अक्षरब्रह्म । २. अक्षरातीत । ३. तेज । ४. अंदर का ।

रूहें अंदर अर्स अजीम के, जो अरवा बारे हजार ।
हक ऊपर बैठ देखावत, ए जो खेल कुफार ॥६२॥

सो भिस्त दई हम सबन को, कर जाहेर बका अर्स इत ।
करें त्रैलोकी त्रिगुन कायम, ब्रह्मसृष्ट की बरकत ॥६३॥

ए बात बारीक अति बुजरक, दोऊ सरूपों सुख बातन ।
करी परीछा इस्क साहेबी, सुख होसी नूर रूहन ॥६४॥

करसी कायम खाकीबुत[1] को, करके नूर सनमुख ।
इन से अछर और मोमिन, लेसी कायम अर्स के सुख ॥६५॥

ए सुख जानें नूरजमाल, या जानें नूर अछर ।
या हम रूहें जानहीं, कहे महामत हुकमें यों कर ॥६६॥

॥प्रकरण॥२॥चौपाई॥१३१॥

आसिक इन चरन की, आसिक की रूह चरन ।
एह जुदागी क्यों सहे, रूह बिना अपने तन ॥१॥

जो रूह अर्स की मोमिन, तिन सब की ए निसबत ।
दिल मोमिन अर्स इन माएनों, इन दिल में हक सूरत ॥२॥

हक सूरत रूह मोमिन, निसबत एह असल ।
मोमिन रूहें कही अर्स की, तो अर्स कह्या मोमिन दिल ॥३॥

ए चरन दोऊ हक के, आए धरे मेरे दिल मांहें ।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, आई न्यामत हक हैं जांहें ॥४॥

ए चरन हुए अर्स मासूक, हुआ अर्स चरन दिल एक ।
ए वाहेदत जुदागी क्यों होए, जो ताले लिखी ए नेक ॥५॥

अर्स अरवाहें जो वाहेदत में, सो सब तले हक नजर ।
इस्क सुराही हाथ हक के, रूहों पिलावें भर भर ॥६॥

१. नश्वर शरीर, मनुष्य तन ।

इस्क हक के दिल में, सो दिल पूरन गंज अपार ।
असल तन इत जिनों, सो ए रस पीवनहार ।।७।।

सराब हक सुराही का, पिया अरवाहों जिन ।
आठों जाम चौसठ घड़ी, क्यों उतरे मस्ती तिन ।।८।।

असल अरवाहें अर्स की, जो हैं रूह मोमिन ।
एक निसबत जानें हक की, जिनों मासूक प्यारे चरन ।।९।।

मोमिन वासा चरन तले, अर्स अरवाहों का मूल ।
मोमिन आए इत अर्स से, तो फुरमान ल्याए रसूल ।।१०।।

तो कह्या मोमिन खाना दीदार, पानी पीवना दोस्ती हक ।
तवाफ[१] सिजदा इतहीं, करें रूह कुरबानी मुतलक[२] ।।११।।

रूहें अव्वल आखिर इतहीं, मोमिन ना दूजा ठौर ।
कहे चौदे तबक जरा नहीं, बिना वाहेदत ना कछू और ।।१२।।

जो अब भी जाहेर ना होती, बका हक सूरत ।
तो क्यों होती दुनी हैयाती[३], क्यों भिस्त द्वार खोलत ।।१३।।

जो दीदार न होता दुनी को, तो क्यों करते इमाम इमामत ।
क्यों जानते कयामत को, जो जाहेर न होती निसबत ।।१४।।

अर्स बका द्वार न खोलते, तो क्यों होती सिफायत[४] महंमद ।
हक के कौल सबे मिले, जो काफर करत थे रद ।।१५।।

कह्या अव्वल महंमद ने, हक अमरद[५] सूरत ।
मैं देखी अर्स अजीम में, पोहोंच्या बका बीच खिलवत ।।१६।।

हौज जोए बाग जानवर, जल जिमी अर्स मोहोलात ।
और अनेक देखी न्यामतें, गुझ जाहेर करी कई बात ।।१७।।

सो बरनन हुई हक सूरत, जासों महंमदें करी मजकूर ।
नब्बे हजार हरफ सुने, नूर पार पोहोंच हजूर ।।१८।।

१. परिकरमा । २. बेसक । ३. अखंड । ४. सिफारिस । ५. किशोर ।

हक हुकमें कछू जाहेर किए, और छिपे रखे हुकम ।
सो हुकमें अव्वल आखिर को, अब जाहेर किए खसम ॥१९॥

सब कोई कहे खुदा एक है, दूजा कहे न कोए ।
कलाम अल्ला कहे एक खुदा, दूजा बरहक महंमद सोए ॥२०॥

सो महंमद कहे मैं उमत से, मुझसे है उमत ।
मैं उमत बिना न पी सकों, हक हजूर सरबत ॥२१॥

खुदा एक महंमद साहेद[१], मसहूद[२] है उमत ।
ए तीनों अर्स अजीम में, ए वाहेदत बीच हकीकत ॥२२॥

ए उपले माएने तीन कहे, और चौथा नूर मकान ।
ए बातें मारफत की, सब मिल एक सुभान ॥२३॥

रसूलें एता इत जाहेर किया, और हरफ रखे छिपाए ।
हक मेला बड़ा होएसी, सो करसी जाहेर खिलवत आए ॥२४॥

बसरी मलकी और हकी, कही महंमद तीन सूरत ।
तामें दोए देसी हक साहेदी, हकी खोले सब हकीकत ॥२५॥

हकी हक अर्स करे जाहेर, ऊग्या कायम सूर फजर ।
होसी सब हैयाती, देख कायम खिलवत नजर ॥२६॥

ले हकी सूरत हक इलम, करसी जाहेर हक बिसात ।
खिलवत भी छिपी ना रहे, करे जाहेर वाहेदत हक जात ॥२७॥

फजर कही जो फुरमाने, सो अर्स बका हक दिन ।
जो लों बका तरफ पाई नहीं, तो लों सबों ना रोसन ॥२८॥

अब दिन कायम जाहेर हुआ, सबों रोसनी पोहोंची बका हक ।
कायम किए सब हुकमें, बरस्या बका इस्क मुतलक ॥२९॥

रूह अल्ला चौथे आसमान से, आए खोली सब हकीकत ।
ल्याए इलम लदुन्नी, कही सब हक मारफत ॥३०॥

१. साक्षी । २. उपस्थित ।

जो कही महंमद ने, हक जात सूरत ।
सोई कही रूहअल्ला ने, यामें जरा न तफावत ॥३१॥

जो अमरद कह्या महंमदें, सोई कही ईसे किसोर सूरत ।
और सब चीजें कही बराबर, दोऊ मकान हादी उमत ॥३२॥

हौज जोए बाग अर्स के, जो कछू अर्स बिसात ।
कहूं केती अर्स साहेदियाँ, इन जुबां कही न जात ॥३३॥

बरकत कुंजी रूहअल्ला, हुआ बेवरा तीन उमत ।
पूरी उमेदें सबन की, जाहेर होते हक सूरत ॥३४॥

ले ग्वाही दोऊ हादियों की, किया हक बरनन ।
सब कौल किताबों के, हक हुकमें किए पूरन ॥३५॥

वाहेदत अर्स अखंड, असल नकल नहीं दोए ।
घट बढ़ अर्स में है नहीं, न नया पुराना होए ॥३६॥

रंग नंग रेसम मिलाए के, हेम जवेर कुंदन ।
इन विध बनावे दुनियां, वस्तर और भूखन ॥३७॥

अर्स सरूप जो अखंड, ताको होए कैसे बरनन ।
एक उतार दूजा पेहेरना, ए होए सुपन के तन ॥३८॥

ए विध अर्स में हैं नहीं, जो करत है नकल ।
ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, अर्स में एकै असल ॥३९॥

ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, अखंड सरूप के एह ।
इत नहीं भांत सुपन ज्यों, दुनी पेहेन उतारत जेह ॥४०॥

सब चीजें रूह के हुकमें, करत चाह्या पूरन ।
रूह कछुए चित्त में चितवे, सो होत सबे मांहें खिन ॥४१॥

ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, तिन सब अंगों सुख दायक ।
सोभा भी तैसी धरे, जैसा अंग तैसा तिन लायक ॥४२॥

हर एक में अनेक रंग, हर एक में सब सलूक[1] ।
कई जुगतें हर एक में, सुख उपजत रूप अनूप[2] ॥४३॥

सब नंग में गुन चेतन, मुख थें केहेना पड़े न किन ।
दिल में जैसा उपजे, सो आगूं होत रोसन ॥४४॥

अर्स सुख जो बारीक, सो जानत अरवा अर्स के ।
ए झूठी जिमी जो दुनियां, सो क्यों कर समझे ए ॥४५॥

जेता वस्तर भूखन, सब रंग रस कई गुन ।
रूह कछुए कहे एक जरे को, सो सब आगूं होत पूरन ॥४६॥

अनेक सिनगार एक खिन में, चित्त चाह्या सब होत ।
दिल में पीछे उपजे, ओ आगे धरे अंग जोत ॥४७॥

कई रंग रस नरमाई, कई सुख बानी जोत खुसबोए ।
ए अर्स वस्तर भूखन की, क्यों कहूं सोभा सलूकी सोए ॥४८॥

मीठी बानी चित्त चाहती, खुसबोए नरमाई चित्त चाहे ।
सोभा सलूकी चित्त चाही, ए अर्स सुख कहे न जाए ॥४९॥

अर्स बका की हकीकत, मांहें लिखी कतेब वेद ।
खोले जमाने का खावंद, और खोल न सके कोई भेद ॥५०॥

लिख्या वेद कतेब में, सोई खोलें जिन सिर खिताब ।
देसी मुक्त सबन को, करके अदल[3] हिसाब ॥५१॥

सातों सरूप अखंड, मैं बरनन किए सिर ले ।
दो रास पांच अर्स अजीम, बोझ दिया न सिर सरूपों के ॥५२॥

जो लों इलम को हुकमें, कह्या नहीं समझाए ।
तो लों सो रूह आप को, क्यों कर सके जगाए ॥५३॥

जब रूह को जगावे हुकम, तब रूह आपै छिप जाए ।
तब रहे सिर हुकम के, यों हुकमें इलम समझाए ॥५४॥

१. सद्‌भाव । २. शब्दातीत, अद्वितीय । ३. न्याय ।

जाहेर किया हक इलमें, रूह सिर आया हुकम ।
सोई करे हक बरनन, ले हकै हुकम इलम ॥५५॥

हुकमें बेसक इलम, और हुकमें जोस इस्क ।
मेहेर निसबत मिलाए के, बरनन करे अर्स हक ॥५६॥

एही आसिक करे बरनन, और आसिकै सुने इत ।
ए केहेवे लेवें मोमिन, या रसूल तीन सूरत ॥५७॥

मैं हक अर्स में जुदे जानती, ल्यावती सब्द में बरनन ।
जड़ में सिर ले ढूंढ़ती, हक आए दिल बीच चेतन ॥५८॥

कहूं इनका बेवरा, सिर हुकम लेसी मोमिन ।
सो हुकमें समझ जागसी, मिले हुकमें हक वतन ॥५९॥

हुकमें चले हुकम, हुकमें जाहेर निसबत ।
हुकमें खिलवत जाहेर, हुकमें जाहेर वाहेदत ॥६०॥

हुकमें दिल में रोसनी, सुध हुकमें अर्स नूर ।
मुकैयद[१] मुतलक[२] हुकमें, हुकमें अर्स सहूर ॥६१॥

कोई दम न उठे हुकम बिना, कोई हले ना हुकम बिना पात ।
तहां मुतलक हुकम क्यों नहीं, जहां बरनन होत हक जात ॥६२॥

हक बातें रूह हुकमें सुने, हुकमें होए दीदार ।
हुकमें इलम आखिरी, खोले हुकमें पार द्वार ॥६३॥

ए बरनन होत सब हुकमें, आया हुकमें बेसक इलम ।
हुकमें जोस इस्क सबे, जित हुकम तित खसम ॥६४॥

जब ए द्वार हुकमें खोलिया, हुकमें देख्या हक हाथ ।
तब रही ना फरेबी खुदी, वाहेदत हुकम हक साथ ॥६५॥

पेहेले हुकमें इलम जाहेर, हुआ हुकमें हक बरनन ।
मैं हुकम लिया सिर अपने, अब रूह छिप गई हक इजन[३] ॥६६॥

१. एक पक्षीय ज्ञान (सीमित ज्ञान) । २. रिहा करने वाला, बेसक । ३. हुकम ।

हक बैठे दिल अर्स में, कह्या हकें अर्स दिल मोमिन ।
रूहें पोहोंचाई हकें अर्स में, हक बैठे अर्स दिल रूहन ॥६७॥

हक रूहें बीच अर्स के, नहीं जुदागी एक खिन ।
हुकमें नैन कान दीजिए, अब देखो नैनों सुनो वचन ॥६८॥

अब हकें हुकम चलाइया, खुदी फरेबी[1] गई गल ।
रास खेल रस जागनी, हुआ रूहों सुख असल ॥६९॥

कहे हुकमें महामत मोमिनों, हकें पोहोंचाई इन मजल ।
कहे सास्त्र नहीं त्रैलोक में, सो हक बैठे रूहों बीच दिल ॥७०॥

॥प्रकरण॥३॥चौपाई॥२०१॥

आतम फरामोसी से जागे का प्रकरण

ऐसा आवत दिल हुकमें, यों इस्कें आतम खड़ी होए ।
जब हक सूरत दिल में चुभे, तब रूह जागी देखो सोए ॥१॥

हक सूरत वस्तर भूखन, बीच बका अर्स के ।
तिन को निरने इन जुबां, क्यों कर केहेवे ए ॥२॥

जिन दृढ़ करी हक सूरत, हक हुकमें जोस ले ।
अर्स चीज कही सो मेहेर से, पर बल इन अंग अकल के ॥३॥

जो वचन जुबां केहेत है, हिस्सा कोटमा ना पोहोंचत ।
पोहोंचे ना जिमी जरे को, तो क्या करे जात सिफत ॥४॥

किया हुकमें बरनन अर्स का, पर दृष्ट मसाला इत का ।
एक हरफ लुगा पोहोंचे नहीं, लग अर्स चीज बका ॥५॥

जिन देखी सूरत हक की, इन वजूद के सनमंध ।
जोस हुकम मेहेर देखावहीं, मोमिन जानें एह सनंध ॥६॥

सबों सिफत करी जोस अकलें, इन अंग छूटे ना दृष्ट फना ।
कोई बल करो हक हुकमें, पर अर्सें क्यों पोहोंचे सुपना ॥७॥

१. छल, कपट ।

नींद उड़े रहे न सुपना, और सुपने में देखना हक ।
मेहेर इलम जोस हुकमें, हक देखिए बेसक ।।८।।

पर जेता हिस्सा नींद का, रूह तेती फरामोस ।
जो मेहेर कर हुकम देखावहीं, तब देखे बिना जोस ।।९।।

हक जानें सो करें, अनहोनी सो भी होए ।
हिसाब किए सुपन में, मुतलक न देखे कोए ॥१०॥

ए बात तो कारज कारन, हक जानत त्यों करत ।
असल रूह तन मिलावा, निसबत है वाहेदत ॥११॥

ए हक बातन की बारीकियाँ, सो हक के दिए आवत ।
ना सीखे सिखाए ना सोहोबतें, हक मेहेरें पावत ॥१२॥

अपनी रूहों वास्ते, कई कोट काम किए ।
ए जानें अरवाहें अर्स की, जिन नाम निसान लिए ॥१३॥

ए जो अर्स बारीकियाँ, अर्स सहूरें रूह जानत ।
जिन पट खुल्या सो न जानहीं, बिना हक सिफत ॥१४॥

जिन जो देख्या जागते, सो देखे मांहें सुपन ।
कानों सुन्या सोभी देखत, याके साथ तो हक इजन[1] ॥१५॥

रखे वजूद को हुकम, जेते दिन रख्या चाहे ।
रूहों खेल देखावने, कई विध जुगत बनाए ॥१६॥

आतम तो फरामोस[2] में, भई आड़ी नींद हुकम ।
सो फेर खड़ी तब होवहीं, रूह दिल याद आवे खसम ॥१७॥

सो साख मोमिन एही देवहीं, यो बूझ में भी आवत ।
अनुभव भी कछू केहेत है, और हुकम भी कहावत ॥१८॥

मोमिन केहेवें हुकमें, बूझ अनुभव पर हुकम ।
हुकम केहेवे सो भी हुकमें, कछू ना बिना हुकम खसम ॥१९॥

१. हुकम । २. बेहोसी ।

रूह तेती जागी जानियो, जेता दिल में चुभे हक अंग ।
जो अंग हिरदे न आइया, रूह के तेती फरामोसी संग ॥२०॥

ताथें जो रूह अर्स अजीम की, सो क्यों ना करे उपाए ।
ले हक सरूप हिरदे मिने, और देवे सब उड़ाए ॥२१॥

इस्क बिना रूह के दिल, चुभे ना सूरत हक ।
मेहेर जोस निसबतें, हक हुकमें चुभे मुतलक ॥२२॥

मोहे दिल में हुकमें यों कह्या, जो दिल में आवे हक मुख ।
तो खड़ा होए मुख रूह का, हक सों होए सनमुख ॥२३॥

अधुर हरवटी नासिका, दंत जुबां और गाल ।
जो अंग आया हक का दिल में, उठे रूह अंग उसी मिसाल ॥२४॥

जो तूं ग्रहे हक नैन को, तो नजर खुले रूह नैन ।
तब आसिक और मासूक के, होए नैन नैन से सैन[1] ॥२५॥

जो हक निलाट[2] आवे दिल में, और दिल में आवे श्रवन ।
दोऊ अंग खड़े होएं रूह के, जो होवें रूह मोमिन ॥२६॥

भौं भृकुटी पल नासिका, सुन्दर तिलक हमेस ।
गौर सोभा मुख चौक की, क्यों कहूं जोत नूर केस ॥२७॥

ए अंग जेते मैं कहे, आवें रूह के हिरदे हक ।
तेते अंग रूह के, उठ खड़े होए बेसक ॥२८॥

पाग बनी सिर सारंगी, इन जुबां कही न जाए ।
ए जुगत जोत क्यों कहूं, जो हकें बांधी दिल ल्याए ॥२९॥

अतंत सोभा सुन्दर, चढ़ती चढ़ती तरफ चार ।
जित देखूं तित अधिक, सोभा न आवे मांहें सुमार ॥३०॥

हक हैड़ा हिरदे ग्रहिए, दिल में रहे दायम ।
सो हैड़ा अंग रूह का, उठ खड़ा हुआ कायम ॥३१॥

१. संकेत । २. मस्तक ।

जो हक अंग दिल में नहीं, सो अंग रूह का फरामोस ।
जब हक अंग आया दिल में, सो रूह अंग आया मांहें होस ॥३२॥

कटि[1] पेट पांसे[2] हक के, पीठ खभे कांध केस ।
ए दिल में जब दृढ़ हुए, तब रूह आया देखो आवेस ॥३३॥

बाजू मच्छे कोनियां, कांड़े कलाइयां हाथ ।
हक के अंग हिरदे आए, तब रूह खड़ी हुई हक साथ ॥३४॥

पोहोंचे हथेली अंगुरी नख, लीकें रंग सलूक ।
हक अंग मिहीं हिरदे बैठे, अब निमख[3] न होए रूह चूक ॥३५॥

नख अंगूठे अंगुरियां, नीके ग्रहिए हक कदम ।
सोई नख अंगुरियां पांउं रूह के, खड़े होत मांहें दम[3] ॥३६॥

जब हक चरन दिल दृढ़ धरे, तब रूह खड़ी हुई जान ।
हक अंग सब हिरदे आए, तब रूह जागे अंग परवान ॥३७॥

मोहोरी चूड़ी इजार की, और नेफा इजार बंध ।
हरे रंग बूटी कई नकस, हकें सोभित भली सनंध ॥३८॥

क्यों कहूं जुगत जामें की, हरे पर उज्जल दावन ।
निपट सोभित मिहीं बेलियां, झांई उठत अति रोसन ॥३९॥

एक सेत रंग जामा कह्या, मांहें जवेर जुगत कई रंग ।
इन जुबां रोसनी क्यों कहूं, जो झलकत अर्स के नंग ॥४०॥

बीच पटुका कस्या कमरें, रंग कई बिध छेड़े किनार ।
बेली नकस फूल केते कहूं, अवकास भर्‌यो झलकार ॥४१॥

एक झलकार मुख केहेत हों, मांहें कई सलूकी सुखदाए ।
सो गुन गरभित इन जुबां, रंग रोसन क्यों कहे जाए ॥४२॥

जामा जुड़ बैठा अंग पर, कोई अचरज खूबी लेत ।
सोभा सलूकी सुख क्यों कहूं, अंग गौर पर जामा सेत ॥४३॥

१. कमर । २. पसली । ३. क्षण ।

बगलों नकस केवड़े, कंठ बेली दोऊ गिरवान ।
ए जुगत जुबां तो कहे, जो कछू होए इन मान ॥४४॥

कटाव कोतकी[१] कांध पीछे, ऊपर फुंदन हारों के ।
रूह जो जाग्रत अर्स की, सुख लेसी बका इत ए ॥४५॥

बांहे चूड़ी और मोहोरियां, चूड़ी अचरज जुगत ।
निपट मिहीं मोहोरीय से, चढ़ती चढ़ती सोभित ॥४६॥

आए वस्तर हिरदे हक के, रूह अपने पेहेने बनाए ।
तेती खड़ी रूह होत है, जेता दिल में हक अंग आए ॥४७॥

पांच नंग मांहें कलंगी, तामें तीन नंग ऊपर ।
एक मध्य एक लगता, पांच रंग जोत बराबर ॥४८॥

ए जो कलंगी सिर पर, लटक रही सुखदाए ।
जो भूखन रूह नजर भरे, तो जानों अरवा देवे उड़ाए ॥४९॥

सात नंग मांहें दुगदुगी, सो सातों जुदे जुदे रंग ।
चढ़ती जोत आकास में, करत मांहों मांहें जंग ॥५०॥

जो रस कलंगी दुगदुगी, सोई पाग को रस ।
अंग रंग जोत बराबर, ए नंग रस नूर अर्स ॥५१॥

ए जो हिरदे आए हक भूखन, जाहेर स्यामाजी के जान ।
कलंगी दुगदुगी राखड़ी, होत दोऊ परवान ॥५२॥

दोऊ मुक्ताफल कान के, करड़े[२] कंचन बीच लाल ।
साड़ी किनार सेंथे पर, श्रवन पानड़ी झाल[३] ॥५३॥

हक अंग तो मुतलक मारत, पर भूखन लगें ज्यों भाल[४] ।
चितवन जुगल किसोर की, देत कदम नूरजमाल ॥५४॥

मुख बीड़ी आरोगें पान की, लाल सोभे अधुर तंबोल ।
ए रूह दृष्टें जब देखिए, पट हिरदे देत सब खोल ॥५५॥

१. जरी का काम । २. जड़े हुए । ३. कान का भूषण, झाबियां । ४. भाला - एक हथियार ।

कहूं केते भूखन कंठ के, तेज तेज में तेज ।
आसमान जिमी के बीच में, हो गई रोसन रेजा-रेज[1] ॥५६॥

हार कई जवेरन के, कहूं केते तिनके रंग ।
कई लेहेरें मांहें उठत, ए तो अर्स अजीम के नंग ॥५७॥

एक एक नंगमें कई रंग, रंग रंग में तरंग अपार ।
तरंग तरंग किरने कई, हर किरने रंग न सुमार ॥५८॥

जामें चादर जुड़ रही, ढांपत नहीं झलकार ।
गिनती जोत क्यों कर होए, नंग तेज ना रंग पार ॥५९॥

ए रंग जोत किन विध कहूं, जो ले देखो अर्स सहूर ।
सोभा रंग सलूकी सुख, देखो रूह की आंखों जहूर ॥६०॥

भूखन हक श्रवन के, और हक कण्ठ कई हार ।
सोई कण्ठ श्रवन रूह के, साज खड़े सिनगार ॥६१॥

सोभा जुगल किसोर की, दोऊ होत बराबर ।
जो हिरदे सो बाहेर, दोऊ खड़े होत सरभर ॥६२॥

बाजूबंध और पोहोंचियां, कड़े जवेर कंचन ।
नंग रंग नाम केते कहूं, कही जाए न जरा रोसन ॥६३॥

मुंदरियां दसों अंगुरियों, एक छोटी की न केहेवाए जोत ।
अर्स जिमी आकास में, हो जात सबे उद्दोत ॥६४॥

हक के भूखन की क्यों कहूं, रंग नंग जोत सलूक ।
आतम उठ खड़ी तब होवहीं, पेहेले जीव होए भूक भूक ॥६५॥

रूह भूखन हाथ के, हक भेले होत तैयार ।
ए सोभा जुगल किसोर की, जुबां केहे न सके सुमार ॥६६॥

चारों जोड़े चरन भूखन, रंग चारों में उठें हजार ।
ए बरनन जुबां तो करे, जो कछुए होए निरवार ॥६७॥

१. जरा - जरा ।

वस्तर भूखन हक के, आए हिरदे ज्यों कर ।
त्यों सोभा सहित आतमा, उठ खड़ी हुई बराबर ॥६८॥

सुपने सूरत पूरन, रूह हिरदे आई सुभान ।
तब निज सूरत रूह की, उठ बैठी परवान ॥६९॥

जब पूरन सरूप हक का, आए बैठा मांहें दिल ।
तब सोई अंग आतम के, उठ खड़े सब मिल ॥७०॥

वस्तर भूखन सब अंगों, कण्ठ श्रवन हाथ पाए ।
नख सिख सिनगार साज के, बैठे अर्स दिल में आए ॥७१॥

जब बैठे हक दिल में, तब रूह खड़ी हुई जान ।
हक आए दिल अर्स में, रूह जागे के एही निसान ॥७२॥

हक के दिल का इस्क, रूह पैठ देखे दिल मांहें ।
तो हक इस्क सागर से, रूह निकस न सके क्यांहें ॥७३॥

जो हक करें मेहेरबानगी, तो इन बिध होए हुकम ।
एता बल रूह तब करे, जब उठाया चाहें खसम ॥७४॥

महामत हुकमें केहेत हैं, जो होवे अर्स अरवाए ।
रूह जागे का एह उद्दम[1], तो ले हुकम सिर चढ़ाए ॥७५॥

॥प्रकरण॥४॥चौपाई॥२७६॥

चरन को अंग तिनमें नख अंग

सखी री तेज भर्‌यो आकास लों, नख जोत निकसी चीर ।
ज्यों सागर छेद के आवत, नेहेर निरमल का नीर ॥१॥

रंग केते कहूं चरन के, आवें न मांहें सुमार ।
याही वास्ते खेल देखाइया, रूह देखसी देखनहार ॥२॥

प्यारे पांउं मेरे पिउ के, देख नख अंगूठे अंगुरियों ।
सो बैठे बीच दिल तखत के, तो अर्स कह्या मेरे दिल को ॥३॥

१. कोशिश ।

दो अंगूठे आठ अंगुरी, नख सोभित तिन पर ।
नख लगते सिर अंगुरी, ए जोत कहूं क्यों कर ।।४।।
चरन अंगूठे पतले, और पतली अंगुरियां ।
लाल रंग मांहें सोभित, अतंत उज्जलियां ।।५।।
देखूं एक एक अंगुरी, आठों अंगुरी दोऊ पाए ।
कोमल सलूकी मिल रही, ए छब फब कही न जाए ।।६।।
दोऊ पांउं बड़ी दो अंगुरी, अंगूठों बराबर ।
तिन थें तीन उतरती, लगती कोमल सुन्दर ।।७।।
झलकत नूर बराबर, ऊपर अंगुरियों नख ।
सोभा सलूकी नख जोत की, जुबां केहे न सके इन मुख ।।८।।
अतंत जोत नखन की, ताको क्यों कर कहूं प्रकास ।
केहे केहे मुख एता कहे, जोत पोहोंची जाए आकास ।।९।।
जो सुंदरता अंगुरियों, और सुंदरता नख जोत ।
ए सोभा न आवे सब्द में, केहे केहे कहूं उद्दोत ॥१०॥
तेज जोत कछू और है, सोभा सुन्दरता कछू और ।
पर ए अंग नूरजमाल के, याको नहीं निमूना ठौर ॥११॥
जोत में एकै रोसनी, सोभा सुन्दर गुन अनेक ।
सोभा रंग रोसन नरमाई, रस मीठे कई विवेक ॥१२॥
सोभा मांहें सलूकियां, और खुसबोई सुखदाए ।
सुख प्रेम कई खुसालियां, इन जुबां कही न जाए ॥१३॥
अर्स बातें सुख बारीक, सुपन बानी न आवे सोए ।
कछुक जाने रूह अर्स की, जो बेसक जागी होए ॥१४॥
महामत कहे हक हुकमें, ऐसा सुख ना दूजा कोए ।
पांउं मासूक के आसिक, पिए रस धोए धोए ॥१५॥

।।प्रकरण।।५।।चौपाई।।२९१।।

चरन हक मासूक के उपली सोभा

फेर फेर चरन को निरखिए, रूह को एही लागी रट ।
हक कदम हिरदे आए, तब खुल गए अन्तर पट ।।१।।
गुन केते कहूं इन चरन के, आवें न मांहें सुमार ।
याही वास्ते खेल देखाइया, रूह देखसी देखनहार ।।२।।
बरनन करत हों चरन की, अर्स सूरत हक जात ।
ए नेक कहूं हक हुकमें, सोभा सब्द न इत समात ।।३।।
कदम तली अति उज्जल, निपट नरम रंग लाल ।
रूहें आसिक इन मासूक की, ए कदम छोड़ें ना नूरजमाल ।।४।।
कही सुछम सूरत अमरद की, ए कदम भी तिन माफक ।
रस रंग सोभा सलूकी, देख अर्स सहूरें हक ।।५।।
लांक सलूकी दोऊ कदम की, लाल एड़ी निपट नरम ।
गौर रंग रस भरे, जुबां क्या कहे सिफत कदम ।।६।।
सलूकी कदम तलीय की, ऊपर सलूकी और ।
छब हक कदम की क्यों कहूं, ए जो जुबां इन ठौर ।।७।।
हक हादी रूहें निसबत, ए अर्स की वाहेदत ।
जो रूह होवे अर्स की, सो क्यों छोड़ें ए न्यामत ।।८।।
ए कदम ताले मोमिन के, लिखी जो निसबत ।
तो आठों जाम रूह अटकी, बीच अर्स खिलवत ।।९।।
लग रहे हक कदम को, सोई रूह अर्स की ।
ए रस अमृत अर्स का, कोई और न सके पी ॥१०॥
जो कोई अरवा अर्स की, हक कदम तिन जीवन ।
सो जीव जीवन बिना क्यों रहे, जाके असल अर्स में तन ॥११॥

हकें अर्स कह्या अपना, जो अर्स दिल मोमिन ।
सो मोमिन उतरे अर्स से, है असल निसबत तिन ॥१२॥

ए जो मोमिन उतरे अर्स से, अर्स कह्या दिल जिन ।
हक कदम हमेसा अर्स में, ए कदम छोड़े ना मोमिन ॥१३॥

हकें तो कह्या अर्स दिल को, जो इनों असल अर्स में तन ।
हक कदम छूटे दिल से, ताए क्यों कहिए मोमिन ॥१४॥

हक कदम मोमिन दिल में, और कदम रूह हिरदे ।
ए कदम नैन पुतली मिने, और रूह फिरत सिर पर ले ॥१५॥

हकें बैठक कही अपनी, दिल मोमिन का जे ।
जिन दिल हक आए नहीं, सो दिल मोमिन कहिए क्यों ए ॥१६॥

आसमान जिमी के लोक का, सब्द छोड़े ना सुरिया[१] को ।
बिन मोमिन सब दुनियां, खात गोते फना मों ॥१७॥

सुरिया पर ला मकान है, तिन पर नूर अर्स ।
अर्स पर अर्स अजीम, पोहोंचें मोमिन इत सरस ॥१८॥

अर्स दिल मोमिन तो कह्या, अर्स बका सुध मोमिनों में ।
चौदे तबकों गम नहीं, मोमिन आए हक कदमों से ॥१९॥

सोई कहिए मोमिन, जिन दिल हक अर्स ।
सो ना मोमिन जिन ना पिया, हक सुराही का रस ॥२०॥

हकें दिल को अर्स तो कह्या, करने मोमिन पेहेचान ।
कहे मोमिन उतरे अर्स से, तन अर्स एही निसान ॥२१॥

रूहें उतरी अपने तनसे, और कह्या उतरे अर्स से ।
तन दिल अर्स एक किए, हकें कदम धरे दिल में ॥२२॥

ए निसबत असल अर्स की, हकें जाहेर तो करी ।
दिल मोमिन अर्स तो कह्या, जो रूहें दरगाह से उतरी ॥२३॥

१. ज्योतिसरूप ।

ख्वाब वजूद दिल मोमिन, हकें कह्या अर्स सोए ।
अर्स तन मोमिन दिल से, ए केहेने को हैं दोए ॥२४॥

मोमिन असल तन अर्स में, और दिल ख्वाब देखत ।
असल तन इन दिल से, एक जरा न तफावत ॥२५॥

तो हक सेहेरग से नजीक, ए विध जानें मोमिन ।
अर्स दिल मोमिन तो कह्या, जो निसबत अर्स तन ॥२६॥

ए बारीक बातें अर्स की, ए मोमिन जानें सहूर ।
तो हक कदम दिल अर्स में, हक सहूरसे नाहीं दूर ॥२७॥

ए ख्वाब देखे सो झूठ है, सत सोई जो मांहें वतन ।
सांच बैठी कदम पकड़के, झूठ में न आए आपन ॥२८॥

ए विचार देखो मोमिनों, हक देखावें अपने सहूर ।
इन दिल को अर्स तो कह्या, जो कदम नहीं आपन से दूर ॥२९॥

जो रूह देखे लांक[१] लीक को, तो रूह तित हीं रहे लाग ।
अर्स रूहों को इन लीक[२] बिना, सुख दुनियां लागे आग ॥३०॥

एक लीक भी रूहथें न छूटहीं, तो क्यों छूटे तली कोमल ।
अर्स रूहें इन लीक बिना, तबहीं जाए जल बल ॥३१॥

ए कदम तली की जोत से, आसमान जिमी रोसन ।
दिल मोमिन कदम बिना, अंग हो जाए सब अगिन ॥३२॥

चकलाई[३] इन कदम की, कदम तली ऊपर सलूक ।
ए फिराक[४] मोमिन ना सहें, सुनते होंए टूक टूक ॥३३॥

सोभा कदम तलीय की, और सोभा सलूकी नखन ।
सोभा अंगुरी अंगूठें, क्यों छोड़ें आसिक तन ॥३४॥

फना टांकन की सलूकी, और छब घूंटी काड़ों ।
अर्स रूहें जुदागी ना सहें, जाके असल तन अर्स मों ॥३५॥

१. गेहेराई । २. रेखा । ३. सुंदरता । ४. जुदाई ।

पीड़ी घूंटन पांउं माफक, सोभा अति सुन्दर ।
ए कदम सुध तिने परे, जो रूह बेधी होए अन्दर ॥३६॥

विचार तो भी याही को, रूह नजर तो भी ए ।
जो रूह इन कदम की, रहे तले कदमै के ॥३७॥

हाथों कदम न छोड़हीं, रूह हिरदे मांहें लेत ।
हक कदम खैंचें रूह को, सब अंगों समेत ॥३८॥

जेते अंग आसिक के, सो सब कदमों लगत ।
ए गत सोई जानहीं, जिन अंग रूह खैंचत ॥३९॥

कई गुन हक कदम में, सब गुन खैंचें रूह को ।
मासूक गुझ सोई जानहीं, आए लगी जिन सों ॥४०॥

पांउं पीड़ी घूंटन की, जो चकलाई सोभाए ।
जेते अंग आसिक के, तिन सब अंगों देत घाए ॥४१॥

क्यों कहूं पीड़ीय की, सलूकी सुख जोर ।
ए सुख सब रगन[1] को, और देत कलेजा तोर ॥४२॥

घाव लगत टूटत रगां, इन विध रेहेत जो याद ।
मासूक मारत आसिक को, अर्स अंग चरन स्वाद ॥४३॥

ए कदम देखे रूह फेर फेर, तली लांक[2] या ऊपर ।
दिल मोमिन अर्स कह्या, सो या कदमों की खातिर ॥४४॥

हक कदम अर्स दिल में, सो दिल मोमिन हुआ जल ।
अरवा मोमिन जीव जल के, सो रूह जल बिन रहे न पल ॥४५॥

ए बेली फूल रूह मोमिन, सो बेल भई हक चरन ।
बेल जुदागी फूल क्यों सहे, यों कदम बिना रहें ना मोमिन ॥४६॥

जब देखूं कदम रंग को, जानों एही सुख सागर ।
जब देखूं याकी सलूकी, आड़ी निमख न आवे नजर ॥४७॥

१. नाड़ीयां । २. चरन की तली की गहराई ।

जो आड़ी आवे पलक, तो जानों बीच पड़्यो ब्रह्मांड ।
ए निसबत हक वाहेदत, जो अर्स दिल अखंड ॥४८॥

ए कदम तालें मोमिन के, सो मोमिन हक चरन ।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, जो रूहें असल अर्स में तन ॥४९॥

सुन्दरता इन कदम की, सो चुभ रही रूह के दिल ।
अरस-परस ऐसी हुई, एक निमख न सके निकल ॥५०॥

चकलाई[1] इन कदम की, सुख सलूकी[2] देत ।
हिरदे जो रूह के चुभत, रूह सोई जाने जो लेत ॥५१॥

अति मीठे रसीले रंग भरे, जा को ए चरन मेहेर करत ।
सुख सोई जाने रूह अर्स की, जिन दिल दोऊ पांउं धरत ॥५२॥

सो पल पल ए रस पीवत, फेर फेर प्याले लेत ।
ए अमल क्यों उतरे, जा को हक बका सुख देत ॥५३॥

ए सुख कायम हक के, जिन दिल एह कदम ।
सोई रूह जाने ए जिन लिया, या जानत है खसम ॥५४॥

कई विध के सुख कदम में, मेहेर कर देत मेहेरबान ।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, इन पर कहा कहे सुभान ॥५५॥

हकें दिल किया अर्स अपना, इन पर बड़ाई न कोए ।
ए सुख लें मोमिन दुनी में, जो अर्स अजीम की होए ॥५६॥

ए सुख क्या जानें खेल कबूतर, कह्या हक का अर्स दिल ।
ए जाहेर हुए सुख जानसी, मोमिन मिलावा मिल ॥५७॥

कदम मेहेबूब के मोमिन, क्यों सहें जुदागी खिन ।
तो हकें कह्या अर्स दिल को, कर बैठे अपना वतन ॥५८॥

दिया मोमिनों बड़ा मरातबा[3], जेती हक बिसात ।
ले बैठे मोमिन दिल में, सब मता हक जात ॥५९॥

१. सुंदरता । २. सद्भाव । ३. पद ।

हक सूरत किन पाई नहीं, ना अर्स पाया किन ।
तरफ भी किन पाई नहीं, मांहें त्रैलोकी त्रैगुन ॥६०॥

कह्या चौदे तबक जरा नहीं, तो बका सुध होसी किन ।
हक सूरत अर्स कायम, सब दिल बीच कह्या मोमिन ॥६१॥

हक अंग नूर हादी कह्या, मोमिन हादी अंग नूर ।
ए सब हक वाहेदत, ज्यों हक नूर जहूर ॥६२॥

ए गुझ थीं अर्स बारीकियां, कोई न जाने बका बात ।
सो रूहें आए दुनी में प्रगटीं, अर्स बका हक जात ॥६३॥

कहे हुकम नूरजमाल का, मोहे प्यारे अति मोमिन ।
महामत कहे दोनों ठौर, हमको किए धंन धंन ॥६४॥

॥प्रकरण॥६॥चौपाई॥३५५॥

चरन निसबत का प्रकरण अन्दरतांई[1]

ए क्यों छोड़े चरन मोमिन, जो हक की वाहेदत ।
आए दुनी में जाहेर करी, जो असल हक निसबत ॥१॥

रूहें उतरीं नूर बिलंद से, कदम नासूत में भूलत ।
तिन पर रसूल होए आइया, जो असल हक निसबत ॥२॥

रूहें अर्स भूलीं नासूत में, ताए हक रमूजें लिखत ।
सो सब मोमिन समझहीं, जो असल हक निसबत ॥३॥

रूहें कदम भूली नासूत में, हक ताए भेजे इसारत ।
ताको हादी केहे समझावहीं, जो असल हक निसबत ॥४॥

रूहें अर्स की कदम भूलियाँ, तिन पर रूह अपनी भेजत ।
अर्स बातें केहे समझावहीं, जो असल हक निसबत ॥५॥

फरामोस हुइयां लाहूत से, रूहअल्ला संदेसे देवत ।
ए मेहेर लेवें मोमिन, जो असल हक निसबत ॥६॥

१. आंतरिक भाव ।

खिताब हादी सिर तो हुआ, जो फुरमान और न कोई खोलत ।
हक कदम हिरदे मोमिनों, जो असल हक निसबत ।।७।।

रूहें भूलियां खिलवत खेल में, ताए रूहअल्ला इलम ल्यावत ।
सो कायम करे त्रैलोक को, जो असल हक निसबत ।।८।।

इस्क रब्द हुआ अर्स में, तो रूहें इत देह धरत ।
रूहें चरन तो पकड़े, जो असल हक निसबत ।।९।।

आए कदम दिल मोमिन, जा को सब्द न पोहोंचे सिफत ।
हकें अर्स दिल तो कह्या, जो असल हक निसबत ॥१०॥

ए बरनन हुकमें तो किया, जो जाहेर करनी खिलवत ।
ए कदम रूहें तो पकड़े, जो असल हक निसबत ॥११॥

हकें आए किया अर्स दिल को, बीच ल्याए कदम न्यामत ।
सिर हुकमें हुज्जत तो लई, जो असल हक निसबत ॥१२॥

अर्स मोहोल दिल को किया, आए बैठी हक सूरत ।
ए अर्स मेहेर तो भई, जो असल हक निसबत ॥१३॥

इन कदमों मेहेर मुझ पर करी, देखाए दई वाहेदत ।
तो इलम दिया बेसक, जो असल हक निसबत ॥१४॥

मोमिनों पाई बेसकी, सो इन कदमों की बरकत ।
सो क्यों छूटें मोमिन से, जो असल हक निसबत ॥१५॥

इन चरनों किया अर्स दिल को, दिल बोलें सुध परत ।
रूहें तो लेवें महंमद सिफायत, जो असल हक निसबत ॥१६॥

रूहें कदम पकड़ें हक के दिल में, पैठ इस्क ठौर ढूंढ़त ।
दिल मोमिन अर्स तो कह्या, जो असल हक निसबत ॥१७॥

ए कदम ले दिल मोमिन, अर्स से ना निकसत ।
ए रूहें जानें अर्स बारीकियां, जो असल हक निसबत ॥१८॥

रूहें सिर पर कदम चढ़ाए के, अर्स मोहोलों में मालत ।
सब हक गुझ रूहें जानहीं, जो असल हक निसबत ॥१९॥

ले चरन दिल अर्स में, सब गलियों में फिरत ।
सब सुध होवे अर्स की, जो असल हक निसबत ॥२०॥

रूहें नैन पुतलियों बीच में, हक कदम राखत ।
एक हुए दिल अर्स रूहें, जो असल हक निसबत ॥२१॥

दिल अर्स किया इन कदमों, इतहीं बैठे कर भिस्त ।
ए न्यारे निमख न होवहीं, जो असल हक निसबत ॥२२॥

गुन केते कहूं इन कदम के, जिन अर्स अखंड किया इत ।
ए कदम ताले तिनके, जो असल हक निसबत ॥२३॥

तिन भाग की मैं क्या कहूं, ए जिन दिल कदम बसत ।
धंन धंन कदम धंन ए दिल, जो असल हक निसबत ॥२४॥

कई मलकूत वारूँ तिन खाक पर, जिन दिल ए कदम आवत ।
और दिल अर्स न होवहीं, बिना असल हक निसबत ॥२५॥

दिल साँच ले सरीयत चले, या पाक होए ले तरीकत ।
दिल अर्स न होए बिना मोमिन, जाकी असल हक निसबत ॥२६॥

कोई करो सब जिमिएँ सिजदा, पालो अरकान लग कयामत ।
पर ए कदम न आवें दिल में, बिना असल हक निसबत ॥२७॥

तेहेत्तर फिरके महंमद के, तामें एक को हक हिदायत ।
और नारी[१] एक नाजी[२] कह्या, जाकी असल हक निसबत ॥२८॥

उत्तम होए खट[३] करम करो, आचार करो विधोगत ।
ब्रह्म चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्म सों निसबत ॥२९॥

खटसास्त्र[४] पढ़ो कांड तीनों, करम निहकरम[५] विधोगत ।
ब्रह्म चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्म सों निसबत ॥३०॥

१. दोजखी, नारकीय । २. मुक्त ईमानदार । ३. षट् (छः) कर्म । ४. षट् शास्त्र । ५. निष्कर्म ।

नव अंगों पालो नवधा, ल्यो बैकुंठ चार मुगत ।
ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्म सों निसबत ॥३१॥

वेद सास्त्र पुरान पढ़ो, सब पैंडे देखो प्रापत ।
ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्म सों निसबत ॥३२॥

कोई वेद पाँचों मुख पढ़ो, कई त्रैगुन जात पढ़त ।
पर ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्म सों निसबत ॥३३॥

ब्रह्म-सृष्ट कही वेद ने, ब्रह्म जैसी तदोगत[1] ।
तौल न कोई इनके, जाकी ब्रह्म सों निसबत ॥३४॥

सुकजी आए इन वास्ते, ले किताब भागवत ।
ए चरन न आवें ब्रह्मसृष्ट बिना, जाकी ब्रह्म सों निसबत ॥३५॥

ब्रह्म ने भेजी परमहंस पर, वेद अस्तुत बंदोबस्त ।
ए ब्रह्म चरन क्यों छोड़हीं, जाकी ब्रह्म सों निसबत ॥३६॥

कही आई उपनिषद इन पे, पूर्व रिखी कहे जित ।
धाम बका पाया इनोंने, जाकी ब्रह्म सों निसबत ॥३७॥

ब्रह्मसृष्ट मोमिन कहे, रूहें लेवें वेद कतेब विगत ।
ए समझ चरन ग्रहें ब्रह्म के, जाकी ब्रह्म सों निसबत ॥३८॥

ब्रह्मसृष्ट रूहें नाम दोए, अर्स रूहें ए जानत ।
दोऊ जान चरन ग्रहें एकै, जाकी ब्रह्म सों निसबत ॥३९॥

पढ़े वेद कतेब को, जोग कसब[2] ना पोहोंचत ।
दिल अर्स किया जिन कदमों, ए न आवें बिना हक निसबत ॥४०॥

दिल अर्स कह्या जो मोमिन, सो दिल नाजी पाक उमत ।
और इलाज ना इलम कोई, बिना असल हक निसबत ॥४१॥

इलम लदुन्नी भेजिया, सो मोमिन ए परखत ।
परख चरन ग्रहें हक के, जा की असल हक निसबत ॥४२॥

१. हूबहू । २. विधि, कला ।

हक हादी की मेहेर से, भिस्त आठ होसी आखिरत ।
पर ए चरन ना आवें दिल में, बिना असल हक निसबत ॥४३॥

महंमद सूरत हकी बिना, द्वार खुले ना हकीकत ।
ए कदम पावें दिल औलिया, जाकी असल हक निसबत ॥४४॥

ए कदम आए जिन दिल में, तित आई हक सूरत ।
ए चौदे तबक पावें नहीं, बिना असल हक निसबत ॥४५॥

दिल मोमिन क्यों अर्स कह्या, ए दुनी ना एता विचारत ।
ए विचार तो उपजे, जो होए हक निसबत ॥४६॥

रूहें अर्स बुधजी बिना, छल का पावे न कोई कित ।
ए सहूर भी दिल न आवहीं, बिना असल हक निसबत ॥४७॥

रूहअल्ला दज्जाल को मारसी, छोड़ावसी उमत ।
कर एक दीन चरन देखावहीं, जाकी असल हक निसबत ॥४८॥

अर्स सूरत पर सिजदा, करसी मेंहेंदी इमामत ।
कदम ग्रहे देखावहीं, जाकी असल हक निसबत ॥४९॥

दोऊ आए बीच हिंदुअन के, जैसे कह्या हजरत ।
ए बेवरा सोई समझहीं, जाकी असल हक निसबत ॥५०॥

अर्स कह्या दिल मोमिन, ले दिल अर्स गलियों खेलत ।
सो पावें रूहें लाहूती, जाकी असल हक निसबत ॥५१॥

ए कदम पावें रूहें लाहूती, नहीं औरों की किसमत ।
ए सोई पावें हक बारिकियां, जाकी असल हक निसबत ॥५२॥

अहेल किताब एही कहे, एही पावें हक मारफत ।
एही आसिक होवें मासूक की, जाकी असल हक निसबत ॥५३॥

जो रूहें उतरी अर्स से, सो कदम ले अर्स पोहोंचत ।
देसी भिस्त सबन को, जाकी असल हक निसबत ॥५४॥

जो रूहें कही लाहूती, इजने[1] इत उतरत ।
सो पकड़े कदम इस्क सों, जाकी असल हक निसबत ॥५५॥

रूहें अर्स रब्दें इत आइयां, देखो कौन कदम ग्रहे जीतत ।
सो क्यों बिछुरें इन कदम सों, जाकी असल हक निसबत ॥५६॥

याही रब्दें इत आइयां, लेने पिउ का विरहा लज्जत ।
सो पाए कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥५७॥

ए रब्द अर्स खिलवत का, रूहें इस्क अंग गलित ।
सो क्यों छोड़ें पांउं पकड़े, जाकी असल हक निसबत ॥५८॥

रूहें इन कदम के वास्ते, जीवते ही मरत ।
सो क्यों छोड़ें प्यारे पांउं को, जाकी असल हक निसबत ॥५९॥

याही कदम के वास्ते, रूहें जल बल खाक होवत ।
तो दिल आए कदम क्यों छूटहीं, जाकी असल हक निसबत ॥६०॥

रूहें होवें जिन किन खिलके[2], हक प्रगटे सुनत ।
आए पकड़ें कदम पल में, जाकी असल हक निसबत[3] ॥६१॥

जब आखिर हक जाहेर सुनें, तब खिन में रूहें दौड़त ।
सो क्यों रहें कदम पकड़े बिना, जाकी असल हक निसबत ॥६२॥

जब इमाम आए सुने, तब मोमिन रेहे ना सकत ।
दौड़ के कदम पकड़े, जाकी असल हक निसबत ॥६३॥

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी पहाड़ से गिरत ।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥६४॥

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी सिर लेत करवत ।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥६५॥

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनियां आग पीवत ।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥६६॥

१. हुकम । २. जाति । ३. संबंध ।

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी भैरव[१] झंपावत[२] ।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥६७॥

मलकूत बैकुंठ वास्ते, दुनी हेम में गलत ।
तो रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥६८॥

और इलाज[३] जो कई करो, पर पावे ना बिना किसमत ।
सो हक कदम ताले[४] मोमिन, जाकी असल हक निसबत ॥६९॥

ए बिन मोमिन कदम न पाइए, जो करे कई कोट मेहेनत ।
ए मोमिन अर्स अजीम के, जाकी असल हक निसबत ॥७०॥

रूहें अर्स की कहें वेद कतेब, बिन कुंजी क्योंए न पाइयत ।
सो रूहअल्ला बेसक करी, जाकी असल हक निसबत ॥७१॥

हक कदम दिल मोमिन, देख देख रूह भीजत ।
एक पाउ पल ना छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥७२॥

ए कदम रूहें दिल लेयके, देह झूठी उड़ावत ।
कोई दिन रखें वास्ते लज्जत, जाकी असल हक निसबत ॥७३॥

मोमिन आए अर्स से, दुनी क्या जाने ए गत ।
ए कदम ताले ब्रह्मसृष्ट के, जाकी असल हक निसबत ॥७४॥

रूहें खाना पीना रोजा सिजदा, इन कदमों हज-ज्यारत[५] ।
और चौदे तबक उड़ावहीं, जाकी असल हक निसबत ॥७५॥

ए चरन पेहेचान होए मोमिनों, वाही को प्यारे लगत ।
ना तो बुरा न चाहे कोई आपको, पर क्या करे बिना हक निसबत ॥७६॥

पाए बिछुरे पिउ परदेस में, बीच हक न डारें हरकत ।
ए करी इस्क परीछा वास्ते, पर ना छूटे हक निसबत ॥७७॥

जिन परदेस में पांउं पकड़े, ज्यों बिछुरे आए मिलत ।
सो मोमिन छोड़ें क्यों कदम को, जाकी असल हक निसबत ॥७८॥

१. एक पर्वत । २. उछलकर कूदना । ३. उपाय । ४. भाग्य । ५. दर्शन के लिए तीर्थ यात्रा ।

जो बिछुड़ के आए मिले, सो पलक ना छोड़ सकत ।
जो रूहें पाए चरन पिउ के, जाकी असल हक निसबत ॥७९॥

अर्सें सब्द न पोहोंचे त्रैलोकका, सो दिल मोमिन अर्स कहावत ।
इन कदमों बड़ाई दिल को दई, जाकी असल हक निसबत ॥८०॥

दिल मोमिन एही पेहेचान, दिल कदम छोड़ न चलत ।
तो पाई अर्स बुजरकी, जो थी असल हक निसबत ॥८१॥

ए कदम नूरजमाल के, आई दिल मोमिन लज्जत ।
सो मोमिन अरवा अर्स के, जाकी असल हक निसबत ॥८२॥

ए चरन दिल का जीव है, तिन बिन जीव क्यों जीवत ।
तो हकें अर्स कह्या दिल को, जो असल हक निसबत ॥८३॥

जो निसबती दिल चरन के, तामें जरा न तफावत ।
ए कदम रूहें ल्याई दुनीमें, जाकी असल हक निसबत ॥८४॥

हक जाहेर बीच दुनीके, रूहें समझके समझावत ।
हुआ फुरमाया रसूल का, तो जाहेर हुई हक निसबत ॥८५॥

चौदे तबक करसी कायम, ए जो झूठे खाकी बुत[1] ।
मोमिन बरकत इन कदमों, जाकी असल हक निसबत ॥८६॥

सबों भिस्त दे घरों आवसी, रूहें कदम ग्रहें बड़ी मत ।
अर्स के तन जो मोमिन, जाकी असल हक निसबत ॥८७॥

ए काम किया सब हुकमें, अव्वल बीच आखिरत ।
हक बका द्वार खोलिया, महामत ले आए निसबत ॥८८॥

॥प्रकरण॥७॥चौपाई॥४४३॥

कदम परिकरमा निसबत

उमर जात प्यारी सुपने, निस दिन पिउ जपत ।
लाल कदम न छोड़ें मोमिन, जाकी असल हक निसबत ॥१॥

१. मिट्टी के पुतले, मनुष्य ।

मांग लई प्यारी उमर, ए जो रब्द के बखत ।
लाल पांउं तली छोड़ें क्यों मोमिन, जाकी असल हक निसबत ।।२।।

पांउं निस दिन छोड़ें ना मोमिन, सुपने या सोवत ।
सो क्यों छोड़ें बेसक जागे, जाकी असल हक निसबत ।।३।।

जब उड़ी नींद असल की, हक देखे होंए जाग्रत ।
सुख लेसी खेल का अर्स में, जाकी असल हक निसबत ।।४।।

दीजे परिकरमा अर्स की, मोमिन दिल ना सखत ।
सूते भी कदम ना छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ।।५।।

सुख आगूं अर्स द्वार के, कई बिध केलि[1] करत ।
सो क्यों छोड़ें चरन हक के, जाकी असल हक निसबत ।।६।।

करें सुपने में कुरबानियां, ऐसे मोमिन अलमस्त ।
सूते भी कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ।।७।।

सुपने कदम पकड़ के, तापर अपना आप वारत ।
हक करें सुरखरू[2] इनको, जाकी असल हक निसबत ।।८।।

लेवें सुख बाग मोहोलन में, मलार में बरखा रूत ।
रूहें क्यों छोड़ें चरन सुपने, जाकी असल हक निसबत ।।९।।

रूहें खेलें मलार बन में, हक हादी की सोहोबत ।
ए क्यों छोड़ें चरन मोमिन, जाकी असल हक निसबत ॥१०॥

मोमिन बसें अर्स बनमें, ऊपर चाह्या मेह बरसत ।
सो क्यों रहें इन पांउं बिना, जाकी असल हक निसबत ॥११॥

रूहें मलार अर्स बाग में, ऊपर सेरड़ियां[3] गरजत ।
रूहें सुपने पांउं न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥१२॥

रूहें खेलें हक हादी सों बन में, नूर बिजलियां चमकत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥१३॥

१. क्रीड़ा । २. सम्मानित । ३. बादलियां ।

हक खेलोंने कई खेलावहीं, कई मोर कला पूरत ।
सो क्यों छोड़ें पांउं हक के, जाकी असल हक निसबत ॥१४॥

रूहें खेलें अर्स के बाग में, कई पसु पंखी खेलावत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥१५॥

रूहें सुपने दुनी को न लागहीं, जा को मुरदार कही हजरत ।
ए हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥१६॥

ए रूहें हक हादी संग, विध विध बन विलसत ।
ए क्यों छोड़ें कदम मोमिन, जाकी असल हक निसबत ॥१७॥

खेलने वाली सातों घाट की, हक प्रेम सुराही पिलावत ।
रूहें सुपने न छोड़ें कदम को, जाकी असल हक निसबत ॥१८॥

रूहें सराब हक सुराही का, पैदरपे[1] पीवत ।
बेहोस हुए न छोड़ें कदम, जाकी असल हक निसबत ॥१९॥

झूलें पुल मोहोल साम सामी, जल बीच मोहोल झलकत ।
रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥२०॥

रूहें रमें किनारे जोए[2] के, हक हादी रूहें झीलत ।
सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥२१॥

हक हादी रूहें पाट पर, मन चाह्या सिनगार साजत ।
रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥२२॥

रूहें मिलावा अर्स बाग में, देखो किन विध ए सोभित ।
रूहें हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥२३॥

पसु पंखी बोलें इन समें, कई विध बन गूंजत ।
रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥२४॥

विध विध के कुन्ज बन में, हक रूहें केलि[3] करत ।
सो क्यों छोड़ें इन कदम को, जाकी असल हक निसबत ॥२५॥

१. लगातार, निरंतर (एक के बाद एक) । २. जमुनाजी । ३. क्रीड़ा ।

बट पीपल की चौकियां, हक हादी रूहें हींचत ।
रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥२६॥

ताल पाल बन गिरदवाए, ऊपर कई मोहोल देखत ।
सो क्यों छोड़ें हक कदम को, जाकी असल हक निसबत ॥२७॥

सोभा चारों घाट की, जित जोए[1] हौज मिलत ।
रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥२८॥

ए जो कहे मेहेराव, घाटों ऊपर सोभित ।
हक कदम हिरदे रूह के, जाकी असल हक निसबत ॥२९॥

खेलें हौज कौसर के बाग में, रूहें बन डारी झूलत ।
हक चरन सुपने न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥३०॥

रूहें खेलें टापू के गुरज में, जाए झरोखों बैठत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥३१॥

खेलें अर्स हौज टापू मिने, हक भेले चांदनी चढ़त ।
रूहें क्यों रहें इन कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥३२॥

नेहेरें मोहोल ढ़ांपियां, जल चक्राव[2] ज्यों चलत ।
मोमिन हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥३३॥

कई मोहोल मानिक पहाड़ में, हिसाब में न आवत ।
ए मोमिन कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥३४॥

कई ताल नेहेरें मानिक पर, ढ़िग हिंडोलों चादरें गिरत ।
ए कदम मोमिन क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥३५॥

कई भांतों नेहेरें बन में, सागरों निकस मिलत ।
मोमिन खेलें कदम पकड़ के, जाकी असल हक निसबत ॥३६॥

कई बड़े मोहोल किनारे सागरों, कई मोहोल टापू झलकत ।
ए मोमिन कदमों सुख लेवहीं, जाकी असल हक निसबत ॥३७॥

१. जमुनाजी । २. गोल घेरा ।

आगूं बड़ा चौगान बन बिना, दूब कई दुलीचों जुगत ।
मोमिन दौड़ के कदम पकड़ें, जाकी असल हक निसबत ॥३८॥

हक हादी रूहें इन चौगान में, कई पसु पंखी दौड़ावत ।
मोमिन लेवें सुख कदमों, जाकी असल हक निसबत ॥३९॥

कहा कहूं बाग अर्स का, जित कई रंगों फूल फूलत ।
रूहें क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥४०॥

रूहें खेलें फूल बाग में, कई खुसबोए रस बेहेकत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥४१॥

विध विधकी बन छत्रियां, जड़ाव चंद्रवा ज्यों चलकत ।
ए कदम सुख सुपने लेवहीं, जाकी असल हक निसबत ॥४२॥

इन बाग तले जो बाग है, ए क्यों कहे जुबां सिफत ।
ए मोमिन कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥४३॥

मोर चकोर मैना कोयली, कई विध वन टहुंकत ।
रूहें कदम सुख सुपने लेवहीं, जाकी असल हक निसबत ॥४४॥

जो खेलें झीलें चेहेबच्चे[1], जल फुहारे उछलत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥४५॥

रूहें खेलें लाल चबूतरे, कई रंगों हाथी झूमत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥४६॥

कई बाघ चीते दीपे केसरी, बोलें कूदें गरजत ।
रूहें क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥४७॥

कई विध बाजे बजावहीं, इत बांदर नट नाचत ।
रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥४८॥

कई बड़े पसु पंखी अर्स के, कई उड़ें खेलें कूदत ।
रूहें क्यों रहें हक चरन बिना, जाकी असल हक निसबत ॥४९॥

१. जलकुंड ।

कई विध यों मधुबन में, सुख लेवें चित्त चाहत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥५०॥

बड़े मोहोल जो पहाड़ से, इत रूहें खेलें कई जुगत ।
सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥५१॥

चार मोहोल बड़े थंभ ज्यों, सो ऊपर जाए मिलत ।
रूहें इत सुख कदमों लेवहीं, जाकी असल हक निसबत ॥५२॥

हजार हांसें जित गिरदवाए, बीच मोहोल बड़े बिराजत ।
इत रूहें सुख लेवें चरन का, जाकी असल हक निसबत ॥५३॥

पहाड़ पुखराजी मोहोलमें, सुख चांदनी लेवत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥५४॥

अति बड़े चार द्वार चांदनी, कई हाथी हलकों आवत ।
चरन छूटे ना इन खावंद के, जाकी असल हक निसबत ॥५५॥

बड़े पसु पंखी इन चांदनी, हक हादी मोहोला लेवत ।
रूहें ए चरन क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥५६॥

हाथी बाघ चीते दीपे केसरी, कोई जातें गिन ना सकत ।
हक कदम रूहें क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥५७॥

ए निपट बड़े मोहोल चांदनी, इत कई मिलावे मिलत ।
रूहें न छोड़ें हक कदम को, जाकी असल हक निसबत ॥५८॥

बड़े चार द्वार चबूतरों, क्यों कहूं देहेलानों सिफत ।
ए सुख लेवें मोमिन कदमों, जाकी असल हक निसबत ॥५९॥

ए अति ऊंचे मोहोल बीच के, हक सुख आकासी देवत ।
रूहें ए कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥६०॥

हक हादी रूहें बड़े मोहोल में, इन गुरजो सुख को गिनत ।
ए कदम सुख मोमिन जानहीं, जाकी असल हक निसबत ॥६१॥

सुख लेत ताल मूल जोए के, कई विध केलि करत ।
रूहें क्यों छोड़े हक चरन को, जाकी असल हक निसबत ॥६२॥

मोहोल बड़े ताल ऊपर, रूहें सुख लेवें हक सों इत ।
ए क्यों छोड़ें हक कदम को, जाकी असल हक निसबत ॥६३॥

दोनों तरफों मोहोल के, आगूं जित दरखत ।
सो क्यों छोड़े कदम सुपने, जाकी असल हक निसबत ॥६४॥

दोऊ किनारे गुरज दोए, बीच सोले चादरें उतरत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥६५॥

ऊपर चादरों मोहोल जो, बीच बड़े देहेलान देखत ।
दोऊ तरफों कदम सुख लेवहीं, जाकी असल हक निसबत ॥६६॥

अधबीच में कुंड जो, जित चादरों[1] जल गिरत ।
रूहें छोड़ें न कदम सुपने, जाकी असल हक निसबत ॥६७॥

तले ताल बन बंगले, जल चक्राव ज्यों चलत ।
रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥६८॥

कई फुहारे मुख जानवरों, जल तीर ज्यों छूटत ।
क्यों भूलें इत सुख कदम के, जाकी असल हक निसबत ॥६९॥

ए जंजीरें जल की, अदभुत सोभा लेवत ।
क्यों छोड़ें ए कदम मोमिन, जाकी असल हक निसबत ॥७०॥

उलंघ जात कई चेहेबच्चों, जल साम सामी जात आवत ।
इत कदम सुख मोमिन लेवहीं, जाकी असल हक निसबत ॥७१॥

जल आवे जाए ऊपर से, तले हक हादी रूहें खेलत ।
ए सुख क्यों छूटें कदम के, जाकी असल हक निसबत ॥७२॥

गिरदवाए बड़े द्वार मेहेराबी, ए मोहोल सोभा लेवत ।
इत खेले रूहें कदम तले, जाकी असल हक निसबत ॥७३॥

१. धाराएँ ।

इत ताल तले बन छाया मिने, रूहें बीच बगीचों मलपत[1] ।
ए सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥७४॥

केती चक्राव से बाहेर, जोए तले चबूतरों निकसत ।
रूहें खेलें तले कदम के, जाकी असल हक निसबत ॥७५॥

जोए[2] चबूतरों कुंड पर, ऊपर बन झूमत ।
ए कदम सुख मोमिन लेवहीं, जाकी असल हक निसबत ॥७६॥

जमुना जल ढांपी चली, ए बैठक सोभा अतंत ।
ए सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥७७॥

दोऊ किनारे ढांपिल, आगूं जल जोए खुलत ।
रूहें क्यों रहें इन कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥७८॥

एक मोहोल एक चबूतरा, जाए जोए पुल तले मिलत ।
रूहें ए कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥७९॥

जोए इतथें मरोर सीधी चली, अर्स आगूं सोभा सरत[3] ।
रूहें क्यों छोड़ें इन कदम को, जाकी असल हक निसबत ॥८०॥

दोऊ पुल के बीच में, बड़ी सातों घाटों सिफत ।
रूहें खेलें इत कदमों तले, जाकी असल हक निसबत ॥८१॥

नूर और नूरतजल्ला, अर्स साम सामी झलकत ।
ए रूहें कदम न भूलें सुपने, जाकी असल हक निसबत ॥८२॥

दोऊ दरबार की रोसनी, अंबर नूर भरत ।
रूहें कदम न भूलें सुपने, जाकी असल हक निसबत ॥८३॥

अर्स जिमी नूर अपार है, इतके वासी बड़े-बखत[4] ।
महामत रूहें हक जात हैं, जाकी हक कदमों निसबत ॥८४॥

॥प्रकरण॥८॥चौपाई॥५२७॥

१. मुस्कराहट । २. जमुनाजी । ३. फैलता (जमुनाजी शोभा बढ़ा रही है) । ४. भाग्य-शाली ।

अर्स अंदर निसबत चरन

अर्स अंदर सुख देवहीं, जो रूहों दिल उपजत ।
सो रूहें कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ।।१।।

अर्स अरवाहें भोम खिलवत, नूर दसों दिस लरत ।
सो क्यों छोड़ें इन कदम को, जाकी असल हक निसबत ।।२।।

रूहें बारे हजार बैठाए के, हक हाँसी को खेलावत ।
सो रूहें कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ।।३।।

लें सुख चेहेबच्चे भोम दूसरी, मोहोल बारे सहस्त्र जित ।
सो क्यों छोड़ें रूहें कदम को, जाकी असल हक निसबत ।।४।।

रूहें तीसरी भोम चढ़के, बड़े झरोखों आवत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ।।५।।

कई इंड पलथें पैदा फना, जिन कादर ए कुदरत ।
ए आवें मुजरे इन सरूप के, जाकी असल हक निसबत ।।६।।

नूर मकान सें आवें दीदार को, इत नूरजमाल बिराजत ।
रूहें याद कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ।।७।।

हक बैठें पौढें भोम तीसरी, आगू झरोखों आरोगत ।
रूहें क्यों छोड़ें इन कदम को, जाकी असल हक निसबत ।।८।।

रूहें अर्स अजीम की, भोम चौथी देखें निरत ।
सो हक कदम क्यों छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ।।९।।

रूहें अर्स अजीम की, पांचमी भोम पौढ़त ।
सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥१०॥

रूहें अर्स अजीम की, भोम छठी कई जुगत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥११॥

रूहें अर्स भोम सातमी, जो छपर-खटों[1] हींचत ।
सो सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥१२॥

ए अर्स भोम आठमी, साम सामी हिंडोलें खटकत ।
ए रूहें सुपने कदम न छोड़हीं, जाकी असल हक निसबत ॥१३॥

अर्स रूहें सुख नौमी भोमें, सुख सिंघासन समस्त ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥१४॥

रूहें रेहेवें अर्समें, जो सुख झरोखों भोगवत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥१५॥

हक हादी रूहें सुख अर्स चांदनी, अर्स अंबर जोत होवत ।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥१६॥

सकल भोम सुख लेवहीं, रूहें हक कदम पकरत ।
सो क्यों रहें इन कदम बिना, जाकी असल हक निसबत ॥१७॥

आई नजीक जागनी, पीछे तो उठ बैठत ।
हाँसी होसी भूली पर, जाकी असल हक निसबत ॥१८॥

रूहें हुकम ले दौड़ियो, मूल तन अर्समें उठत ।
हक हँससी तुम ऊपर, रूहें क्यों भूली ए निसबत ॥१९॥

आया नजीक बखत मोमिनों, क्यों भूलिए हादी नसीहत ।
जो सुपने कदम न भूलिए, हँसिए हकसों ले निसबत ॥२०॥

लाहा[2] लीजे दोनों ठौर का, सुनो मोमिनों कहे महामत ।
क्यों सुपने ए चरन छोड़िए, अपनी असल निसबत ॥२१॥

॥प्रकरण॥९॥चौपाई॥५४८॥

श्री राजजी की इजार

असल इजार एक पाच की, एकै रस सब ए ।
कई बेल पात फूल बूटियां, रंग केते कहूं इनके ॥१॥

१. छे डांडो वाला हिंडोला । २. लाभ, सुख ।

बेल मोहोरी इजार की, जानों एही भूखन सुन्दर ।
अतंत सोभा सब से, एही है खूबतर[1] ।।२।।

इजार बंध नंग कई रंग, कई बूटी कई नकस ।
निरमान न होए इन जुबां, ए वस्तर अजीम अर्स ।।३।।

अति सोभा अति नरमाई, नंग सोभित नरम पसम ।
अर्स चीज न आवे सब्द में, ए नेक केहेत हुकम ।।४।।

बेल पात फूल कई विध के, कई विध कांगरी इत ।
जोत न नरमाई सुमार, जुबां क्या कहे सिफत ।।५।।

नेफा रंग कसूंब[2] का, अति खूबी अतलस[3] ।
बेल भरी मोती कांगरी, जानों ए भूखन से सरस ।।६।।

ताना बाना रंग रेसम, जवेर का सब सोए ।
बेल फूल बूटी तो कहूं, जो मिलाए समारे होए ।।७।।

।।प्रकरण।।१०।।चौपाई।।५५५।।

खुले अंग सिनगार छबि छाती

रूह मेरी क्यों न आवे तोहे लज्जत, तो को हकें कही अर्स की ।
अर्स किया तेरे दिल को, तोहे ऐसी बड़ाई हकें दई ।।१।।

जो कदी तैं आई नहीं, तोमें[4] हक का है हुकम ।
हुज्जत[5] दई तो को अर्स की, दिया बेसक अपना इलम ।।२।।

बिन जामें देखों अंग को, आसिक सब सुख चाहे ।
बागा पेहेने हमेसा देखिए, कछू ए छबि और देखाए ।।३।।

आसिक इन मासूक की, नए सुख चाहे अनेक ।
निरखे नए नए सिनगार, जानें एक से दूजा विसेक ।।४।।

जुदे जुदे सुख ले हक के, रूह आसिक क्योंए न अघाए ।
ताथें जुदा जुदा बरनन, सुख आसिक ले दिल चाहे ।।५।।

१. बढ़िया । २. लाल । ३. रेशमी । ४. तुझ में । ५. दावा करना।

खाना पीना खिन खिन लिया, प्यार अर्स रूहन ।
पल पल मासूक देखना, एही आहार आसिकन ।।६।।

हक बैठे अपने अर्स में, सो अर्स मोमिन का दिल ।
तो अनेक खूबी खुसालियां, हम क्यों न लेवें मिल ।।७।।

ए जो हक वस्तर की खूबियां, सो हक अंग परदा जहूर ।
बारीक ए सुख जानें रूहें, जिनपे अर्स सहूर ।।८।।

वस्तर भूखन सब पूरन, सुख बिन जामें और जिनस ।
देख देख देखे जो आसिक, जो देखे सोई सरस ।।९।।

कटि कोमल अति पतली, सुन्दर छाती गौर ।
देख देख सुख पाइए, जो होवे अर्स सहूर ॥१०॥

कटि कोमल कही जो पतली, कछु ए सलूकी और ।
ए जुबां सोभा तो कहे, जो कहूं देखी होए और ठौर ॥११॥

और पेट पांसली हक की, ए कौन भांत कहूं रंग ।
रूह देखे सहूर अर्स के, और कौन केहेवे हक अंग ॥१२॥

पांसे पांखड़ी बगलें, सोभित बंधो बंध ।
अंग रंग खूबी खुसालियां, पार ना सुख सनंध ॥१३॥

ज्यों बरनन सुपन सरूप की, ए भी होत विध इन ।
ए चारों चीज उत हैं नहीं, ना अर्स में ख्वाब चेतन ॥१४॥

ए बरनन अर्स अंग होत है, ले मसाला इतका ।
ताथें किन बिध रूह कहे, ना जुबा पोहोंचे सब्द बका ॥१५॥

जो अरवा होए अर्स की, सो कीजो इलम सहूर ।
इलम सहूर जो हकें दिया, लीजो इनसे रूहें जहूर ॥१६॥

हक को जेता रूह देखहीं, सुध तेती ना बुध मन ।
तो सुपन जुबां क्या केहेसी, अंग हक बका बरनन ॥१७॥

नरम नाजुक पेट पांसली, क्यों कहूं खूब रस रंग ।
देत आराम आठों जाम, हक बका अर्स अंग ॥१८॥

छाती निरखों हक की, गौर अति उज्जल ।
देख हैड़ा खूब खुसाली, तो मोमिन कह्या अर्स दिल ॥१९॥

जिन देख्या हक हैड़ा, क्यों नजर फेरे तरफ और ।
वाको उसी सूरत बिना, आग लगे सब ठौर ॥२०॥

जो हक अंग देख्या होए, हक जमाल[1] न छोड़े तिन ।
जाके अर्स की एक रंचक, त्रैलोकी उड़ावे त्रैगुन ॥२१॥

वह देख्या अंग क्यों छूटहीं, हक परीछा एही मोमिन ।
ए होए अर्स अरवाहों सों, जिनके अर्स अजीम में तन ॥२२॥

हक जात अर्स उन तन से, बीच रेहेत मोमिन के दिल ।
अर्स मोमिन दिल तो कह्या, यों हिल मिल रहे असल ॥२३॥

दिल हक का और हादी का, ए दोऊ दिल हैं एक ।
एकै मता[2] दोऊ दिल में, ए अर्स रूहें जानें विवेक ॥२४॥

जो गंज हक के दिल में, सो पूरन इस्क सागर ।
कोई ए रस और न ले सके, बिना मोमिन कोई न कादर[3] ॥२५॥

तो अर्स कह्या दिल मोमिन, जो इन दिल में हक बैठक ।
तो इत जुदागी कहां रही, जहां हकै आए मुतलक ॥२६॥

ए क्यों होए बिना निसबतें, इतहीं हुई वाहेदत ।
निसबत वाहेदत एकै, तो क्यों जुदी कहिए खिलवत ॥२७॥

इतहीं हक मेहेरबानगी, इतहीं हुकम इलम ।
तो इत जोस इस्क क्यों न आवहीं, जो हकें दिल में धरे कदम ॥२८॥

सोई सहूर अर्स का, जो कह्या हक इलम ।
सोई मोमिन पे बेसकी, यों अर्स रूहें जुदे ना खसम ॥२९॥

१. पूर्ण प्रकाश (इन्तहा नूर) । २. खजाना । ३. समर्थ ।

जुबां क्या कहे बड़ाई हक की, पर रूहें भूल गई लाड़ लज्जत ।
एक दम न जुदे रहे सकें, जो याद आवे हक निसबत ॥३०॥

हक हैड़े के अंदर, मता अनेक अलेखे ।
उपली नजरों न आवहीं, जो लों रूह अंदर ना देखे ॥३१॥

क्यों छूटे हक हैयड़ा, मोमिन के दिल सें ।
अर्स मता जो मोमिन का, सब हक हैड़े में ॥३२॥

सब अंग देखत रस भरे, प्रेम के सुख पूरन ।
रूह सोई जाने जो देखहीं, ले हिरदे रस मोमिन ॥३३॥

ए जो बातून गुन हक दिल में, सो क्यों आवे मिने हिसाब ।
ए दृष्ट मन जुबां क्या कहे, ए जो मसाला ख्वाब ॥३४॥

छाती मेरे खसम की, जिन का नाम सुभान ।
जो नेक देखूं गुन अन्दर, तो तबहीं निकसे प्रान ॥३५॥

जो निध हक हैड़े मिने, सो कई अलेखे अनेक ।
सो सुख लेसी अर्स में, जिन बेवरा लिया इत देख ॥३६॥

हक हैड़े में जो हेत है, रूहों सों प्रेम प्रीत ।
जिन मेहेर होसी निसबत, सोई ल्यावसी परतीत ॥३७॥

हक हैडे में इस्क, सब अंगों सनेह ।
रूह देखसी हक मेहेर से, निसबती होसी जेह ॥३८॥

हक हैड़े में एही बसे, मैं लाड़ पालों रूहों के ।
ए हक हुज्जत आवे तिनों, तन असल अर्स में जे ॥३९॥

हक हैड़े में निस दिन, सुख देऊं रूहों अपार ।
जिन रूह लगी होए अन्दर, सो जानेगी जाननहार ॥४०॥

एक नुकता इलम हक दिल से, आया मेरे दिल मांहें ।
इन नूर नुकते की सिफत, केहे न सके कोई क्यांहें ॥४१॥

ले नूर नुकते की रोसनी, मैं ढूंढ़े चौदे भवन ।
इनमें कहूं न पाइया, मांहें त्रैलोकी त्रैगुन ॥४२॥

इन इलम नुकते की रोसनी, नहीं कोट ब्रह्मांडों कित ।
सो दिया मोहे सुपने दिल में, जो नहीं नूर अछर जाग्रत ॥४३॥

खाक पानी आग वाए को, ए चौदे तबक हैं जे ।
सो मेरे दिल कायम किए, बरकत नुकते इलम के ॥४४॥

एक बूंद आया हक दिल से, तिन कायम किए थिर चर ।
इन बूंद की सिफत देखियो, ऐसे हक दिल में कई सागर ॥४५॥

एक बूंद ने बका किए, तो होसी सागरों कैसा बल ।
तो काहूं न पाई तरफ किने, कई चौदे तबक गए चल ॥४६॥

ऐसे कई सुख हक हैड़े मिने, सो ए जुबां कहें क्योंकर ।
हैड़े बल तो नेक कह्या, जो इत बूंद आई उतर ॥४७॥

कोट ब्रह्मांड का केहेना क्या, जिमी झूठी पानी आग वाए ।
ए चौदे तबक जो मुरदे, नुकते इलमें दिए जिवाए ॥४८॥

क्यों कहिए सोभा हक की, ना कछू झूठ में आए हम ।
लेहेजे[1] हुकमें झूठे बैराट को, सांचे किए नुकते इलम ॥४९॥

कही न जाए झूठमें, हक हैड़े की सिफत ।
हक सोभा छल में तो होए, जो सांच जरा होए इत ॥५०॥

तो कह्या वेद कतेब में, ए ब्रह्मांड नहीं रंचक ।
तो क्यों कहिए आगे इनके, ए जो सिफत दिल हक ॥५१॥

कहूं सुन्दर सोभा सलूकी, कहूं केते गुन उपले ।
ए सुख न आवे हिसाब में, ए जो गिरो देखत है जे ॥५२॥

हक छाती सलूकी सुनके, रूह छाती न लगे घाए ।
धिक धिक पड़ो तिन अकलें, हाए हाए ओ नहीं अर्स अरवाए ॥५३॥

१. प्रताप (के कारण खुश होकर) ।

हक छाती नरम कोमल, रूह सदा रहे सूर धीर ।
पाए बिछुरे पिउ परदेस में, हाए हुए सो रही ना कछू तासीर[1] ॥५४॥

छाती मेरे खसम की, देखी जोर सलूक ।
न्यारे होत निमख में, हाए हाए जीवरा न होत टूक टूक ॥५५॥

छाती मेरे मासूक की, चुभी मेरी छाती मांहें ।
जो रूह अर्स अजीम की, तिनसे छूटत नाहें ॥५६॥

बिछुरे पाए परदेस में, देखी पिउ अंग छाती ।
अब पलक पड़े जो बिछोहा, हाए हाए उड़े ना करे आप घाती ॥५७॥

मासूक छाती रूह थें ना छूटहीं, अति मीठी रंग भरी रस ।
ए क्यों कर छोड़े मोमिन, जो होए अरवा अर्स ॥५८॥

ए अंग मेरे मासूक के, मीठे अति मुतलक ।
ए लज्जत असल याद कर, ए लें अरवा आसिक ॥५९॥

मुख न फेरें मोमिन, छाती इन सुभान ।
ए करते याद अनुभव, क्यों न आवे असल ईमान ॥६०॥

मासूक छाती निरखते, क्यों याद न आवे अर्स ।
विचार किए आवे अनुभव, जा को दिल कह्यो अरस-परस ॥६१॥

हकें अर्स कह्या दिल मोमिन, अर्स में मता हक सब ।
अजूं हक आड़े पट रहे, ए देख्या बड़ा तअजुब[2] ॥६२॥

पट एही अपने दिल को, हकें सोई दिल अर्स कह्या ।
हक पट अर्स सब दिल में, अब अंतर कहां रह्या ॥६३॥

जो विचार विचार विचारिए, तो हक छाती न दिल अंतर ।
ए पट आड़ा क्यों रहे, जब हुकमें बांधी कमर ॥६४॥

ए क्यों रहे पट अर्स में, पूछ देखो हक इलम ।
ओ उड़ाए देसी पट बीच का, जब रूह हुकमें आई कदम ॥६५॥

१. प्रभाव - असर । २. आश्चर्य ।

एही पट फरामोस का, दिल में रही अंतर ।
जब हुकमें बंधाई हिम्मत, तब होस में न आवे क्योंकर ॥६६॥

दिल अर्स कह्या याही वास्ते, परदा कह्या जहूर ।
दोऊ दिलके बीच में, जो दिल देखे कर सहूर ॥६७॥

हक छाती निपट नजीक है, सेहेरग से नजीक कही ।
हक सहूर किए बिना, आड़ी अंतर तो रही ॥६८॥

हक भी कहे दिल में, अर्स भी कह्या दिल ।
परदा भी कह्या दिलको, आया सहूरें बेवरा निकल ॥६९॥

जो पीठ दीजे ब्रह्मांड को, हुआ निस दिन हक सहूर ।
तब परदा उड़्या फरामोस का, बका अर्स हक हजूर ॥७०॥

मेहेबूब छाती की लज्जत, देत नहीं फरामोस ।
फरामोस उड़े आवे लज्जत, सो लज्जत हाथ प्रेम जोस ॥७१॥

इस्क जोस और इलम, ए हक हुकम के हाथ ।
तब हक हैड़ा ना छूटहीं, ए सब सुख हैड़े साथ ॥७२॥

ए मेहेर करें जो मासूक, तो रूह हुकमें बांधे कमर ।
तब फरामोसी दूर दिलसे, हक हैड़े चुभी नजर ॥७३॥

ए होए हक निसबतें, रूहों हुकम देवे हिंमत ।
तब फरामोसी रेहे ना सके, दे हक छाती लाड़ लज्जत ॥७४॥

इन विध छाती न छूटहीं, रूहों सों निस दिन ।
असल सुख हक हैड़े के, ए लज्जत लगे अर्स तन ॥७५॥

जोस इस्क सुख अर्स के, ए लगें रूह मोमिन ।
जब ए सबे मदत हुए, तब क्यों रहे पट रूहन ॥७६॥

असल नींद सो फरामोसी, फरामोसी सोई अंतर ।
जो अर्स लज्जत आवहीं, तो इलमें तबहीं जुड़े नजर ॥७७॥

इलम सहूर मेहेर हुकम, ए चारों चीजें होंए एक ठौर ।
तिन खैंच लिया मता अर्स का, पट नहीं कोई और ॥७८॥

अर्स तन दिल में ए दिल, दिल अन्तर पट कछू नाहें ।
सुख लज्जत अर्स तन खैंचहीं, तब क्यों रहे अन्तर मांहें ॥७९॥

सुपन होत दिल भीतर, रूह कहूं ना निकसत ।
ए चौदे तबक जरा नहीं, ए तो दिल में बड़ा देखत ॥८०॥

हक छाती रूहथें न छूटहीं, नजर न सके फेर ।
जो कोई रूह अर्स की, ताए हक बिना सब अन्धेर ॥८१॥

हक छाती में लाड़ लज्जत, और छाती में असल आराम ।
ए सब सुख को रस पूरन, जो रूह लग रही आठों जाम ॥८२॥

रूहों हक छाती चुभ रही, सो देवे लज्जत अरवाहों को ।
असल सुख सागर भयो, देखें अर्स आराम सबमों ॥८३॥

ए जो हक हैड़े की खूबियां, सो क्या केहेसी बुध माफक ।
पर ए कहे हक हुकम, और हक इलम बेसक ॥८४॥

रूह खड़ी करे हुकम, और बेसक लदुन्नी इलम ।
ना तो रूह कहे क्यों नींद में, हक हैड़ा बका खसम ॥८५॥

महामत कहे बोलूं हुकमें, अर्स मसाला ले ।
दरगाही रूहन को, सुख असल देने के ॥८६॥

॥प्रकरण॥११॥चौपाई॥६४१॥

खभे कण्ठ मुखारविंद सोभा समूह ॥मंगला चरन॥

मुख मेरे मेहेबूब का, रंग अति उज्जल गुलाल ।
क्यों कहूं सलूकी नाजुकी, नूर तजल्ली नूरजमाल ॥१॥

बांहें मेरे मासूक की, प्यारी लगें मेरी रूह ।
हक हुकम यों कहावत, सो वाही जाने हकहू[1] ॥२॥

१. वास्तविकता ।

अंग रंग सलूकी सुभान की, चकलाई उज्जल गौर ।
नाम सुनत इन अंग के, जीवरा न होत चूर चूर ।।३।।
ए छबि अंग अर्स के, जोत अंग हक मूरत ।
ए केहेनी में आवे क्यों कर, जो कही अमरद सूरत ।।४।।
खभे देत दोऊ खूबियां, रूह देख देख होए खुसाल ।
जो नेक आवे अर्स की लज्जत, तो रोम रोम लगे रूह भाल ।।५।।
खभे मच्छे कोनिया, और कलाइयां काड़न ।
पोहोंचे हथेली अंगुरी, नूर क्यों कर कहूं नखन ।।६।।
जोत नखन की क्यों कहूं, अवकास रह्यो भराए ।
तामें जोत नखन की, नेहेरें चलियां जाए ।।७।।
ज्यों ज्यों हाथ की अंगुरी, होत है चलवन ।
त्यों त्यों नख जोत आकास में, नेहेरें चीर चली रोसन ।।८।।
एक अंग जो निरखिए, तो निकस जाए उमर ।
एक अंग बरनन ना होवहीं, तो होए सरूप बरनन क्यों कर ।।९।।
अति गौर हस्त कमल, अति नरम अति सलूक ।
ए हस्त चकलाई देखके, जीवरा होत नहीं टूक टूक ॥१०॥
काड़े कलाई कोनियां, इन अंग रंग सलूक ।
फेर मच्छे खभे लग देखिए, रूह क्यों न होए भूक भूक ॥११॥
ए अंग सारे रस भरे, सब संधों संध इस्क ।
सहूर किए जीवरा उड़े, अर्स अंग वाहेदत हक ॥१२॥
जीवरा न समझे अर्स को, ना सहूर करे वाहेदत ।
रूहें भूल गई लाड़ लज्जत, ना सुध रही निसबत ॥१३॥

।।मंगलाचरन तमाम।।

अब कहूं कण्ठ सोभा मुख की, और इस्क सबों अंग ।
आसिक दिल छबि चुभ रही, मासूक रूप रस रंग ॥१४॥

ए जो कोमलता कण्ठ की, क्यों कहूं चकलाई गौर ।
नेक कह्या जात ख्वाब में, जो हकें दिया सहूर ॥१५॥

गौर केहेती हों मुखसे, सो देख के अंग इतका ।
ए जुबां दृष्ट इत फना की, सोभा क्यों कहे कण्ठ बका ॥१६॥

कण्ठ गौर कई सुख देवहीं, जो कछू खोले रूह नजर ।
सो होत हक के हुकमें, जिन ने करी नजीक फजर ॥१७॥

ए जो लज्जत लाड़ की, सोभी हुई हाथ इजन ।
जिन निसबतें बेसक करी, ताए क्यों न आवे लज्जत तन ॥१८॥

ना तो बेसक जब निसबत, तब रूह क्यों करे फरामोस ।
ए देह जो सुपन की, खिन में उड़ावे हक जोस ॥१९॥

ए जो देखो सहूर करके, भई आड़ी हक आमर ।
ना तो बल करते धनी बेसक, ए देह ख्वाब रहे क्यों कर ॥२०॥

प्रीत रीत इस्क की, इस्कै सहज सनेह ।
निस दिन बरसत इस्क, नख सिख भीगे सब देह ॥२१॥

भौं भृकुटी पल पापण, मुसकत लवने निलवट ।
इन विध जब मुख निरखिए, तब खुलें हिरदे के पट ॥२२॥

छब फब नई एक भांत की, श्रवन गाल मुसकत ।
लाल अधुर मुख नासिका, जानों गौर हरवटी हँसत ॥२३॥

हाथ पांउं पेट हैयड़ा, कण्ठ हार भूखन वस्तर ।
ए सब अंग हक के मुसकत, और नाचत हैं मिलकर ॥२४॥

बल बल जांउं मुख हक के, सोभा अति सुन्दर ।
ए छबि हिरदे तो आवहीं, जो रूह हुकमें जागे अंदर ॥२५॥

हक मुख छब हिरदे मिने, जो आवे अंतस्करन ।
तिन भेली लज्जत लाड़ की, आवे अर्स के अंग वतन ॥२६॥

गौर मुख लाल अधुर, ए जो सलूकी सोभित ।
एह जुबां तो केहे सके, जो कोई होए निमूना इत ॥२७॥

कहे जांए न गौर गलस्थल, और अधुर लालक ।
मुख चकलाई हक की, सब रस भरे नूर इस्क ॥२८॥

लाल जुबां दंत अधुर, हरवटी गौर हँसत ।
जब बातून नजरों देखिए, तब रूह सुख पावत ॥२९॥

अधुर हरवटी बीच में, क्यों कहूं लांक सलूक ।
एही अचरज मोहे होत है, दिल देख न होत भूक भूक ॥३०॥

दोऊ छेद्र चकलाई नासिका, गौर रंग उज्जल ।
तिलक निलाट कई रंगों, नए नए देखत मांहें पल ॥३१॥

नैन रस भरे रंगीले, चंचल चपल भरे सरम ।
ए अरवाहें जानें अर्स की, जो मेहेरम[1] बका हरम[2] ॥३२॥

नेत्र अनियां अति तीखियां, रस इस्क भरे पूरन ।
ए खैंचें जिन रूह ऊपर, ताए सालत हैं निस दिन ॥३३॥

स्याम सेत भौंह लवने, नेत्र गौर गिरदवाए ।
स्याह पुतली बीच सुपेत में, जंग जोर करत सदाए ॥३४॥

सोभा धरत अति श्रवनों, मोती उज्जल बीच लाल ।
ए मुख रूह जब देखहीं, बल बल जाऊं तिन हाल ॥३५॥

प्यारी बातें करे जब आसिक, हेतें सुनत हक कान ।
क्यों कहूं सुख तिन रूह के, जो प्यार कर सुनें सुभान ॥३६॥

रूह बात करे एक हक सों, हक देत पड़उत्तर चार ।
कुरबान जाऊं हक हादी की, जासों हक करें यों प्यार ॥३७॥

ए छबि अंग अर्स के, जो अंग हक मूरत ।
ए केहेनी में आवे क्यों कर, जो कही अमरद[3] सूरत ॥३८॥

१. भेद का जानकार । २. खिलवत खाना । ३. किशोर ।

कांध केस पेच पगरी, पीठ लीक रूप रंग ।
हाए हाए जीवरा ना उड़े, केहेते अर्स रेहेमानी अंग ॥३९॥

पाग सोभित सिर हक के, बनी हक दिल चाहेल ।
सो इन जुबां क्यों केहे सके, जाकी दृष्ट अंग इन खेल ॥४०॥

दुगदुगी सोभा तो कहूं, जो पगड़ी सोभा होए और ।
जोत करे हक दिल चाही, कोई तरफ बनी इन ठौर ॥४१॥

ए क्यों आवे जुगत जुबां मिने, क्यों कहूं एह सलूक ।
जो ए तरह आवे रूह दिल में, तो तबहीं होवे टूक टूक ॥४२॥

इन पागै में है दुगदुगी, बनी पागै में कलंगी ।
ए जंग करे जोत जोत सों, ए बनायल हक दिल की ॥४३॥

कई जिनसें कई जुगतें, कई तरह भांत सलूकी ए ।
कई रंग नंग तेज रोसनी, नूर छायो अंबर जिमी जे ॥४४॥

जित चाहिए ठौर दुगदुगी, सब बनी पाग पर तित ।
ठौर कलंगी के कलंगी, सिफत न जुबां पोहोंचत ॥४५॥

कई सुख सलूकी इन पाग में, मैं तो कहूं बिध एक ।
दिल चाही रूह देखत, एक खिन में रूप अनेक ॥४६॥

ना कछु खोली ना फेर बांधी, इन पागै में कई गुन ।
पल पल में सुख दिल चाहे, नए नए देत रूहन ॥४७॥

या विध के सुख देत हैं, वस्तर या भूखन ।
सुख हक सरूप सिनगार के, किन विध कहूं मुख इन ॥४८॥

तिलक नासिका नेत्र की, केस लवने कांन गाल ।
मुख चौक देख नैन रूह के, रोम रोम छेदे ज्यों भाल ॥४९॥

मुख सुन्दरता क्यों कहूं, नूरजमाल सूरत ।
ए बयान दुनी में क्यों करूं, ए जो आई अर्स न्यामत ॥५०॥

ए मुख देख सुख पाइए, उपजत है अति प्यार ।
देख देख जो देखिए, तो रूह पावे करार ॥५१॥

जो देखूं मुख सलूकी, तो चुभ रहे रूह मांहें ।
जो सुख मुख अर्स का, केहे ना सके जुबांएँ ॥५२॥

गौर निलवट रंग उज्जल, जाऊं बल बल मुखारबिंद ।
ए रस रंग छबि देखिए, काढ़त विरहा निकन्द[1] ॥५३॥

जो मुख सोभा देखिए, तो उपजत रूह आराम ।
आठों पोहोर आसिक, एही मांगत है ताम[2] ॥५४॥

जो गौर रंग देखिए, जुबां कहा कहे हक मान ।
और कछू न देवे देखाई, आगूं अर्स सुभान ॥५५॥

हँसत सोभित मुख हरवटी, अति सुन्दर सुखदाए ।
हाए हाए रूह नजर यासों बांधके, क्यों टूक टूक होए न जाए ॥५६॥

अति गौर सुन्दर हरवटी, और अतंत सोभा सलूक ।
बड़ा अचरज ए देखिया, जीवरा सुनत न होए टूक टूक ॥५७॥

हरवटी अधुर बीच लांक जो, मुख अधुर दोऊ लाल ।
ए लाली मुख देखे पीछे, हाए हाए लगत न हैड़े भाल ॥५८॥

सोभित हँसत हरवटी, बड़ी अचरज सलूकी मुख ।
रूह देखे अन्तर आंखां खोलके, तो उपजे अर्स सुख ॥५९॥

क्यों कहूं गौर गालन की, सोभित अति सुन्दर ।
जो देखूं नैना भरके, तो सुख उपजे रूह अन्दर ॥६०॥

क्यों कहूं गाल की सलूकी, क्यों कहूं गाल का रंग ।
अनेक गुन गालन में, ज्यों जोत किरन रंग तरंग ॥६१॥

बारीक सुख सरूप के, कोई जाने रूह मोमिन ।
इस्क इलम जोस याही को, जाके होसी अर्स में तन ॥६२॥

१. नष्ट करना । २. खुराक ।

ए मुख अचरज अदभुत, गुन केते कहूं गालन ।
ए रूहें जाने सुख बारीक, हर गुन अनेक रोसन ॥६३॥

रूह के नैना खोल के, देखूं दोऊ गाल ।
आसिक को मासूक का, कोई भेद गया रंग लाल ॥६४॥

गाल रंग अति उज्जल, गेहेरा अति कसूंबाए ।
मेहेबूब मुख देखे पीछे, रूह खिन न सहे अंतराए ॥६५॥

ए अंग अर्स सरूप के, क्यों होए बरनन जिमी इन ।
ए अचरज अदभुत हकें किया, वास्ते अरवा अर्स के तन ॥६६॥

महामत हुकमें केहेत हैं, हक बरनन किया नेक ।
और भी कहूं हक हुकमें, अब होसी सब विवेक ॥६७॥

॥प्रकरण॥१२॥चौपाई॥७०८॥

हक मासूक के श्रवण अंग

श्रवन की किन विध कहूं, लेत आसिक इत आराम ।
देख सुन सुख पावहीं, आसिक रूह इन ठाम ॥१॥

कानन के गुन अनेक हैं, सुख आसिक बिना हिसाब ।
आठों जाम इत पीवहीं, अर्स अरवाहें ए सराब ॥२॥

देख कोमलता कान की, नैनों सीतलता होए ।
आसिक इन सरूप के, ए सुख जानें सोए ॥३॥

मासूक का मुख सोभित, देख लवने केस कान ।
पेहेचान वाले सुख पावहीं, देख अर्स अजीम सुभान ॥४॥

कानों सुनें आसिक की, दिल दे गुझ मासूक ।
कहे आधा सुकन इस्क का, आसिक होए जाए भूक भूक ॥५॥

मुख जुबां मासूक की, सो भी कानों के ताबीन[1] ।
रूह देखे गुन कानन के, जासों हक जुबां होत आधीन ॥६॥

१. आधीन ।

हकें आसिक नाम धराइया, वाको भी अर्थ ए ।
मासूक उलट आसिक हुआ, सो भी बल कानन के ।।७।।

हक कहे मेरा नाम आसिक, सो भी सुनके गुझ मोमिन ।
ए जाने अरवा अर्स की, कहूं केते कानों गुन ।।८।।

खावंद अर्स अजीम का, गुझ सुनत रात दिन ।
ए जो अरवाहें अर्स की, कई सुख लेवें कानन ।।९।।

हक आसिक हुआ याही वास्ते, सो रूहें क्यों न सुनें हक बात ।
ए कौन जाने अर्स रूहों बिना, कान गुन अंग अख्यात[१] ॥१०॥

बोहोत बड़े गुन कान के, बिना आसिक न जाने कोए ।
कई गुझ गुन श्रवन के, और कोई जाने जो दूसरा होए ॥११॥

और देखो गुन कानन के, जब हक देत रूहों कान ।
वाको ले अपने नजर में, देखें सनकूल[२] दृष्ट सुभान ॥१२॥

सब सुख पावे रूह तिनसों, हुए नेत्र भी कानों तालूक[३] ।
सीतल दृष्टें देखत, ए जो मासूक मलूक[४] ॥१३॥

ए सब बरकत कानों की, सो सुन सुन रूहकी बान ।
दिल भी हक तहां देत हैं, मेहेर करत मेहेरबान ॥१४॥

ए गुन सब कानन के, कई गुझ सुख रूह परवान ।
रूहें कई सुख कानों लेत हैं, रेहेमत इन रेहेमान ॥१५॥

हक इस्क जो करत है, सो सब कानों की बरकत ।
अनेक सुख हैं इनमें, सो जानें हक निसबत ॥१६॥

आसिक जाए कहूं ना सके, छोड़ सुख हक श्रवन ।
हिसाब नहीं गुन कानों के, कोई सके न ए गुन गिन ॥१७॥

खोल देखो एक इस्क को, तो कई सुख अर्स अपार ।
सो सुख लेसी कर बेवरा, जो होसी निसबती हुसियार ॥१८॥

१. गुप्त । २. प्रसन्न । ३. संबंध । ४. सुंदर ।

दिल के सुख केते कहूं, जो हक दिल दरिया पूरन ।
सब अंग ताबे दिल के, होसी अर्समें हिसाब इन ॥१९॥

तो इन जुबां क्यों होवहीं, हक हादी सागर सुख ।
ए बारीक सुख बीच अर्स के, होसी मूल मेले के मुख ॥२०॥

जो अर्थ ऊपर का लेवहीं, सो सुख जाने एक हक श्रवन ।
एक एक के कई अनेक, सो कई गुन मगज[1] लेवें मोमिन ॥२१॥

कई अंग ताबे कान के, कान अंग सिरदार ।
कोई होसी रूह अर्स की, सो जानेगी जाननहार ॥२२॥

इलम भी ताबे कानों के, जो इलम कह्या बेसक ।
ए झूठी जिमिएं सेहेरग से नजीक, इन इलमें पाइए इत हक ॥२३॥

कई गुन हैं कानन के, जाके ताबे दिल खसम ।
क्यों सिफत कहूं इन दिलकी, जिन दिल ताबे[2] हुकम ॥२४॥

हुकम इलम ताबे कान के, मेहेर दिल ताबे इस्क के ।
क्यों कहूं इनसे आगे वचन, कानों ताबे[2] भए सागर ए ॥२५॥

निकस न सके आसिक, हक के एक अंग से ।
तिन अंग ताबे कई सागर, अर्स रूहें पड़ी इनमें ॥२६॥

जो सागर कहे ताबे कान के, तिन सागरों ताबे कई सागर ।
जो गुन देखूं हक एक अंग, याथें रूह निकसे क्यों कर ॥२७॥

जो गुन मैं केहेती हों, हक अंग गुन अपार ।
अर्स रूहें गिनें गुन अंग के, सो गुन आवे न कोई सुमार ॥२८॥

सुनो मोमिनों एक ए गुन, एक अंग ऊपर के कान ।
अंग अपार कहे कई बातून, अजूं जुदे भूखन सुभान ॥२९॥

जैसी सोभा देखों साहेब की, तैसे कानों पेहेने भूखन ।
आसमान जिमी के बीच में, हो रही सबे रोसन ॥३०॥

१. भेद । २. आधीन ।

एक अंगमें कई खूबियां, सो एक खूबी कही न जाए ।
तिन खूबी में कई खूबियां, गिनती होए न ताए ॥३१॥

सो खूबियां भी अर्स की, जाके कायम सुख अखंड ।
सो कायम सुख इत क्यों कहूं, ए जो जुबां इन पिंड ॥३२॥

क्यों बरनों अर्स अंग को, एक अंग में अनेक रंग ।
जो देखों ताके एक रंग को, तिन रंग रंग कई तरंग ॥३३॥

सो एक तरंग ना केहे सकों, एक तरंगे कई किरन ।
जो देखूं एक किरन को, तो पार न पाऊं गुन गिन ॥३४॥

एह निमूना देत हों, सो रूहें जानें जो सिफत करत ।
जथार्थ सब्द न पोहोंचहीं, तो जुबां पोहोंचे क्यों हक सिफत ॥३५॥

जो कबूं कानों ना सुनी, सो सुन जीव गोते खाए ।
दम ख्वाबी बानी वाहेदत की, सुनते ही उड़ जाए ॥३६॥

श्रवन गुन गंज क्यों कहूं, जाके ताबे हुए कई गंज ।
इन गंजो गुन सुख सो जानहीं, जिन बका हक समझ ॥३७॥

गुन एक अंग कह्यो न जावहीं, जो देखों दिल धर ।
तो गंज अलेखे अपार के, सुख कहूं क्यों कर ॥३८॥

जब देखो गुन श्रवना, जानों कोई न इन सरभर ।
सहूर करों एक गुन सुख, तो जाए निकस उमर ॥३९॥

ताथें सुख और अंगों के, सो भी लिए दिल चाहे ।
ना तो श्रवन ताबे कई गंज हुए, ताको एक गुन दिल न समाए ॥४०॥

ए सुख बिना हिसाब के, ए जानें मोमिन दिल अर्स ।
ए रस जिन रूहों पिया, सोई जाने दिल अरस-परस ॥४१॥

जो देखी सारी कुदरत, सो भी इन श्रवन की बरकत ।
जो विचार करों इन तरफ को, तो देखों सब में एही सिफत ॥४२॥

जो सहूर कीजे हक सिफतें, तो ए तो हक बका श्रवन ।
ए सुख क्यों आवें सुमार में, कछू लिया अर्स दिल मोमिन ॥४३॥

जेता सहूर जो कीजिए, सब सिफतें सिफत बढ़त ।
जो कदी आई बोए इस्क, तो मुख ना हरफ कढ़त ॥४४॥

कहे हुकमें महामत मोमिनों, क्यों कहे जाए गुन कानन ।
जाके ताबे कई गंज सागर, ए सुख सेहे सके अर्स के तन ॥४५॥

॥प्रकरण॥१३॥चौपाई॥७५३॥

हक मासूक के नेत्र अंग

देखों नैना नूरजमाल, जो रूहों पर सनकूल ।
अरवा होए जो अर्स की, सो जिन जाओ खिन भूल ॥१॥

दिल अर्स नाम धराए के, नैना बरनों नूरजमाल ।
हाए हाए छेद न पड़े छाती मिने, रोम रोम लगे ना रूह भाल[1] ॥२॥

जो अरवा कहावे अर्स की, सुने बेसक हक बयान ।
हाए हाए ए झूठी देह को छोड़ के, पोहोंचत ना तित प्रान ॥३॥

सिफत पाई हक नैन की, हक नैनों में गुन अपार ।
सो गुन अखंड अर्स के, ए रंग हमेसा करार ॥४॥

गुन नैनों के क्यों कहूं, रस भरे रंगीले ।
मीठे लगें मरोरते, अति सुन्दर अलबेले[2] ॥५॥

सोभावंत कई सुख लिए, तेजवंत तारे ।
बंके नैन मरोरत मासूक, सब अंग भेदत अनियारे ॥६॥

मेहेर भरे मासूक के, सोहें नैन सुन्दर ।
भृकुटी स्याम सोभा लिए, चुभ रेहेत रूह अंदर ॥७॥

जोत धरत कई जुगतें, निहायत मान भरे ।
लज्या लिए पल पापण, आनंद सुख अगरे[3] ॥८॥

१. भाला । २. अनुपम, छैल छबीला । ३. अधिक ।

नैनों की गति क्यों कहूं, गुनवंते गंभीर ।
चंचल चपल ऐसे लगें, सालत सकल सरीर ।।९।।

नूर भरे नैना निरमल, प्रेम भरे प्यारे ।
रस उपजावत रंग सों, मानों अति कामन-गारे[१] ॥१०॥

जब खैंचत भर कसीस[२], तब मुतलक डारत मार ।
इन विध भेदत सब अंगों, मूल तन मिटत विकार ॥११॥

निपट बंकी छबि नैन की, नूरै के तारे कारे ।
सोभें सेत लालक लिए, नूर जोत उजियारे ॥१२॥

बड़े लम्बे टेढ़क लिए, अति अनियां सोभे ऊपर ।
सीतल करूना[३] अमी झरे, मद रंग भरे सुन्दर ॥१३॥

सोहत छैल छबीले, कहा कहूं सलूक ।
एह नैन निरखे पीछे, हाए हाए जीव न होत भूक भूक ॥१४॥

दयासिंध सुख सागर, इस्क गंज अपार ।
सराब पिलावत नैन सों, साकी ए सिरदार ॥१५॥

छब फब इन नैनों की, जो रूह देखे खोल नैन ।
आठों पोहोर न निकसे, पावे आसिक अंग सुख चैन ॥१६॥

प्रेम पुंज गंज गंभीर, नेत्र सदा सुखदाए ।
जो रूह मिलावे नैन नैन सों, तो चोट फूट निकसे अंग ताए ॥१७॥

सीतल दृष्ट मासूक की, जासों होइए सनकूल ।
होए आसिक इन सरूप की, पाव पल न सके भूल ॥१८॥

नैन देखें नैन रूह के, तिनसों लेवे रंग रस ।
तब आवें दिल में मासूक, सो दिल मोमिन अरस-परस ॥१९॥

रूह देखे हक नैन को, नेत्र में गुन अनेक ।
सो गुन गिनती में न आवहीं, और केहेने को नैन एक ॥२०॥

१. मन मोहक । २. आकर्षण । ३. दया ।

कई गुन देखे छब फब में, कई गुन मांहें सलूक ।
गुन गिनते इन नैनों के, हाए हाए अजूं न होए दिल भूक ॥२१॥

मेरी रूह नैन की पुतली, तिन नैन पुतली के नैन ।
मासूक राखूं तिन बीच में, तो पाऊं अर्स सुख चैन ॥२२॥

प्रेम प्रीत रस इस्क, सब नैनों में देखाई देत ।
ए रस जानें रूहें अर्स की, जो भर भर प्याले लेत ॥२३॥

देख देख जो देखिए, तो अधिक अधिक अधिक ।
नैन देखे सुख पाइए, जानों सब अंगों इस्क ॥२४॥

ए नैन देख मासूक के, आसिक के सब अंग ।
सुख सीतल यों चुभत, सब अंग बढ़त रस रंग ॥२५॥

कई गुन बड़े नैनके, और कई गुन नैन टेढ़ाए ।
कई गुन तेज तारन में, कई गुन हैं चंचलाए ॥२६॥

कई गुन हैं तिरछाई में, कई गुन पाँपण पल ।
कई गुन सीतल कई मेहेर में, कई तीखे गुन नेहेचल ॥२७॥

कई गुन सोभा सुन्दर, कई गुन प्रेम इस्क ।
कई गुन नैन रंग में, कई गुन नैन रस हक ॥२८॥

कई गुन नैनों के नूर में, कई गुन नैनों के हेत ।
कई गुन तीखे कई सील में, गुन मीठे कई सुख देत ॥२९॥

कई गुन केते कहूं, गुन को न आवे पार ।
ए भूल देखो अपनी, ए सोभा गुन गिनूं मांहें सुमार ॥३०॥

कई गुन नेत्र सुभान के, सो क्यों कहूं चतुराई इन ।
इत जुबां बल न पोहोंचहीं, हिस्सा कोटमा एक गुन ॥३१॥

प्यारे मेरे प्राण के, नैना सुख सागर सलोने ।
रेहे ना सकों बिना रंगीले, जो कसूंबड़ी उजलक में ॥३२॥

जब देखों सीतल नजरों, सब ठरत आसिक के अंग ।
सब सुख उपजे अर्स में, हक मासूक के संग ॥३३॥

मैं नैनों देखूं नैन हक के, हुई चारों पुतली तेज पुन्ज ।
जब नैन मिलें नैन नैन में, नूरै नूर हुआ एक गन्ज ॥३४॥

हक देखें पुतली अपनी, मैं देखूं अपनी पुतलियां ।
मैं हक देखूं हक देखें मुझे, यों दोऊ अरस-परस भैयां ॥३५॥

हक देखें मेरे नैन में, पुतली जो अपनी ।
मैं अपनी देखूं हक नैन में, यों दोऊ जुगलें जुगल बनी ॥३६॥

अति गौर पांपण नैन की, पल वालत देखत सरम ।
गुन गरभित मेहेरें पाइए, रूह हुकमें देखे ए मरम ॥३७॥

स्याम बंके भौंह नैनों पर, रंग गौर जुड़े दोऊ आए ।
निपट तीखी अनियां नेत्र की, मारे आसिकों बान फिराए ॥३८॥

जब खैंचत नैना जोड़ के, तब दोऊ बान छाती छेदत ।
अंग आसिक के फूट के, वार पार निकसत ॥३९॥

दमानक[1] ज्यों कहूं कहूं, यों पीछली देत गिराए ।
ए चोट आसिक जानहीं, जो होए अर्स अरवाए ॥४०॥

भौंह बंके नैन कमान ज्यों, भाल बंकी सामी तीन बल ।
बान टेढ़े मारत खैंच मरोर के, छाती छेद न गया निकल ॥४१॥

तीर कह्या तीन अंकुड़ा, छाती छेद न गया चल ।
रह्या सीने बीच आसिक के, हुआ काढ़ना रूहों मुस्किल ॥४२॥

केहेर कह्या तीर त्रगुड़ा, रही सीने बीच भाल ।
रोई रात दिन आसिक, रोवते ही बदल्या हाल ॥४३॥

अर्स बका तीर त्रगुड़ा, रह्या अर्स रूहों हिरदे साल ।
ना पांच तत्व तीर त्रिगुन, ए नैन बान नूरजमाल[2] ॥४४॥

१. बारुद वाली बंदूक । २. श्री राज जी ।

ए बलवान सेहेज के, जो कदी मारे दिल में ले ।
न जानों तिन आसिक का, कौन हाल होवे ए ॥४५॥

ए बान टेढ़े अव्वल के, और टेढ़े लिए चढ़ाए ।
खैंच टेढ़े मारें मरोर के, सो क्यों न आसिक टेढ़ाए ॥४६॥

कहे गुन महामत मोमिनों, नैना रस भरे मासूक के ।
अपार गुन गिनती मिने, क्यों कर आवें ए ॥४७॥

॥प्रकरण॥१४॥चौपाई॥८००॥

हक मेहेबूब की नासिका

गौर निरमल नासिका, सोभा न आवे मांहें सुमार ।
आसिक जाने मासूक की, जो खुले होंए पट द्वार ॥१॥

निपट सोभा है नासिका, सोहे तैसा ही तिलक ।
और नहीं इनका निमूना, ए सरूप अर्स हक ॥२॥

कई खुसबोए अर्स की, लेवत है नासिका ।
दोऊ नैनों के बीच में, सोभा क्यों कहूं सुन्दरता ॥३॥

रंग उजलाई अर्स की, झांई झलके कसूंब[1] बका[2] ।
देत सलूकी कई सुख, रूह नैन को नासिका ॥४॥

ए छब फब कोई भांत की, निलाट तिलक बीच नैन ।
ए आसिक नासिका देख के, पावत हैं सुख चैन ॥५॥

भौंह भासत भली भांतसों, पांपण पलकों पर ।
ए नैन सोभा नूर जहूर, ए जाने मोमिन अन्तर ॥६॥

अर्स फूल सुगन्ध अनगिनती, हिसाब नहीं कहूं कोए ।
रसांग चीज सब अर्स की, कोई जरा न बिना खुसबोए ॥७॥

सो खुसबोए सब लेत है, रस प्रेमल सुगन्ध सार ।
सब भोग विवेकें लेत है, हक नासिका भोगतार ॥८॥

१. केसरी । २. अखंड ।

ए को जानें रस सबन के, को जाने भोग सबन ।
ए सब भोगी हक नासिका, हक सुख लेत देत रूहन ।।९।।

चित्त चाह्या नासिका भूखन, खुसबोए लेत चित्त चाहे ।
चित्त चाही जोत सोभा धरे, सुख आसिक अंग न समाए ।।१०।।

हक सुख खुसबोए के, कई नए नए भोग लेत ।
ले ले हक विवेक सों, नए नए रूहों सुख देत ।।११।।

कई कई लाड़ रूहन के, लेत देत अरस-परस ।
नित नए सुख देत सनेह सों, जानों नया दूजा लिया सरस ।।१२।।

नित लेत प्रेम सुख अर्स में, जानों आज लिया नया भोग ।
यों हक देत जो हम को, नित नए प्रेम संजोग ।।१३।।

जिमी जल तेज वाए बन, जो कछू बीच आसमान ।
सब खुसबोए नूर में, सुख देत रूहों सुभान ।।१४।।

महामत कहे हक नासिका, याकी सोभा न आवे सुमार ।
कछू बड़ी रूह मोमिन जानहीं, जा को निस दिन एही विचार ।।१५।।

।।प्रकरण।।१५।।चौपाई।।८१५।।

हक मासूक की जुबान की सिफत

जा को नामै रसना, होसी कैसी मीठी हक ।
जिन की जैसी बुजरकी, जुबां होत है तिन माफक ।।१।।

केहेनी में न आवहीं, विचार देखें मोमिन ।
होए जाग्रत अरवा अर्स की, कछू सो देखे रसना रोसन ।।२।।

अति मीठी जुबां मासूक की, देत आसिक को सुख ।
कछू अर्स सहूरें सुख लीजिए, पर कह्यो न जाए या मुख ।।३।।

ए याद किए हक रसना, आवत है इस्क ।
जिन इस्कें अर्स देखिए, सुख पाइए हक मुतलक ।।४।।

और सुख हक दिल में, जाहेर होत रसनाए ।
एह सिफत किन बिध कहूं, जो रेहेत हक मुख मांहें ।।५।।
बोहोत सुख हक तन में, जाहेर करें हक नैन ।
सब पूरा सुख तब पाइए, जब कहे रसना मुख बैन ।।६।।
हर अंग सुख दें हक के, ऊपर जाहेर सुख जुबान ।
बड़ा सुख रूहों होत है, जब हक मुख करें बयान ।।७।।
ए बेवरा पाइए बीच खेल के, कम ज्यादा अर्स में नाहें ।
समान अंग सब हक के, ए विचार नहीं अर्स मांहें ।।८।।
बोहोत बातें सुख अर्स के, सो पाइयत हैं इत ।
सुख उमत को अर्स में, ए जानती न थीं निसबत ।।९।।
सुख जानें न हक पातसाही, सुख जानें न हक इस्क ।
सुख जानें ना रूहें लाड़ के, तो इत इलम दिया बेसक ॥१०॥
तो हक अंग सुख खेल में, बेवरा करत हुकम ।
अजूं न आवे नजरों सरूप, ना तो क्यों वरनवाए खसम ॥११॥
हकें हम रूहों वास्ते, अनेक वचन कहे मुख ।
सो रूहें जागे हक इस्क का, आपन लेसी अर्स में सुख ॥१२॥
सुख अनेक दिए हक रसनाएँ, और सुख अलेखे अनेक ।
सो जागे रूहें सब पावहीं, ताथें रसना सुख विसेक ॥१३॥
हकें खेल देखाया याही वास्ते, सुख देखावने अपने अंग ।
सुख लेसी बड़ा इस्क का, रूहें ले विरहा मिलसी संग ॥१४॥
दायम इस्क सबों अपना, रूहें केहेती अपनी जुबान ।
याही रसना बल वास्ते, खेल देखाया सुभान ॥१५॥
एक हुकम जुबां के सब हुआ, तिन हुकमें चले कई हुकम ।
सो जेता सब्द दुनीय में, ए सब हम वास्ते किया खसम ॥१६॥

हक जुबान की बुजरकी, किया खेल में बड़ा विस्तार ।
सो सुख लेसी हम अर्स में, जिन को नहीं सुमार ॥१७॥

जेती चीज जरा कोई खेल में, सो हक हुकमें हलत चलत ।
सो सुख दिए हक रसनाएं, हम केती करें सिफत ॥१८॥

कलाम अल्ला या हदीसें, सास्त्र पुरान या वेद ।
ए सब सुख लेवे मोमिन, हक रसना के भेद ॥१९॥

खेल किया याही वास्ते, हकें सुख दिए जुबान ।
सो मेरी इन जुबान सों, क्यों कर होए बयान ॥२०॥

ए बयान होसी बीच अर्स के, हम रूहें मिल जासी जब ।
हक जुबान का बेवरा, हम लेसी अर्स में तब ॥२१॥

बड़े बयान बातें कई, जो हक जुबांएँ दिए इत ।
इत बेवरा कर जाए अर्स में, लेसी लज्जत बीच खिलवत ॥२२॥

ए बारीक सुख अर्स के, हक जुबांएँ दई न्यामत ।
और न कोई पावहीं, बिना हक निसबत ॥२३॥

हक रूहों को बुलाए के, नजीक बैठाई ले ।
ए जाहेर करत है रसना, ए जो अन्तर का सनेह ॥२४॥

मीठी जुबां बोलत मासूक, रूहें प्यारी आसिक सों ।
ऐसा मीठा अर्स खावंद, जाके बोल चुभें हिरदे मों ॥२५॥

प्यारी रसना सों अनेक, प्यारी बातें करें बनाए ।
प्यारे प्यारी रूह बीच में, ए गुन जुबां किने न गिनाए ॥२६॥

मीठी जुबां मीठे वचन, मीठा हक मीठा रूहों प्यार ।
मीठी रूह पावे मीठे अर्स की, जो मीठा करे विचार ॥२७॥

प्यारी खिलवत में प्यारी रसना, होत वचन कदीम[1] ।
सो इन जुबां प्यार क्यों कहूं, जो हक हादी रूहें हलीम[2] ॥२८॥

१. हमेसा । २. गम्भीर, गुझ ।

सब अंग जिनके इस्क के, तिनकी कैसी होसी जुबान ।
अर्स रूहें जानें जाग्रत, जो रहें सदा कदमों सुभान ॥२९॥

मेरी रूह देखे सहूर कर, जाके नख सिख लग इस्क ।
जुबां कैसी तिन होएसी, और बानी बका अर्स हक ॥३०॥

हक रसना बोले जो अर्स में, जिन किन को वचन ।
सो सब कारन जानियो, वास्ते सुख रूहन ॥३१॥

खेलावत हक बोलाए के, या पंखी या पसुअन ।
सो सब रूहों वास्ते, सब को एह कारन ॥३२॥

खेलते बोलते नाचते, या देखें खेल लराए ।
सो सब वास्ते रूहन के, कई विध खेल कराए ॥३३॥

कहूं केती बातें हक रसना, निपट बड़ो विस्तार ।
क्यों कहूं जो किए रूहों सों, हक जुबां के प्यार ॥३४॥

हक रसना गुन खेल में, पाव हरफ को होए न सुमार ।
तो जो गुन रसना अर्स में, ताको क्यों कर पाइए पार ॥३५॥

ए बेवरा जानें रूहें अर्स की, जा को हुआ हक दीदार ।
जाए सिफायत हुई महंमद की, याको जाने सोई विचार ॥३६॥

हक रसना गुन जानें रूहें, जा को निस दिन एही ध्यान ।
ए खेल कबूतर क्या जानहीं, हक रसना के बयान ॥३७॥

जो कछू बोले हक रसना, सो सब वास्ते रूहन ।
और जरा हक दिल में नहीं, ए जानें दिल अर्स मोमिन ॥३८॥

जो कछू बोलें हक जुबांन, सो सब रूहों के हेत ।
अर्स बोल खेल या चलन, या जो कछू लेत देत ॥३९॥

हुकम कहावे मेरी रूह पे, जो हुई मुझमें बीतक ।
सो कहूं अर्स रूहों को, जो दिए सुख रसना हक ॥४०॥

हक रसना के सुख जो, आवे ना गिनती मांहें ।
कई सुख अलेखे अपार, क्यों कहे जाएँ जुबांएँ ॥४१॥

मीठी मीठी मांहें मीठी मीठी, रस रसीली रसना बान ।
सुख सुखके मांहें कई सुख, सुख क्यों कहूं रसना सुभान ॥४२॥

मोहे इलम दिया आए अपना, तासों प्यार दिया मुझको ।
चौदे तबक कायम किए, केहेलाए मेरी रसना सों ॥४३॥

एक नुकते इलम अपने, दुनी बका कराई मुझसे ।
तो गंज अंबार जो सागर, कैसे होसी हक दिल में ॥४४॥

जो कोई सब्द बीच दुनियां, सो उठे हुकम के जोर ।
ए गुझ सुख हक रसना, कछू मोमिन जानें मरोर ॥४५॥

बका करी जो दुनियां, दिया सब को हक इलम ।
सो इलम सिफत करे हमारी, हुकमें किया वास्ते हम ॥४६॥

ए जो बका किए हम वास्ते, जाने कायम होए सिफत ।
सिफत फना की ना रहे, ए हुकमें हम को दई न्यामत ॥४७॥

मेहेर करी हक रसनाएं, सो किन विध कहूं विस्तार ।
बका सब्द जो उचरे, सो देने रूहों सुख अपार ॥४८॥

सब के हक हमको किए, हक रसनाएं बीच बका ।
ए सुख इन मुख क्यों कहूं , जो दिया हादी रूहों को भिस्त का ॥४९॥

अर्स के सुख तो हमेसा, घट बढ़ इत नाहें ।
पर ए नया सुख नई साहेबी, कायम कर दिया भिस्त मांहें ॥५०॥

अर्स सुख और भिस्तका सुख, ए खेल में दिए सुख दोए ।
इन दोऊ में दिए सुख खेलके, ए हक रसना बिना क्यों होए ॥५१॥

दई भिस्त चौदे तबक को, सबों पूरा इस्क इलम ।
सो सब सेवें हम को, सबों बल रसना खसम ॥५२॥

पेहेले प्यार दिया मुझे इलम सों, सो मुझपे इलम दिवाए ।
सब दुनियां को आरिफ[1] कर, मुझ आगे सबपे कथाए ॥५३॥

ए सब हक रसनाएं किया, इलम प्यारा लग्या सबन ।
सो इलमें आरिफ पूजें मोहे, असल अर्स में हमारे तन ॥५४॥

प्यार लग्या मोहे जिनसों, हकें बड़ा किया सोए ।
सो सबपे केहेलाए हुकमें, सब विध सुख दिया मोहे ॥५५॥

ए सुध नहीं अजूं मोमिनों, जो सुख दिए हक रसनाएँ ।
हकें सुख दिए आप माफक, सो कह्या जाए न इन जुबांएँ ॥५६॥

कर कायम हक रसना रस, सचराचर दिए पोहोंचाए ।
यों रसना के रस हम को, सुख कई विध दिए बनाए ॥५७॥

सबों इलम पढ़ाए आलम[1] किए, जिनसों था मेरा प्यार ।
सो सुख हक रसनाएं दिया, करके बका विस्तार ॥५८॥

ए कायम सुख हक तरफ के, हक इलम इस्क हुकम ।
सुख लाड़ लज्जत हुज्जत के, दिए कायम मेरे खसम ॥५९॥

सुध न हुती हक साहेबी, ना सुध इलम वाहेदत ।
सुध ना हुज्जत निसबत, सो सुध दई जुबां खिलवत ॥६०॥

हक बका सुख कई विध, अर्स में नहीं सुमार ।
बिन बूझे सुख हम लेते, हुते न खबरदार ॥६१॥

सो आठों भिस्त कायम कर, दिए अर्स पट खोल मारफत ।
तिनमें पुजाए सुख दिए, कर जाहेर हक निसबत ॥६२॥

हक रसना सुख दिए देत हैं, और सुख देंगे आगूं जे ।
सो इतथें सब हम देखत, सुख केते कहूं रसना के ॥६३॥

हक रसनाएं ऐसी सुध दई, हुआ है होसी बका मांहें ।
यों खोली अंतर रूह नजर, ऐसी हुई ना रूहों सों क्यांहें ॥६४॥

१. विद्वान, ब्रह्म ज्ञानी ।

कहूं केते सुख हक रसना, जैसे आप अलेखे अपार ।
सो सब सुख बका में रूहों, जा को होए न काहूं सुमार ॥६५॥

ए नेक कह्या बीच खेल के, हक रसना के गुन ।
ए सब बातें मिल करसी, आगूं हक बका वतन ॥६६॥

सुनो महामत रसना रस, और सुनाइयो मोमिन ।
जो हुकम कहे तोहे हेत कर, हक रसना के गुन ॥६७॥

॥प्रकरण॥१६॥चौपाई॥८८२॥

हक मासूक के वस्तर

देत निमूना बीच नासूत, जानों क्योंए आवे मांहें दिल ।
आगूं मेला बड़ा होएसी, लेसी मोमिन ए विध मिल ॥१॥

एक देऊं निमूना दुनी का, जो पैदा दुनी में होत ।
धागा होत है रूई का, और जवेरों जोत ॥२॥

धागा असल रूई तांतसा, जवेर जैसी जोत नंग ।
हुकमें बनें ताके वस्तर, होए कैसा पेहेनावा अंग ॥३॥

पैदा निमूना दुनी का, अर्स जिमिएं नहीं पोहोंचत ।
दुनी निमूना हक को, ए कैसी निसबत ॥४॥

जामा कहूं मैं सूत का, के कहूं कपड़ा रेसम ।
के कहूं हेम नंग जवेर का, के कहूं अव्वल पसम ॥५॥

ए पांचों उत पोहोंचे नहीं, जो कर देखो सहूर ।
क्यों पोहोंचे फना जड़ निमूना, ए हक बका चेतन नूर ॥६॥

जो कहूं बका जिमीय के, जवेर या वस्तर ।
सो भी रूह के अंग को, सोभा कहिए क्यों कर ॥७॥

जो चीज पैदा जिमी की, सो दूसरी कही जात ।
चीज दूसरी वाहेदत में, कैसे कर समात ॥८॥

हक इलमें चुप कर न सकों, और सब्द में न आवे सिफत ।
ताथें हुकम केहेत है, सुनो जामें की जुगत ।।९।।

पर कछुक निमूने बिना, नजरों न आवे तफावत ।
तो चुप से तो कछू कह्या भला, रूह कछू पावे लज्जत ॥१०॥

ए दिल में ले देखिए, अर्स धागा और नंग ।
जोत न माए आकास में, जो सोभें पेहेने हक अंग ॥११॥

वस्तर नहीं जो पेहेर उतारिए, ए हक अंग नूर रोसन ।
दिल चाह्या रंग जोत पोत, अर्स अंग वस्तर भूखन ॥१२॥

ए जो कही जुगत जामे की, हक अंग का रोसन ।
और भांत सुख आसिकों, पेहेने तन वस्तर भूखन ॥१३॥

नीला रंग इजार का, मिहीं चूड़ी घूंटी ऊपर ।
तिन पर झलके दावन, हरी झांई आवत नजर ॥१४॥

रंग नंग बूटी कछुए, लगत नहीं हाथ को ।
ए सुख बारीक अर्स के, इन अंग का नूर अर्स मों ॥१५॥

जोत करे दिल चाहती, जैसी नरमाई अंग चाहे ।
सोभा धरे दिल चाहती, जुबां खुसबोए कही न जाए ॥१६॥

चोली अंग को लग रही, सेत जामा अंग गौर ।
चीन से कुसादी[1] दावन, ताको क्योंकर कहूं जहूर ॥१७॥

पेहेनावा अर्स अजीम का, क्यों कहिए मांहें सुपन ।
कंकरी एक अर्स की, उड़ावे चौदे भवन ॥१८॥

वस्तरों में कई रंग हैं, सो हाथ को लगत नाहें ।
और भी हाथ लगे नहीं, जो जवेर वस्तरों मांहें ॥१९॥

रंग रेसम जवेर जो देखत, सो सब मसाला नंग ।
वस्तर भूखन सब नंगों के, मांहें अनेक देखावें रंग ॥२०॥

१. खुली ।

कई बेली किनार में, और कई विध बेली चीन ।
बीच बूटी छापे कई नकस, इन जल की जाने जल मीन ॥२१॥

रंग कंचन कमर कस्या, पटुका जो पूरन ।
केते रंग इनमें कहूं, जानों एही सबे भूखन ॥२२॥

सो रंग सारे जवेरन के, कई रंग छेड़े किनार ।
हर धागे रंग कई विध, नहीं रंग जोत सुमार ॥२३॥

दोऊ बगलों केवड़े, किन विध कहूं रोसन ।
कई रंग नंग मांहें झलकत, जामा क्यों कहूं अर्स तन ॥२४॥

ए सोभा देख सुख उपजे, हक वस्तर या भूखन ।
और इनकी मैं क्यों कहूं, जो रेहेत ऊपर इन तन ॥२५॥

गिरवान दोऊ देखत, अति सुन्दर अनूपम ।
मुख आगे मासूक के, निरखत अंग आतम ॥२६॥

बातें करें सलोनियां[1], मासूक सलोंने[2] मुख ।
नैन सलोंने रस भरे, कई देत आसिकों सुख ॥२७॥

दोऊ बेल दोऊ बगलों पर, जानों कुन्दन नंग जड़तर ।
नीले पीले लाल जवेर, सुख पाऊं देत नजर ॥२८॥

दोऊ बांहें चूड़ी अति सुन्दर, मिहीं मिहीं से लग मोहोरी ।
कई रंग नंग चूड़ियों, जवेर जवेर बीच जरी ॥२९॥

मोहोरी जड़ाव फूल बने, जानों के एही नंग भूखन ।
बेल जामें जो जुगतें, सबथें सोभा अति घन ॥३०॥

किन विध जामा लग रह्या, ए जो अंग का जहूर ।
कई नकस बूटी मिहीं बेलियां, रूह कर देखे अर्स सहूर ॥३१॥

पार न जामें सलूकी, ना कछू नरमाई पार ।
इन मुख गुन केते कहूं, खूबी तेज न सुगंध सुमार ॥३२॥

१. रसीली । २. सुंदर, मनोहर ।

इन ऊपर जो भूखन, नेक इनकी कहूं विगत ।
क्यों नूर कहूं अर्स अंग का, पर तो भी कहूं नेक मत ॥३३॥

धागे बराबर नकस, झीने बारीक अतंत ।
ए फूल बेल तो आवें नजरों, जो अंग अंग खुलें वाहेदत ॥३४॥

ए नकस सो जानहीं, नैनों देखें जो होए निसबत ।
ए देखें याद आवहीं, पेहेले बातें हुई खिलवत ॥३५॥

हक पाग जो निरखते, होए अचरज मांहें सहूर ।
ए याद किए क्यों जीव ना उड़े, देख नूरजमाल मुख नूर ॥३६॥

हुकमें पाव पल में, पाग कई कोट होत ।
रंग नंग फूल कई नकस, दिल चाही धरे जोत ॥३७॥

हक पाग बनावें हाथ अपने, अर्स खावंद दिल दे ।
ए देखें रूह सुख पावत, जब हाथ गौर पेच ले ॥३८॥

आसिक चाहे मैं देखों, हक यों पेच लेत हाथ मांहें ।
कई विध फेरें पेच को, कोई इन सुख निमूना नाहें ॥३९॥

जो रंग चाहिए जिन मिसलें, सो नंग धरत तित जोत ।
फूल नकस कटाव कई, ए कछू अचरज पाग उद्दोत ॥४०॥

मध्य चौक जित चाहिए, ऊपर चाहिए चौकड़ी जित ।
बेल पात सब रंग नंग, सोई बनी पाग जुगत ॥४१॥

ताथें हक लेत पेच हाथ में, कोमल अंगुरियों ।
गौर अंगुरियां पतली, मीठा सोभें मुंदरियों ॥४२॥

पोहोंचे देखूं के अंगुरी, नरमाई देखूं के गौर ।
मुंदरी देखूं के हथेलियां, लीकें देखूं के नख नूर ॥४३॥

चलवन करते हाथ की, नैनों देखत सब सलूक ।
यों देखत मासूक को, अजूं होत न आसिक टूक ॥४४॥

महामत निमूना ख्वाब का, क्यों दीजे हक वस्तर ।
हक नूर न आवे सब्द में, पर रह्या न जाए क्योंए कर ॥४५॥

॥प्रकरण॥१७॥चौपाई॥९२७॥

हक मेहेबूब के भूखन

भूखन सब्दातीत के, क्यों इत बरनन होए ।
सोभा अर्स सरूप की, इत कबहूं न बोल्या कोए ॥१॥

तो क्यों माने बीच दुनियां, ए जो हक जात भूखन ।
रैन अंधेरी क्यों रहे, जब जाहेर हुआ बका दिन ॥२॥

अनेक गुन नंग इनमें, रूह दिल चाह्या जब ।
जिन जैसा दिल उपजे, सो होत आगूं से सब ॥३॥

जेती अरवाहें अर्स में, ताए मन चाह्या सब होए ।
दिल चितवन भी पीछे करे, आगे बनि आवे सोए ॥४॥

जैसा मीठा लगे मन को, भूखन तैसा ही बोलत ।
गरम ठंढा सब अंग को, चित्त चाह्या लगत ॥५॥

हक बरनन करत हों, कहूं नया किया सिनगार ।
ए सब्द पोहोंचे नहीं, आवत न मांहें सुमार ॥६॥

वस्तर और भूखन, ए हक अंग का नूर ।
सो निमख न जुदा होवहीं, ज्यों सूरज संग जहूर ॥७॥

इन जिमी आसिक क्यों रहे, बिना किए अपनों आहार ।
खाना पीना एही आसिकों, अर्स रूहों एही आधार ॥८॥

सोई कलंगी सोई दुगदुगी, सोभे पाग ऊपर ।
केहे केहे मुख एता कहे, जोत भरी जिमी अंबर ॥९॥

कई विध के सुख जोत में, और कई सुख सुन्दरता ।
कई सुख तरह सलूकियां, सिफत पोहोंचे न हक बका ॥१०॥

मोतिन की जोत क्यों कहूं, इन जुबां के बल ।
सोभा लेत दोऊ श्रवनों, अति सुन्दर निरमल ॥११॥

मोती जोत अचरज, और अति उत्तम दोऊ लाल ।
जो रूह देखे नैन भर, तो अलबत[1] बदले हाल ॥१२॥

कहे जुबां जोत आकास लों, जोतें सोभा कई करोर ।
सो बोल न सके जुबां बेवरा, इन अकल के जोर ॥१३॥

ए तो मोती लाल कुन्दन, वाहेदत खावंद श्रवन ।
आकास जिमी भरे जोत सों, तो कहा अचरज है इन ॥१४॥

चोली अंग सों लग रही, ज्यों अंग नूर जहूर ।
ए लज्जत दिल तो आवहीं, जो होवे अर्स सहूर ॥१५॥

एक देख्या हार हीरन का, कई कोट सूरज उजास ।
इन उजास तेज बड़ा फरक, ए सुख सीतल जोत मिठास ॥१६॥

हार दूजा मानिक का, जानों उन थें अति सोभाए ।
जब लालक इनकी देखिए, जानों और सबे ढंपाए ॥१७॥

तीसरा हार अंग देखिया, अति उज्जल जोत मोतिन ।
जानों सबथें ऊपर, एही है रोसन ॥१८॥

जब हार चौथा देखिए, जानों नीलक अति उजास ।
जानों के सरस सबन थें, ए देत खुसाली खास ॥१९॥

हार लसनियां पांचमा, कछू ए सुख सोभा और ।
जानों जोत जिमी आकास में, भराए रही सब ठौर ॥२०॥

जब नंग देखूं नीलवी, जानों एही सुख सागर ।
जोत मीठी रंग सुन्दर, जानों के सब ऊपर ॥२१॥

हारों बीच जो दुगदुगी, मांहें नव रतन ।
नव जोत नव रंग की, जानों सब ऊपर ए भूखन ॥२२॥

१. निःसंदेह ।

ए जोत सब जुदी जुदी, देखिए मांहें आसमान ।
सब जोत जोत सो लड़त हैं, कोई सके न काहूं भान ॥२३॥

भूखन सामी न देखिए, जो देख्या चाहे जंग ।
पेहेले देखिए आकास को, तो जुध करे नंग सों नंग ॥२४॥

जो कदी पेहेले हार देखिए, तो वाही नजर भरे जोत ।
या बिन कछू न देखिए, सब में एही उद्दोत ॥२५॥

नेक कहूं बाजू बन्ध की, जोत न जामें सुमार ।
तो जो नंग बाजू बन्ध के, सो क्यों आवें मांहें विचार ॥२६॥

नंग पटली दस रंग की, मांहें कई विध के नकस ।
ए सलूकी बेल बूटियां, एक दूजे पे सरस ॥२७॥

लटके बाजू बन्ध फुन्दन, झलकत झाबे अपार ।
कई नंग रंग एक झाबे[1] में, सो एक एक बाजू चार चार ॥२८॥

तामें नंग कहूं केते जरी, तिन फुन्दन में कई रंग ।
रंग रंग में कई किरने, किरन किरन कई तरंग ॥२९॥

बांहें हलते फुन्दन लटके, हींचे फुन्दन जोत प्रकास ।
बांहें हलते ऐसा देखिए, मानों हींचत नूर आकास ॥३०॥

जो पटलियां पोहोंची मिने, सात पटली सात नंग ।
सो सातों नंग इन भांत के, मानों चढ़ता आकासे रंग ॥३१॥

स्याम सेत नीली पीली, जांबू आसमानी लाल ।
हाए हाए करते पोहोंची बरनन, अजूं होस लिए खड़ा हाल ॥३२॥

जो एक नंग नीके निरखिए, तो रोम रोम छेदत भाल ।
जो लों देखों उपली नजरों, तो लों बदलत नाहीं हाल ॥३३॥

कड़ियां कांड़ों सोभित, तिनकी और जुगत ।
बल ल्याए कई दोरी नंग, रूह निरखें पाइए विगत ॥३४॥

१. गुच्छा ।

ए नजरों नंग तो आवहीं, जो आवे निसबत प्यार ।
ना तो भूखन हाथ हक के, दिल करसी कहा विचार ॥३५॥

जुदे जुदे जवेरन की, दस विध की मुंदरी ।
दोऊ अंगूठों अंगूठिएँ, और मुंदरी आठ अंगुरी ॥३६॥

मानिक मोती नीलवी, पाच पांने पुखराज ।
लसनिएं और मनी, रहे कुंदन मांहें बिराज ॥३७॥

ए दसे अंगुरियों मुंदरी, नूर नख अंगुरी पतलियां ।
पोहोंचे हथेली उज्जल लीकें, प्रेम पूरन रस भरियाँ ॥३८॥

अब चरनों चारों भूखन, चारों में जुदे जुदे रंग ।
जानो के रस जवेर के, जैसे जोत अर्स के नंग ॥३९॥

दस रंग नंग मांहें झांझरी, ए बानी जुदी झनकार ।
ए सोभा अति अनूपम, अर्स के अंग सिनगार ॥४०॥

यामें बेल पात नकस कई, कई करकरी फूल कांगरी ।
बानी सोभा सुख देत है, घाट अचरज ए झांझरी ॥४१॥

और बेली कई नकस, मिहीं मिहीं जुगत जिनस ।
जब नीके कर देखिए, जानों सब थें एह सरस ॥४२॥

जो सोभावत चरन को, सो केते कहूं गुन इन ।
कोई घायल अरवा जानहीं, जो होसी अर्स के तन ॥४३॥

भूखन अंग अर्स के, जानसी कोई आसिक ।
अनेक सुख गुन गरभित, ए अर्स सूरत अंग हक ॥४४॥

दोऊ मिल मधुरे बोलत, लेऊं खुसबोए के सुनों बान ।
सोभा कहूं के नरमाई, ए भूखन चरन सुभान ॥४५॥

बान मधुरी घूंघरी, ए जुदे रूप रंग रस ।
पांच रंग नंग इनमें, जानो उनपे एह सरस ॥४६॥

कई करड़े कई बूटियां, नकस नाके रंग और ।
ए सोभा कहूँ मैं किन मुख, जा को इन चरनों है ठौर ॥४७॥

मानो लाल कड़ी मानिक की, मांहें कई रंग बेल अनेक ।
सिर पुतलियों लग रही, ए सोभा अति विसेक ॥४८॥

इन कड़ी के रूप रंग, मिहीं बेली गिनी न जाए ।
मानों पुतली वाही की कांगरी, ए जुगत अति सोभाए ॥४९॥

अब कहूं रंग कांबीय के, पेहेरी जंजीर ज्यों जुगत ।
जुदे जुदे रंग हर कड़ी, नैना देख न होंए तृपित ॥५०॥

अनेक कड़ियां जंजीर में, गिनती होए न ताए ।
कई रंग नंग एक कड़ीय में, बेल जंजीर गिनी न जाए ॥५१॥

ए विचार कीजे जब दिल से, रूह की खोल नजर ।
कड़ी कड़ी के रंग देखिए, गिनते होए जाए फजर ॥५२॥

ऊपर खजूरा कड़ियन का, और कई बेल कड़ियों मांहें ।
तिन बेलों रंग बेली कड़ियों, ए खूबी क्यों कर कहे जुबांएँ ॥५३॥

तेज जोत सोभा सलूकी, रूह केताक देखे ए ।
खुसबोए नरम स्वर माधुरी, और कई सुख गुझ इनके ॥५४॥

पांच रंग नंग हर कड़ी, कई बेल फूल पात ।
कई कटाव कई बूटियां, इन जुबां गिने न जात ॥५५॥

हर कड़ी कई करकरी, सो देखत ज्यों जड़ाव ।
नंग जोत नजरों आवहीं, कई नकस कई कटाव ॥५६॥

सखती न देवें चरन को, ना बोझ देवें पाए ।
गुन सुख एक भूखन, इन मुख गिने न जाए ॥५७॥

ए देखत अचरज भूखन, बैठे अंग को लाग ।
ए सोभा कही न जावहीं, कोई देखे जिन सिर भाग ॥५८॥

सरूप पुतलियों मोतियों, है ऊपर हर जंजीर ।
सोभित सनमुख चेतन, क्यों कहूं इन मुख नीर ॥५९॥

हक चाही बानी बोलत, हक चाही जोत धरत ।
खुसबोए नरमाई हक चाही, हक चाह्या सब करत ॥६०॥

जैसे सरूप रूहन के, चरनों लगे गिरदवाए ।
त्यों पुतलियां मोतिन की, कदमों रही लपटाए ॥६१॥

सब समूह भूखन जब देखिए, अदभुत सोभा लेत ।
जुबां खूबी क्यों केहे सके, हक दिल चाही सोभा देत ॥६२॥

हाथ दीजे भूखन पर, सो हाथों लगत नाहें ।
पेहेने हमेसा देखिए, ऐसे कई गुन हैं इन मांहें ॥६३॥

अर्स तन हाथ अर्स तने, एक दूजे परस होए ।
हाथ वस्तर या भूखन, दूजा अर्स तने लगे न कोए ॥६४॥

और हाथ कोई है नहीं, कह्या वास्ते भूखन के ।
और वस्तर ना कछू भूखन, जो इत निमूना लगे ॥६५॥

है एक हमेसा वाहेदत, दूजा जरा न काहूं कित ।
ए देखत सो भी कछुए नहीं, और कछू नजरों भी न आवत ॥६६॥

वाहेदत का वाहेदत में, वस्तर भूखन पेहेनत ।
ए नूर है इन अंग का, ए सुन्य ज्यों ना नासत ॥६७॥

ए मिहीं बातें अर्स सुखकी, सो जानें अर्स अरवाए ।
इन जिमी सो जानहीं, जिन मोमिन कलेजे घाए ॥६८॥

इन जिमी आसिक क्यों रहे, वह खिन में डारत मार ।
तो लों रहे सहूर में, जो लों रखे रखनहार ॥६९॥

एही काम आसिकन के, फेर फेर करे बरनन ।
विध विध सुख सरूप के, सुख लेवें सिनगार भिन भिन ॥७०॥

एही आहार आसिकन का, एही सोभा सिनगार ।
झीलें सागर वाहेदत में, मेहेर सागर अपार ॥७१॥

महामत देखे विवेक सों, हक वस्तर और भूखन ।
सब अंग सोभा अंगों की, ज्यों दिल रूह होए रोसन ॥७२॥

॥प्रकरण॥१८॥चौपाई॥९९९॥

जोबन जोस मुख बीड़ी छबि

फेर फेर पट खोलें हुकम, निसबत जान रूहन ।
हक मुख अंग इस्क के, ले देखिए अर्स अंग तन ॥१॥

हक बरनन जिमी सुपने, हुकमें कह्या नेक सोए ।
हक इस्क एक तरंग से, रूह निकस न सके कोए ॥२॥

सुन्दर मुख मासूक का, और अंग सबे सुन्दर ।
सो क्यों छूटे आसिक से, जब चुभे हैड़े अन्दर ॥३॥

क्यों कहूं मुख की सलूकी, और क्यों कहूं सुन्दरता ।
ए आसिक जाने मासूक की, जिन घट लगे ए घा ॥४॥

मुख चौक सलूकी क्यों कहूं, कछू जानें रूह के नैन ।
ए सुख सोई जानहीं, जासों हक करें सामी सैन ॥५॥

सुख पाइए देखें हरवटी, मुख लांक लाल अधुर ।
दन्त जुबां बीच तंबोल, मुख बोलत मीठा मधुर ॥६॥

मुख मूंदे अधुर बोलत, बानी प्रेम रसाल ।
आसिक को छबि चुभ रही, जानों हैड़े निस दिन भाल ॥७॥

सहूर कीजे हक अंग रंग, कई तरंग लाल उज्जल ।
देत गौर सुख सलूकी, सोभा क्यों कहूं बिना मिसल ॥८॥

हक मुखथें बोलें वचन, स्वर मीठा निकसत ।
सो सुनत अर्स रूहों को, दिल उपजे हक लज्जत ॥९॥

हक स्वर कैसा होएसी, और कैसी होसी मुख बान ।
सुख बातें क्यों कहूं रसना, चाहे दिल सुनने सुभान ॥१०॥

हक नेक नैन मरोरत, होत रूहों सुख अपार ।
तो बात कहें सुख हक के, सो क्यों कहूं सुख सुमार ॥११॥

एक रोम रोम हक अंग के, सब सुखै के अम्बार ।
तो सुख सरूप नख सिखलों, रूहें कहा करें दिल विचार ॥१२॥

ज्यों रोम सुपन के अंग को, त्यों रोम न अर्स अंग पर ।
सब अंग इस्क वास्ते, रोम रोम कहे यों कर ॥१३॥

अर्स पसु या जानवर, रोम होत तिन अंग ।
रोम न रूहों अंग पर, रूहें अंग जानें अर्स नंग ॥१४॥

जवेर पैदा जिमीय से, यों अर्स में पैदा न होत ।
ए खूबी हक जहूर की, सो लिए खड़ी सदा जोत ॥१५॥

याको नंग निमूना न दीजिए, अर्स रूहें वाहेदत ।
इने मिसाल न कोई लागहीं, जाकी हक हादी जात निसबत ॥१६॥

जो देऊं निमूना अर्स का, तो रूहों लगत न कोई बात ।
रूहें अंग हादीय को, हादी अंग हक जात ॥१७॥

तिरछा नेक जो मुसकत, तो मार डारत मुतलक ।
जो कदी सनमुख होए यों रूह सों, तो क्यों जीवे रूह आसिक ॥१८॥

आसिक अटके सब अंगों, देख देख रूप सलूक ।
एक नेक अंग के सुख में, रूह हो जात टूक टूक ॥१९॥

सब अंग देखे रस भरे, प्रेम के सुख पूरन ।
रूह सोई जाने जो देखहीं, ए पीवत रस मोमिन ॥२०॥

गौर गाल मुख उज्जल, मांहें गेहेरी लालक ले ।
ए जुबां सुख सोभा क्यों कहे, अर्स अंग हक के ॥२१॥

रूह आसिक जिन अंग अटकी, छूटत नहीं क्यों ए सोए ।
ए किसी बातों आसिक सों, अंग मासूक जुदे न होए ॥२२॥

जेते अंग मासूक के, रूह आसिक रहे तिन मांहें ।
रूह आसिक और कहूं ना टिके, अपने अंग में भी नाहें ॥२३॥

करते बातें प्यारी मासूक, हाथ करें चलवन ।
नेत्र भी वाही तरह, चूभ रेहेत रूह के तन ॥२४॥

सब अंग हक के इस्क भरे, क्यों कर जाने जांए ।
होए रूह जाग्रत अर्स की, ताए हुकम देवे बताए ॥२५॥

जब बात करें हक रूह सों, तब अंग सबे उलसत ।
करते बातें छिपे नहीं, हक अंगों इस्क सिफत ॥२६॥

नेत्र कहे और नासिका, हाथ कहे और मुख ।
और अंग सबे याही विध, केहेते बातें दे सब सुख ॥२७॥

सब अंग करत इसारतें, हक अंग रूह सों लगन ।
ए बारीक बातें अर्स की, कोई जाने जाग्रत मोमिन ॥२८॥

हक अंग जोत की क्यों कहूं, जो नूर नूर का नूर ।
अंग मीठे प्यारे सुख सलूकी, दे हक हुकम सहूर ॥२९॥

कैसी मीठी बानी हक की, कहे प्रेम वचन श्री मुख ।
निसबत जान रमूज के, देत रूहों को सुख ॥३०॥

हक प्रेम वचन मुख बोलते, जोर आवत है जोस ।
ए बानी रूह को विचारते, हाए हाए अजूं उड़े ना फरामोस ॥३१॥

जब जोस आवे हक बोलते, प्रेम सों गलित गात ।
तिन समें मुख मासूक का, मार डारत निघात ॥३२॥

हक अंग सब नाचत, जोस आवत है जब ।
करें बातें रूह सों उमंगें, मुख छबि देखी चाहिए तब ॥३३॥

जोस हमेसा हक को, रेहेत सदा पूरन ।
पर आसिक देखे इन विध, रंग चढ़ता रस जोबन ॥३४॥

सरूप मुख नख सिखलों, जोबन जिनस जुगत ।
ए आसिक अंग अर्सके, चढ़ती जोत देखत ॥३५॥

जोत तेज धात रंग रस, रूह बढ़ता देखे दायम ।
अंग अर्स इसी रवेस, यों देखे सूरत कायम ॥३६॥

चढ़ता रंग रस तो कहूं, जो होए नहीं पूरन ।
पर आसिक जाने मासूक की, नित चढ़ती देखे रोसन ॥३७॥

एही लछन आसिक के, सब चढ़ते देखे रंग ।
तेज जोत रस धात गुन, और सब पख इंद्री अंग ॥३८॥

हक रस रंग जोस जोबन, चढ़ता सदा देखत ।
अर्स अरवा रूहन को, हक प्रेमें देत लज्जत ॥३९॥

घट बढ़ अर्स में है नहीं, हक पूरन हमेसा ।
हम इस्कें लें यों अर्स में, सब सुख पूरनता ॥४०॥

बीड़ी लई जिन हाथ सों, सोभित पतली अंगुरी ।
तिन बीच जोत नंगन की, अति झलकत हैं मुंदरी ॥४१॥

बीड़ी मुख में मोरत, सुन्दर हरवटी हँसत ।
सोभा इन मुख क्यों कहूं, जो बीच में बात करत ॥४२॥

एक लालक तंबोल की, क्यों कहूं अधुर दोऊ लाल ।
दंत सोभित मुख मोरत, खूबी ना इन मिसाल ॥४३॥

लाल उज्जल दोऊ रंग लिए, बीड़ी लेत मुख अंगुरी नरम ।
नेक मुख मूंदे बोलत, अति सुन्दर मुख सरम ॥४४॥

नेक खोलें अधुर मुख बोलत, करें प्यारी बातें कर प्यार ।
सो सुख देत आसिकों, जिन को नहीं सुमार ॥४५॥

सुख देत सब अंग मिल, नैन नासिका श्रवन अधुर ।
हँसत हरवटी भौं भृकुटी, सब दें सुख बोल मधुर ॥४६॥

अदभुत सलूकी इन समें, आसिक पावत आराम ।
आठों जाम हिरदे रूह के, जानों नकस चुभ्या चित्राम ॥४७॥

फेर फेर ए मुख निरखिए, फेर फेर जाऊं बलिहार ।
ए खूबी खुसाली क्यों कहूं, इन सुख नाहीं सुमार ॥४८॥

अधबीच आरोगते, मेवा काढ़ देत मुख थें ।
सरस मेवा केहे देत हैं, आप हाथ मेरे मुख में ॥४९॥

रंग रस यों केहेत हों, ए जो मेहेर करत मेहेरबान ।
ए भूल गैयां हम लाड़ सबे, ना तो क्यों रहे खिन बिन प्रान ॥५०॥

और काम हक को कोई नहीं, देत रूहों सुख बनाए ।
वाहेदत बिना हक दिल में, और न कछुए आए ॥५१॥

सुख देना लेना रूहों सों, और रूहों सों वेहेवार ।
ए अर्स बातें इन जिमिएँ, कोई बिना रूह न लेवनहार ॥५२॥

कोई काम न और रूहों को, एक जानें हक इस्क ।
आठों जाम चौसठ घड़ी, बिना प्रेम नहीं रंचक ॥५३॥

हक जात वाहेदत जो, छोड़े ना एक दम ।
प्यार करें मांहों-मांहें, वास्ते प्यार खसम ॥५४॥

हक अंग चलत मुख बोलते, तब जान्या जात गुझ प्यार ।
ए अरवा अर्स की जानहीं, जा को निसदिन एह विचार ॥५५॥

हक नरम पांउं उठाए के, और धरत जिमी पर ।
ए अर्स बीच मोमिन जानहीं, जिन को खुसबोए आई फजर ॥५६॥

हक धरत पांउं उठावत, तब जानी जात चतुराए ।
सो समझें हक इसारतें, जो होए अर्स अरवाए ॥५७॥

कैसे लगें पांउं चलते, वह कैसी होसी भोम ।
चलते देखे हक चातुरी, हाए हाए घाए न लगे रोम रोम ॥५८॥

इजार देखत पांउं में, लेत झांई जामें पर ।
हाए हाए खूबी इन चाल की, ए जुबां कहे क्यों कर ॥५९॥

स्वर भूखन मधुरे सोहे, ए तरह चलत जो हक ।
ए जो देखे रूह नजर भर, तो चाल मार डारत मुतलक ॥६०॥

नख अंगूठे अंगुरियां, चलते अति सोभित ।
चाल विचारते अर्स की, हाए हाए अरवा क्यों न उड़त ॥६१॥

अर्स दिल मोमिन कह्या, ठौर बड़ी कुसाद ।
हक हादी रूहें मांहें बसें, असल अर्स जो आद ॥६२॥

जेता मता हक का, सो सब अर्स में देख ।
सो सब मोमिन दिल में, पाइए सब विवेक ॥६३॥

हक हादी रूहें खेलैं, उठें बैठें दौड़ें करें चाल ।
ए जानें अरवाहें अर्स की, जो रेहेत हमेसा नाल ॥६४॥

जो तोहे कहे हक हुकम, सो तूं देख महामत ।
और कहो रूहन को, जो तेरे तन वाहेदत ॥६५॥

॥प्रकरण॥१९॥चौपाई॥१०६४॥

हक मासूक का मुख सागर-मंगला चरण

हक इलम के जो आरिफ, मुख नूरजमाल खूबी चाहें ।
चाहें चाहें फेर फेर चाहें, देख देख उड़ावें अरवाहें ॥१॥

एही काम आसिकन का, हक इलम एही काम ।
नूरजमाल का जमाल, छोड़ें न आठों जाम ॥२॥

खाते पीते उठते बैठते, सोवत सुपन जाग्रत ।
दम न छोड़ें मासूक को, जा को होए हक निसबत ॥३॥

हक बरनन फेर फेर करें, फेर फेर एही बात ।
एही अर्स रूहों खाना पीवना, एही वतन बिसात ।।४।।
जेती रूहें आसिक, रेहेत हक खूबी के मांहें ।
रूह को छोड़ के वजूद, कोई जाए न सके क्यांहे ।।५।।
एही हक इलम को लछन, आसिकों एही लछन ।
एही इलम इस्क के आरिफ[1], सोई अर्स रूह मोमिन ।।६।।

मंगला चरण सम्पूर्ण

बरनन करो रे रूहजी, मासूक मुख सुन्दर ।
कोमल सोभा अलेखे, खोल रूह के नैन अंदर ।।७।।
ललित लाल मुख सागर, कहूं अचरज के अदभूत ।
क्यों कर आवे बानीय में, ए बका सूरत लाहूत ।।८।।
मुख गौर झरे कसूंबा[2], सोभा क्यों कहूं बड़ो विस्तार ।
रंग कहूं के सलूकी, ए न आवे मांहें सुमार ।।९।।
कहूं सागर मुख जोत का, के कहूं मेहेर सागर ।
के कहूं सागर कलाओं का, जुबां केहे न सके क्योंए कर ।।१०।।
मुख चौक कहूं के चकलाई, के सीतल सागर सुख ।
के कहूं सागर रस का, जो नूरजमाल का मुख ।।११।।
के कहूं सागर तेज का, के कहूं सागर सरम ।
के नूर सागर कहूं बिलंद, के चंचल गुन नरम ।।१२।।
कहूं सज्जनता के सनकूली, दोस्ती कहूं के प्यार ।
जो जो देखूं नजर भर, सों सब सागर अपार ।।१३।।
सागर कहूं पाक साफ का, के कहूं आबदार[3] ।
हक मुख सागर क्यों कहूं, सब विध पूरन अपार ।।१४।।
मोमिन दिल कोमल कह्या, तो अर्स पाया खिताब ।
तो दिल मोमिन रूह का, तिन कैसा होसी मुख आब ।।१५।।

१. ब्रह्मज्ञानी । २. ललामी । ३. चमकवाला ।

तिन रूह के नैन को, किन विध कहूं नूर तेज ।
जो हक नैनों हिल मिल रहे, जाके अंग इस्क रेजा रेज ॥१६॥

और हक कदम अति कोमल, पांउं तली जोत अतंत ।
सो रहें रूह नैनों बीच में, सो क्या करे जुबां सिफत ॥१७॥

केहेवत हुकम इन जुबां, पर ए खूबी कही न जाए ।
ए कहे बिना भी ना बने, बिन कहें रूह बिलखाए ॥१८॥

इन नैनों सुख बका न देख्या, सुन्या हादियों के मुख ।
सुनी बानी जुबां केहे ना सके, जुबां कहे देख्या सुख ॥१९॥

कहूं नूर तेज रोसनी, याकी जोत गई अंबर लों चल ।
मांहें गुन गरभित कई सागर, क्यों कहे बिना अंतर बल ॥२०॥

किन विध कहूं मुख मांडनी[1], कहूं सनकूली के सुख पुंज ।
के कहूं आनंद सागर पूरन, गरूआ[2] गंभीर[3] नूर गंज ॥२१॥

ए सागर सरूपी मुख मासूक, कई खूबी खुसाली अनेक ।
कई रंग तरंग किरने उठें, ए वेही जानें गिनती विवेक ॥२२॥

इन मुख सागर में कई सागर, सुख आनंद अपार ।
कई सागर सुख सलूकियां, मांहें कई गंज अपार अंबार ॥२३॥

कोई मोमिन केहेसी ए क्यों कह्या, हक मुख सोभा सागर ।
सुच्छम सरूप अति कोमल, ललित किसोर सुन्दर ॥२४॥

जो अरवा होए अर्स की, सो लीजो दिल धर ।
सुच्छम सूरत सोभा बड़ी, सो सुनियो पड़उत्तर ॥२५॥

कह्या निमूना एक भांत का, अंग खूबी इस्क सागर ।
खुसबोए नरम चकलाइयां, सब सागर कहे यों कर ॥२६॥

जो रंग कहूं गौर का, तो सागर मेर तरंग ।
जो कहूं लाल मुख अधुर, हुए सागर लाल सुरंग ॥२७॥

१. सजावट । २. गौरवयुक्त, भारीपन । ३. गहरा, शांत, धीर ।

हक के मुख का नूर जो, सो नूरै सागर जान ।
तेज जोत या सलूकियां, सोभा सागर भरया आसमान ॥२८॥

सोभा हक सूरत की, सागर भी कहे न जांए ।
ए सोभा अति बड़ी है, पर सो आवे नहीं जुबांएँ ॥२९॥

सागर कहे यों जान के, कहे दुनियां में बड़े ए ।
पड़्या सागर से ना निकसे, कही अंग सोभा इन वास्ते ॥३०॥

यों लग्या आसिक एक अंग को, सो तहां ही हुआ गलतान ।
इनसें कबूं ना निकसे, तो कहे सागर अंग सुभान ॥३१॥

ए रस रंग उपले केते कहूं, कई विध जिनस जुगत ।
फेर फेर देख देख देखहीं, रूह क्योंए न होए तृपित ॥३२॥

सेहेज अन्दर के पाइए, मुख देखे हक सूरत ।
रस बस एक हो रहीं, जो रूहें मांहें खिलवत ॥३३॥

जो गुन हक के दिल में, सो मुख में देखाई देत ।
सो देखें अरवाहें अर्स की, जो इत हुई होए सावचेत ॥३४॥

मुख बोले पीछे पाइए, जो दिल अन्दर के गुन ।
पर मुख देखे पाया चाहे, जो अन्दर गुझ रोसन ॥३५॥

जो गुन हिरदे अन्दर, सो मुख देखे जाने जांए ।
ऊपर सागरता पूरन, ताथें दिल की सब देखाए ॥३६॥

मुख मीठा सागर पूरन, मुख मीठा सागर बोल ।
मेहेर सागर दृष्ट पूरन, लई इस्क सागर मांहें खोल ॥३७॥

यों गुन सागर केते कहूं, जो देखत सुख के रंग ।
कई सुख नेहेरें किरना चलें, कई सागर सुख तरंग ॥३८॥

कई रस रंग एक गौर में, एक रंग मांहें कई रस ।
क्यों बरनों आगे मोमिनों, ए मुख मासूक अजीम अर्स ॥३९॥

एक सलूकी में कई चकलाइयां[1], एक चकलाइएँ कई सलूक[2] ।
ए सरूप केहेते आगे मोमिन, दिल होत नहीं टूक टूक ॥४०॥

दोऊ तरफ सोभा कान भूखन, बीच नासिका सोभे दोऊ नैन ।
तिलक निलाट अति उज्जल, दोऊ अधुर मधुर मुख बैन ॥४१॥

सिर मुकट एक भांत का, क्यों कहूं जुबां रंग नंग ।
ना देख सकों नूर नजरों, कई किरने उठें तरंग ॥४२॥

केहे केहे जुबां एता कहे, जो जोत भरया अवकास ।
आसमान जिमी भर पूरन, अब किन विध कहूं प्रकास ॥४३॥

इन विध सोभा मुकट की, ए जुबां क्यों करे बरनन ।
सिर सोभे नूरजमाल के, नीके देखें रूह मोमिन ॥४४॥

ए नंग जवेर केहेत हों, सो सब्द सुपन जिमी ले ।
ए अर्स जवेर भी क्यों कहिए, जो सिनगार हक बका के ॥४५॥

होत जवेर पैदा जिमी से, नंग अर्स में इन विध नाहें ।
जोत पूरन अंग ले खड़ी, रूह जैसी चाहे दिल मांहें ॥४६॥

असल तन जिनों अर्स में, सो कर लीजो दिल विचार ।
हक के सिर का मुकट, सो सोभा क्यों आवे मांहें सुमार ॥४७॥

यों ही है बीच अर्स के, जिनों जो सोभा प्यारी लगत ।
हर रूह अर्स अजीम की, दिल माफक देखत ॥४८॥

तुम इत भी माफक इस्क के, देखियो कर सहूर ।
हिसाब न सोभा मुकट की, ए जुबां क्या करे मजकूर ॥४९॥

हक सूरत सलूकी क्यों कहूं, महंमदें कही अमरद ।
किसोर कही मसीय ने, सोभा कही न जाए मांहें हद ॥५०॥

अति सुन्दर सूरत अर्स की, ताके क्यों कहूं वस्तर भूखन ।
जामा पटुका इजार, मांहें सिफत न आवे सुकन ॥५१॥

१. चौड़ाईयां । २. सद्भाव, भलाई, नेकी ।

केहे केहे मुख एता कहे, नूरै के वस्तर ।
मैं केहेती हों बुध माफक, ज्यादा जुबां चले क्यों कर ॥५२॥

सोभा सलूकी मुख की, और सलूकी भूखन ।
और सलूकी वस्तर की, ए जानें अरवा अर्स के तन ॥५३॥

रंग वस्तरों तो कहूं, जो दस बीस रंग होए ।
इन सुपन जिमी जो वस्तर, तामें कई रंग देखत सोए ॥५४॥

तो अर्स वस्तर क्यों रंग गिनों, और करके दिल अटकल ।
बेसुमार ल्याऊं सुमार में, यों मने करत अकल ॥५५॥

है बड़ी लड़ाई इन बात में, जब सहूर करत अर्स दिल ।
रूह तो मेरी इत है नहीं, हुकम केहेवत ऊपर मजल ॥५६॥

जामा अंग को लग रह्या, हार दुगदुगी हैड़े पर ।
ऊपर अति झीनी झलकत, जुड़ बैठी चादर ॥५७॥

जामें ऊपर जो भूखन, जो कण्ठ पेहेरे हैं हार ।
सो कई नंग जंग करत हैं, अवकास न माए झलकार ॥५८॥

याही जिनस बाजू बंध, और फुंदन लटकत ।
ए सबे हैं एक रस, पर रंग कई विध जंग करत ॥५९॥

हस्त कमल काड़ों कड़े, मांहें कई रंग कई बल ।
सो रूह लेवे विचार के, आगूं चले न जुबां अकल ॥६०॥

याही विध हैं पोहोंचियां, तिनमें कई रंग नंग कंचन ।
रंग गिनती केहेते सकुचों, जानों क्यों कहूं सुमार सुकन ॥६१॥

किन विध कहूं हथेलियां, अति उज्जल रंग लाल ।
केहेते लीकां दिल लरजत[1], ए अंग नूरजमाल ॥६२॥

अंगुरियां हस्त कमल की, याको दिया न निमूना जाए ।
वचन कहूं विचार के, तो भी रूह पीछे जाए पछताए ॥६३॥

१. कांपत ।

हर एक अंगुरी मुंदरी, हर मुंदरिएँ कई रंग ।
सो जोत भरत आकास को, कहूं किन विध कई तरंग ॥६४॥

जो जोत नख अंगुरी, जुबां आगे चल न सकत ।
फेर फेर वचन एही कहूं, अंबर जोत भरत ॥६५॥

याही विध नख चरनों के, नख जोत एही सब्द ।
एही खूबी फेर फेर कहूं, क्या करों छूटे न जुबां हद ॥६६॥

कोमलता चरन अंगुरी, और चरन तली कोमल ।
ए दिल रोसन देख के, हाए हाए खाक न होत जल बल ॥६७॥

चारों भूखन चरन के, मांहें रंग जोत अपार ।
दिल न लगे बिना गिनती, जानों क्यों ल्याऊं मांहें सुमार ॥६८॥

सुमार कहे भी ना बने, दिल में न आवे बिना सुमार ।
ताथें मुस्किल दोऊ पड़ी, पड़्या दिल मांहें विचार ॥६९॥

चरन हक सूरत के, तिन अंगों के भूखन ।
रूह लेसी सोभा विचार के, जाके होसी अर्स में तन ॥७०॥

याही वास्ते कहे सागर, सोभा न आवे मांहें सुमार ।
सागर सोभा भी ना लगे, सब्द में न आवे सोभा अपार ॥७१॥

जो सोभा कही हक की, ऐसी हादी की जान ।
हकें मासूक कह्या अपना, सो जाहेर लिख्या मांहें फुरमान ॥७२॥

और सोभा जुगल किसोर की, रूह अल्ला ने कही इत ।
उसी इलम से मैं केहेत हों, जो कहावत हुकम सिफत ॥७३॥

गौर गाल सुन्दर हरवटी, फेर फेर देखों मुख लाल ।
अर्स कर दिल मोमिन, मांहें बैठे नूरजमाल ॥७४॥

क्यों कहूं सागर चातुरी, कई सुख अलेखे उतपन ।
कई पैदा होत एक सागरें, नए नए सुख नौतन ॥७५॥

हक मुख सब विध सागर, सुख अलेखे अपार ।
ए सुख जानें निसबती, जिन निस दिन एही विचार ॥७६॥

सब सागर सुख मई, सब सुख पूरन परमान ।
अति सोभित मुख सुन्दर, ए जो वाहेदत का सुभान ॥७७॥

अंग देखे जेते सूरत के, सो तो सारे इस्क सागर ।
गुन हक बाहेर देखावत, इन बातों मोमिन कादर ॥७८॥

इस्क देखावें चढ़ता, सब कलाओं सुखदाए ।
घट बढ़ अर्स में है नहीं, पर इस्कें देत देखाए ॥७९॥

केहेना सुनना देखना, अर्स चीज न इस्क बिन ।
जो कछू सुख अखंड, सो सब इस्क पूरन ॥८०॥

जो कोई अर्स जिमीय में, पसु या जानवर ।
सो सरूप सारे इस्क के, एक जरा ना इस्क बिगर ॥८१॥

दुनी पंखी बिछोहा न सहे, वह आगे ही उड़े अरवा ।
गिरत है आकास से, होत है पुरजा पुरजा ॥८२॥

ए पंखी प्रीत दुनीय की, होसी अर्स के कैसे जानवर ।
ए निमूना इत ना बने, और बताइए क्यों कर ॥८३॥

पूर[1] असल जिमी बराबर, और उज्जल जोत प्रकास ।
कहूं कम ज्यादा न देखिए, और जोत भर्‌यो अवकास[2] ॥८४॥

पसु पंखी सब में पूरन, दिल चाह्या पूरन बन ।
इन जिमी पसु पंखियों, जिकर करे रोसन ॥८५॥

और आसिक वाहेदत के, इनहूं बड़ी पेहेचान ।
एही खूब खेलौनें हक के, मुख मीठी सुनावें बान ॥८६॥

खूबी खुसाली पूरन, सुन्दर सोभा चित्रामन ।
नैन श्रवन या चोंच मुख, गान करें निस दिन ॥८७॥

१. पूरी (अर्स जिमी की शोभा एक समान है) । २. आकास ।

इस्क इनों के क्यों कहूं, जो हक के पिलायल ।
कोई केहे न सके इनों बड़ाई, ए अर्स जिमी असल ॥८८॥

सब गुन इनों में पूरन, नरम खूबी खुसबोए ।
मुख बानी जोत चित्रामन, ए हकें रिझावें सोए ॥८९॥

हाल चाल सब इस्क की, खान पान सब साज ।
सोभा सिनगार सब इस्क के, अर्स इस्क को राज[1] ॥९०॥

सोभा क्यों कहूं हक सूरत की, जा को नामै नूरजमाल ।
ए दिल आए इस्क आवत, याको सहूरैं बदलें हाल ॥९१॥

हक सूरत अति सोहनी, अति सुन्दर सोभा कमाल ।
बैठे हक इस्क छाया मिने, दूजे इस्क लगे दिल झाल[2] ॥९२॥

और कछुए दिल है नहीं, बिना हक वाहेदत ।
और जरा कित कहूं नहीं, वाहेदत इस्क निसबत ॥९३॥

जित रहे आग इस्क की, तित देह सुपन रहे क्यों कर ।
बिना मोमिन दुनी न छूटहीं, दुनी ज्यों बिन जलचर ॥९४॥

ब्रह्मसृष्ट घर इस्क में, और दुनियां घर कुफर ।
मोमिन जलें न आग इस्कें, दुनी जाए जल बर ॥९५॥

आग इस्कें जलें ना मोमिन, आसिकों इस्क घर ।
इनों लगे जुदागी आग ज्यों, रूहें भागें देख कुफर ॥९६॥

रूहें आइयां अर्स अजीम से, दई नुकते इलमें जगाए ।
और उमेदां सब छोड़ाए के, हकें आपमें लैयां लगाए ॥९७॥

वस्तर भूखन सब इस्क के, इस्क सेज्या सिनगार ।
इस्क हक खिलवत, रूहें हादी हक भरतार ॥९८॥

जुगल सरूप जब बैठत, इस्क जानें दिल की सब ।
इस्क बोल काढ़ें जिन हेत को, उत्तर पावे दूजा दिल तब ॥९९॥

१. राज्य । २. आग की ज्वाला ।

जुगल सरूप इत बैठत, दोऊ दिल की पावें मोमिन ।
एक वचन मुख बोलते, पावें पड़उत्तर आधे सुकन ॥१००॥

इस्क बोले सुनें इस्क, सब इस्कै की बिसात ।
जो गुझ दिल मासूक की, सो आसिक से जानी जात ॥१०१॥

मोमिन आसिक हक के, सो हक की जानें दें खबर ।
हकें तो किया अर्स अपना, जो थे मोमिन दिल इन पर ॥१०२॥

आसिक मासूक दो अंग, दोऊ इस्कें होत एक ।
तो आसिक मासूक के दिल को, क्यों ना कहे गुझ विवेक ॥१०३॥

तो मोमिनों दिल अपना, जीवते अर्स केहेलाया ।
जो इस्क मासूक के दिल का, ऊपर सरूपै देखें पाया ॥१०४॥

जो कछुए चीज अर्स में, सो सूरत सब इस्क ।
सो लाड़ लज्जत सुख लेत हैं, सब रूहें हादी हक ॥१०५॥

इस्क सुख अर्स बिना, कहूं पैदा दुनी में नाहें ।
तो हकें नाम धराया आसिक, जो इस्क आप के मांहें ॥१०६॥

या तो इस्क हादी मिने, जा को हकें कह्या मासूक ।
हक का सुकन सुन आसिक, हाए हाए होत नहीं टूक टूक ॥१०७॥

सुकजीएँ भी यों कह्या, प्रेम चौदे भवन में नाहें ।
ब्रह्मसृष्ट ब्रह्म निसबती, प्रेम जो है तिन मांहें ॥१०८॥

और इस्क माहें रूहन, हकें अर्स कह्यो जा को दिल ।
हकें दिल दे रूहों दिल लिया, यों एक हुए हिल मिल ॥१०९॥

ना तो हक आदमी के दिल को, अर्स कहें क्यों कर ।
पर ए आसिक मासूक की वाहेदत, बिना आसिक न कोई कादर ॥११०॥

ए जाहेर लिख्या फुरमान में, रूहें उतरी लाहूत से ।
अहेल अल्ला तो कहे, जो इस्क है इनों में ॥१११॥

इस्क है वाहेदत में, कहूं पाइए न दूजे ठौर ।
दूजे ठौर तो पाइए, जो होवे कोई और ॥११२॥

इस्क निसानी हक की, सो पाइए सांच के मांहें ।
सांच अर्स आगूं वाहेदत के, ए झूठ जरा भी नाहें ॥११३॥

ए झूठा फरेब कछुए नहीं, जामें आए अहमद मोमिन ।
एह निसानी इस्क की, जाके असल अर्स में तन ॥११४॥

इस्क नाम अर्स से, खेल में ल्याए महंमद ।
ए क्या जानें नसल आदम, जो खाकीबुत[१] सब रद ॥११५॥

ए जाने अरवाहें अर्स की, जिनकी इस्क बिलात[२] ।
ए क्या जाने पैदा कुंन की, हक आसिक मासूक की बात ॥११६॥

अर्स इस्क हक हादी रूहें, याकी दुनी न जाने कोए ।
इस्क अर्स सो जानहीं, जो कायम वतनी होए ॥११७॥

दुनियां चौदे तबकों, किन निरने करी न सूरत हक ।
तिन हक के दिल में पैठ के, करूं जाहेर हक इस्क ॥११८॥

तो अर्स हुआ दिल मोमिन, जो जाहेर किया गुझ ए ।
हक हादी गुझ मोमिन, कोई और न कादर इनके ॥११९॥

तो पाया खिताब अर्स का, ना तो दिल आदमी अर्स क्यों होए ।
ए हक हादी मोमिन बातून, और बूझे जो होवे कोए ॥१२०॥

मुखारबिंद मेहेबूब का, सुख देत हक सूरत ।
जुगल किसोर सोभा लिए, दोऊ बैठे एक तखत ॥१२१॥

दोऊ सरूप अति उज्जल, कई जोत खूबियों में खूब ।
इस्क कला सब पूरन, रस इस्क भरे मेहेबूब ॥१२२॥

नैन श्रवन मुख नासिका, चारों अंग गेहेरे गंभीर ।
अर्स आकास सिंध[३] तेज का, ताए चारों नेहेरें चलियां चीर ॥१२३॥

१. मिट्टी का पुतला, मनुष्य । २. अधिक मात्रा । ३. समुद्र ।

एक मुख के सुख में कई सुख, और कई सुख मांहें नैन ।
सुख केते कहूं नैन अंग के, मुख गिनती न आवे बैन ॥१२४॥

श्रवन अन्दर सुख क्यों कहूं, जो सुख सागर आराम ।
क्यों निकसे रूह इन से, ए अंग सुख स्यामा स्याम ॥१२५॥

अंग रूह अर्स की नासिका, ए बल जानत रूह को कोए ।
चौदे तबक सुन्य फोड़ के, इत लेत अर्स खुसबोए ॥१२६॥

ऐसा बल रूह अर्स के, तो बल हक होसी किन विध ।
ए बेवरा जानें पाक मोमिन, जिन हक अर्स दिल सुध ॥१२७॥

सुख कहूं मीठी जुबान के, के सुख कहूं लाल अधुर ।
के सुख कहूं रस भरे वचन, जो बोलत मांहें मधुर ॥१२८॥

दोऊ माहों माहें जब बोलहीं, तब मीठे कैसे लगत ।
कोई रूह जानें अर्स की, जित हक हुकम जाग्रत ॥१२९॥

जानों के जोबन चढ़ता, ऐसे नित देखत नौतन ।
गुन पख अंग इंद्रियां, बढ़ता नूर रोसन ॥१३०॥

जानों के पल पल चढ़ता, तेज जोत रस रंग ।
पूरन सरूप एही देखहीं, इस्क सूरत के संग ॥१३१॥

बन्ध बन्ध सब इस्क के, और इस्कै अंगों अंग ।
गुन पख सब इस्क के, सोई इस्क बोलें रस रंग ॥१३२॥

सब इंद्रियां इस्क की, इस्क तत्व रस धात ।
पिंड प्रकृत सब इस्क के, इस्क भीगे अंग गात ॥१३३॥

बात विचार सब इस्क के, इस्कै गान इलम ।
अंग क्यों कहूं इन जिमिएं, एता भी केहेत हुकम ॥१३४॥

सब चीजें इत इस्क की, इस्कै अर्स बिसात ।
रूहें हादी अंग इस्क के, इस्क सूरत हक जात ॥१३५॥

सेहेज सुभाव सब इस्क के, इस्कै की वाहेदत ।
हक सरूप सब इस्क के, इस्कै की खिलवत ॥१३६॥

मोहोल मन्दिर सब इस्क के, ऊपर तले इस्क ।
दसों दिस सब इस्क, इस्क उठक या बैठक ॥१३७॥

यों अर्स सारा इस्क का, और इस्क रूहों निसबत ।
इस्क बिना जरा नहीं, सब हक इस्क न्यामत ॥१३८॥

नेक कही हक इस्क की, पर इस्क बड़ा विस्तार ।
इनको बरनन न होवहीं, न आवे मांहें सुमार ॥१३९॥

सुनो मोमिनों इस्क की, नेक और भी देऊं खबर ।
अर्स आसिक मासूक की, ज्यों औरों भी आवे नजर ॥१४०॥

रब्द हुआ इस्क का, हक हादी की खिलवत मांहें ।
इत कम ज्यादा है नहीं, अर्स इस्क बेवरा नाहें ॥१४१॥

ए बेवरा तित होवहीं, जित बिछोहा होए ।
सो तो वाहेदत में है नहीं, होए बिछोहा मांहें दोए ॥१४२॥

हकें चाह्या करों बेवरा, देखाऊं रूहों को ।
इस्क न पाइए बिना जुदागी, सो क्यों होवे वाहेदत मों ॥१४३॥

ताथें दई नेक फरामोसी, रूहों को मांहें अर्स ।
हाँसी करने इस्क की, देखें कौन कम कौन सरस ॥१४४॥

ए झूठा खेल देखाइया, ए जो चौदे तबक ।
हम जानें आए खेल बीच में, जित तरफ न पाइए हक ॥१४५॥

इत इस्क कहां पाइए, आग पानी पत्थर पूजत ।
ए खेल देख्या एक निमख का, जानों हो गई कई मुद्दत ॥१४६॥

झूठ हम देख्या नहीं, झूठ रहे न हमारी नजर ।
पट आड़े खेल देखाइया, सो देने इस्क खबर ॥१४७॥

ऐसा खेल देखाइया, जानें हम आए मांहें इन ।
इस्क हम में जरा नहीं, सुध हक न आप वतन ॥१४८॥
इन इस्कें हमारे ऐसा किया, ए जो झूठे चौदे तबक ।
तिन सबों कायम किए, ऐसे हमारे इस्क ॥१४९॥
जलाए दिए सब इस्कें, हो गई सब अगिन ।
एक जरा कोई न बच्या, बीच आसमान धरन ॥१५०॥
हम जानें इस्क ना हम पे, हम पर हँससी नूरजमाल ।
हमारे इस्कें ब्रह्मांड का, किया जो ऐसा हाल ॥१५१॥
इस वास्ते खेल देखाइया, वास्ते बेवरे इस्क के ।
कोई आया न गया हम में, बैठे अर्स में देखें ए ॥१५२॥
कहे महामत हुकमें देखाइया, ऐसी कर हिकमत ।
हम देख्या इस्क बेवरा, बैठे बीच खिलवत ॥१५३॥

॥प्रकरण॥२०॥चौपाई॥१२१७॥

मुखकमल मुकट छबि-मंगला चरण

याद करो हक मोमिनों, खेल में अपना खसम ।
हकें कौल किया उतरते, अलस्तो-बे-रब-कुंम[1] ॥१॥
तब रूहों वले[2] कह्या, बीच हक खिलवत ।
मजकूर किया हकें तुम सों, वह जिन भूलो न्यामत ॥२॥
हुकमें ए कुंजी ल्याया इलम, हुकमें ले आया फुरमान ।
दई बड़ाई रूहों हुकमें, हुकमें दई भिस्त जहान ॥३॥
हुकमें हादी आइया, और हुकमें आए मोमिन ।
और फुरमान भेज्या इन पे, हकें कुंजी भेजी बैठ वतन ॥४॥
और भी हुकमें ए किया, लिया रूह अल्ला का भेस ।
पेहेचान दई सब अर्सों की, मांहें बैठे दे आवेस ॥५॥

१. क्या मैं नहीं हूं खावंद तुम्हारा । २. तहकीक तुम हमारे खावंद हो ।

इलम दिया सब अर्सों का, कहूं जरा न रही सक ।
हम हादी मोमिन सब मिल, करें जारी वास्ते इस्क ।।६।।

और जेती किताबें दुनी में, तिन सबों पोहोंची सरत ।
सो सब खोली किताबें हुकमें, केहे दई सबों कयामत ।।७।।

फिराए दिए सब फिरके, सब आए बीच हक दीन ।
भिस्त दई हम सबन को, ल्याए सब हक पर आकीन ।।८।।

बका तरफ कोई न जानत, ए जो चौदे तबक ।
सो रात मेट के दिन किया, पट खोल अर्स हक ।।९।।

ऐसा खेल इन भांत का, यामें गई ना कबूं किन सक ।
ताको साफ किए हम हुकमें, सब जले बीच इस्क ॥१०॥

हम मांगें इस्क वतनी, आई हम पे हक न्यामत ।
हमें ऐसा खेल देखाइया, इत बैठे देखें खिलवत ॥११॥

ऐसे किए हमें इलमें, कोई छिपी न रही हकीकत ।
जाहेर गुझ सब अर्सों की, ऐसी पाई हक मारफत ॥१२॥

हम झूठी जिमी बीच बैठ के, करें जाहेर हक सूरत ।
एही ख्वाब के बीच में, बताए दई वाहेदत[1] ॥१३॥

तो ए झूठी जिमी कायम हुई, ऐसी हक बरकत ।
जानें आगूं कह्या रसूल ने, देसी हम सबों भिस्त ॥१४॥

इलमें ऐसे बेसक किए, इत बैठे पाइए सुध ।
हम इत आए बिना, देखी खेल की सब विध ॥१५॥

हम तेहेकीक रूहें अर्स की, इन इलमें किए बेसक ।
ए देख्या खेल झूठा जान के, क्यों छोड़ें बरनन हक ॥१६॥

कह्या रसूलें फुरमान में, अर्स दिल मोमिन ।
हम और क्यों केहेलाइए, बिना अर्स हक वतन ॥१७॥

१. एकदिली ।

ताथें फेर फेर बरनन, करें हक बका सूरत ।
हुकम इलम यों केहेवहीं, कोई और न या बिन कित ॥१८॥

खिन में सिनगार बदलें, करें नए नए रूप अनेक ।
होत उतारे पेहेने बिना, ए क्यों कह्यो जाए विवेक ॥१९॥

हक सिनगार कीजे तो बरनन, जो घड़ी पल ठेहेराए ।
एक पाव पलमें, कई रूप रंग देखाए ॥२०॥

और भी हक सरूप की, इन विध है बरनन ।
रूह देखें नए नए सिनगार, जिन जैसी चितवन ॥२१॥

ताथें बरनन क्यों करूं, किन विध कहूं सिनगार ।
ए सोभा हक सूरत की, काहूं वार न पार सुमार ॥२२॥

झूठी जुबां के सब्दसों, और माएने लेना बका ।
जो सहूर कीजे हक इलमें, तो कछू पाइए गुझ छिपा ॥२३॥

इलम होवे हक का, और हुकम देवे सहूर ।
होए जाग्रत रूह वाहेदत, कछू तब पाइए नूर जहूर ॥२४॥

ए सुपन देह पांच तत्व की, वस्तर भूखन उपले ऐसे हैं ।
अर्स रूह सूरत को, मुहकक[1] पेहेनावा क्या कहे ॥२५॥

रूह सूरत नहीं तत्व की, जो वस्तर पेहेन उतारे ।
नूर को नूर जो नूर है, कौन तिनको सिनगारे ॥२६॥

पेहेले दृढ़ कर हक सूरत, ए अंग किन नूर के ।
हक जातके निसबती, बका मोमिन समझें ए ॥२७॥

नूर सोभा नूर जहूर, और न सोभा इत ।
देखो अर्स तन अकलें, ए सरूप वाहेदत ॥२८॥

नाजुकी इन सरूप की, और अति कोमलता ।
सो इन अंग जुबां क्या कहे, नूरजमाल सूरत बका ॥२९॥

१. जानकर ।

जैसी सरूप की नाजुकी, तैसी सोभा सलूक ।
चकलाई चारों तरफों, दिल देख न होए टूक टूक ॥३०॥

आसिक अपने सौक को, विध विध सुख चहे ।
सोई विध विध रूप सरूप के, नई नई लज्जत लहे ॥३१॥

दिल रूहें बारे हजार को, रूप नए नए चाहे दम दम ।
दें चाह्या सरूप सबन को, इन विध कादर खसम ॥३२॥

रूहें दिल सब एकै, नए नए इस्क तरंग ।
पिएं प्याले फेर फेर, मांहों मांहें करें प्रेम जंग ॥३३॥

ए बारीक बातें अर्स की, बिन मोमिन न जाने कोए ।
मोमिन भी सो जानहीं, जा को आई फजर खुसबोए ॥३४॥

जो कछू बीच अर्स के, पसु पंखी नंग बन ।
सोभा बानी कोमल, खुसबोए रंग रोसन ॥३५॥

मैं नरमाई एक फूल की, जोड़ देखी रूह देह संग ।
क्यों जुड़े जिमी सोहोबती, सोहोबत जात हक अंग ॥३६॥

क्यों कर आवे बराबरी, खावंद और खेलौने ।
ए मुहकक[1] क्या विचारहीं, जाहेर तफावत इनमें ॥३७॥

ए चीजें कही सब अर्स की, लीजे मांहें सहूर कर ।
ए खेलोने रूहन के, नहीं खावंद बराबर ॥३८॥

अर्स चीज भी लीजे सहूर में, जिन अर्स खावंद हक ।
इन अर्स की एक कंकरी, उड़ावे चौदे तबक ॥३९॥

इत बैठ झूठी जिमी में, झूठी अकल झूठी जुबान ।
अर्स चीज मुकरर क्यों होवहीं, जो कायम अर्स सुभान ॥४०॥

अर्स चीज न आवे इन अकलें, तो क्यों आवे रूह मूरत ।
जो ए भी न आवे सहूर में, तो क्यों आवे हक सूरत ॥४१॥

१. जानकर प्रमाण से कहने वाला ।

एक रूहें और खेलौने, देख इत भी तफावत ।
सूरत हक हादी रूहें, देख जो कहावें वाहेदत ॥४२॥

बका चीज जो कायम, तिन जरा न कबूं नुकसान ।
जेती चीज इन दुनी की, सो सब फना निदान ॥४३॥

जेती चीज अर्स में, न होए पुरानी कब ।
नुकसान जरा न होवहीं, ए लीजे सहूर में सब ॥४४॥

तो हक अर्स है कह्या, ए चौदे तबक जरा नाहें ।
जो नाहीं सो है को क्या कहे, ताथें आवत न सब्द मांहें ॥४५॥

जेती चीजें अर्स की, जोत इस्क मीठी बान ।
खूबी खुसबोए हक चाहेल, तहां नजीक ना नुकसान ॥४६॥

नूर और नूरतजल्ला, कहे महंमद दो मकान ।
दोए सूरतें जुदी कही, ताकी रूहअल्ला दई पेहेचान ॥४७॥

नाजुक नरम तेज जोत में, सलूकी सोभा मीठी जुबान ।
सुन्दर सरूप खुसबोए सों, पूरन प्रेम सुभान ॥४८॥

सोई सरूप है नूर का, सोई सूरत हादी जान ।
रूहें सूरत वाहेदत में, ए पूरन इस्क परवान ॥४९॥

हक सूरत अति सोहनी, दोऊ जुगल किसोर ।
गौर मुख अति सुन्दर, ललित कोमल अति जोर ॥५०॥

और रूहों की सूरतें, जो असल अर्स में तन ।
सो सहूर कीजे हक इलमें, देखो अपना तन मोमिन ॥५१॥

खूबी खुसाली न आवे सब्द में, ना रंग रस बुध बान ।
कोई न आवे सोभा सब्द में, मुख अर्स खावंद मेहेरबान ॥५२॥

जैसी है हक सूरत, और तिन वस्तर भूखन ।
जो सोभा देत इन सूरतें, सो क्यों कहे जांए जुबां इन ॥५३॥

दिल में जानों दे निमूना, समझाऊं रूहों को ।
खूबी दुनी की देख के, लगाए देखों अर्स सों ॥५४॥

हक अंग कैसे बरनवूं, इन झूठी जुबां के बल ।
बका अंग क्यों कर कहूं, यों फेर फेर कहे अकल ॥५५॥

रूप रंग इत क्यों कहिए, ले मसाला इत का ।
ए सुकन सारे फना मिने, हक अंग अर्स बका ॥५६॥

रूप रंग गौर लालक, कहूं नूर जोत रोसन ।
ए सब्द सारे ब्रह्मांड के, अर्स जरा उड़ावे सबन ॥५७॥

गौर हक अंग केहेत हों, ए गौर रंग लाहूत ।
और कहूं सोभा सलूकी, ए छबि है अदभूत ॥५८॥

चकलाई हक अंगों की, रूप जाने अरवा अर्स ।
रूह जागी जाने खेल में, जो हुई होए अरस परस ॥५९॥

जो रूह जगाए देखिए, तो ठौर नहीं बोलन ।
जो चुप कर रहिए, तो क्या लें आहार मोमिन ॥६०॥

मैं देख्या दिल विचार के, सुनियो तुम मोमिन ।
देऊं निमूना दुनी अर्स का, तुम देखियो दिल रोसन ॥६१॥

कही कोमलता कमलन की, और जोत जवेरन ।
रंग सुरंग जानवरों, कई स्वर मीठी जुबां इन ॥६२॥

कई खुसबोई मांहें पंखियों, कई खुसबोए मांहें फूलन ।
कई सोभा पसु पंखियों, कई नरमाई परन ॥६३॥

फूल कमल कई पसम, कैसी कोमल दुनी इन ।
फूल अत्तर चोवा[१] मुस्क[२], और जोत हीरा जवेरन ॥६४॥

देखो प्रीत पसुअन की, और देखो प्रीत पंखियन ।
एक चलें दूजा ना रहे, जीव जात मांहें खिन ॥६५॥

१. सुगंधित तेल । २. कस्तूरी, मृगदल ।

छोटे बड़े जीव कई रंग के, जानों के देह कुंदन ।
कई नकस कई बूटियां, कई कांगरी चित्रामन ॥६६॥

इन भांत केती कहूं, कई खूबी बिना हिसाब ।
ले खुलासा इन का, छोड़ दीजे झूठा ख्वाब ॥६७॥

देख दुनी देख अर्स को, कई रंगों सोभें जानवर ।
सुख सनेह खूबी खुसाली, कई मुख बोलत मीठे स्वर ॥६८॥

जीव जल थल या जानवरों, कई केसों परन ।
रंग खूबी देख विचार के, ले अर्स मसाला इन ॥६९॥

इन विध मैं केती कहूं, रंग खूबी खुसबोए ।
परों फूलों चित्रामन, कही प्रीत इनों की सोए ॥७०॥

इन विध देखो निमूना, ए झूठी जिमी का विचार ।
तो कौन विध होसी अर्स में, जो सोभा वार न पार सुमार ॥७१॥

एक देखी विध संसार की, और विध कही अर्स ।
सांच आगे झूठ कछू नहीं, कर देखो दिल दुरूस्त ॥७२॥

सांच भोम की कंकरी, उड़ावे जिमी आसमान ।
कैसी होसी अर्स खूबियां, जो खेलौंने अर्स सुभान ॥७३॥

सो खूब खेलौंने देखिए, इनों निमूना कोई नाहें ।
सिफत इनों ना केहे सकों, मेरी इन जुबाएँ ॥७४॥

कई जुगतें खूबियां, कई जुगतें सनकूल ।
कई जुगतें सलूकियां, कई जुगतें रस फूल ॥७५॥

कई जुगतें चित्रामन, ऊपर पर केसन ।
कई मुख मीठी बानियां, स्वर जिकर करें रोसन ॥७६॥

जेती खूबियां अर्स की, सब देखिए जमाकर[१] ।
लीजे सब पेहेचान के, अन्दर दिल में धर ॥७७॥

१. मिलाकर (एकजूथ कर) ।

रंग रस नूर रोसनी, सोभा सुन्दर खूबी खुसबोए ।
तेज जोत कोमल, देख नरम नाजुकी सोए ॥७८॥

दिल अर्स खुलासा लेय के, और देख अर्स रूह अंग ।
रूहों सरभर कोई आवे नहीं, खूबी रूप सलूकी रंग ॥७९॥

खेल खावंद कैसी सरभर[१], जो रूहें अंग हादी नूर ।
हादी नूर हक जातका, मोमिन देखें अर्स सहूर ॥८०॥

सिफत ऐसी कही मोमिनों, जाके अक्स[२] का दिल अर्स ।
हक सुपने में भी संग कहें, रूहें इन विध अरस-परस ॥८१॥

ए जो मोमिन अक्स कहे, जानों आए दुनियां मांहें ।
हक अर्स कर बैठे दिल को, जुदे इत भी छोड़े नाहें ॥८२॥

अक्स के जो असल, ताए खेलावत सूरत ।
सो हिंमत अपनी क्यों छोड़हीं, जामें अर्स की बरकत ॥८३॥

दुनी नाम सुनत नरक छूटत, इनों पे तो असल नाम ।
दिल भी हकें अर्स कह्या, याकी साहेदी अल्ला कलाम ॥८४॥

इलम भी हकें दिया, इनमें जरा न सक ।
सो क्यों न करें फैल वतनी, करें कायम चौदे तबक ॥८५॥

प्रतिबिंब के जो असल, तिनों हक बैठे खेलावत ।
तहां क्यों न होए हक नजर, जो खेल रूहों देखावत ॥८६॥

आड़ा पट भी हकें दिया, पेहेले ऐसा खेल सहूर में ले ।
जो खेल आया हक सहूर में, तो क्यों न होए कायम ए ॥८७॥

हुए इन खेल के खावंद, प्रतिबिंब मोमिनों नाम ।
सो क्यों न लें इस्क अपना, जिन अरवा हुज्जत स्यामा स्याम ॥८८॥

बड़ी बड़ाई इनकी, जिन इस्कें चौदे तबक ।
करम जलाए पाक किए, तिन सबों पोहोंचाए हक ॥८९॥

१. बराबर । २. प्रतिबिंब ।

इनों धोखा कैसा अर्स का, जिन सूरतें खेलावें असल ।
खेलाए के खैंचें आपमें, तब असलै में नकल ॥९०॥

नकलें असलें जुदागी, एक जरा है आड़ा पट ।
कह्या सेहेरग से नजीक, तिन निपट है निकट ॥९१॥

इन सुपन देह माफक, हकें दिल में किया प्रवेस ।
ए हुकम जैसा कहावत, तैसा बोले हमारा भेस ॥९२॥

अर्स तन का दिल जो, सो दिल देखत है हम को ।
प्रतिबिंब हमारे तो कहे, जो दिल हमारे उन दिल मों ॥९३॥

ऐसा खेल किया हुकमें, हमारी उमेदां पूरन ।
हम सुख लिए अर्स के, दुनी में आए बिन ॥९४॥

ना तो ऐसा बरनन क्यों करें, ए जो वाहेदत नूरजमाल ।
ना कोई इनका निमूना, ना कोई इन मिसाल ॥९५॥

अर्स भोम की एक कंकरी, तिन आगे ए कछुए नाहें ।
तो क्यों दीजे बका सुभान को, सिफत इन जुबांएँ ॥९६॥

अर्स जिमी सब वाहेदत, दूजा रहे ना इनों नजर ।
ज्यों रात होए काली अंधेरी, त्यों मिटाए देवे फजर ॥९७॥

है हमेसा एक वाहेदत, एक बिना जरा न और ।
अंधेर निमूना न लगत, अंधेर राखत है ठौर ॥९८॥

ए चौदे तबक कछुए नहीं, वेदों कह्या आकास फूल ।
झूठा देखाई देत है, याको अंकूर ना मूल ॥९९॥

इत वाहेदत कबूं न जाहेर, झूठे हक को जानें क्यों कर ।
सुध वाहेदत क्यों ले सकें, जो उड़ें देखें नजर ॥१००॥

असल बात वाहेदत की, अर्स अरवाहें जानें मोमिन ।
इत हक सुध मोमिनों, जाके असल अर्स में तन ॥१०१॥

अब तुम सुनियो मोमिनों, अर्स बिने तुमारी बात ।
वाहेदत तो कहे मोमिन, जो रूहें असल हक जात ॥१०२॥

और एक मता रूहन का, देखो अर्स वाहेदत ।
लीजो मोमिन दिल में, ए हक अर्स न्यामत ॥१०३॥

नैन एक रूह के, जो सुख लेवें परवरदिगार ।
तिन सुख से सुख पोहोंचहीं, दिल रूहों बारे हजार ॥१०४॥

एक रूह बात करे हक सों, सुख लेवे रस रसनाएं ।
सो सुख रूहों आवत, दिल बारे हजार के मांहें ॥१०५॥

हक बोलावें रूह एक को, सो सुख पावे अतंत ।
सो बात सुन रूह हक की, सब रूहें सुख पावत ॥१०६॥

रूह सुख हर एक बात का, हकसों अर्स में लेवत ।
सो सुख सुन रूहें सबे, दिल अपने देवत ॥१०७॥

तो हकें कह्या अर्स अपना, मोमिनों का जो दिल ।
तो सब ल्याए वाहेदत में, जो यों सुख लेत हिलमिल ॥१०८॥

इन विध सुख केते कहूं, अर्स अरवा मोमिन ।
तो आए वाहेदत में, जो हक कदम तले इनों तन ॥१०९॥

हकें अर्स कह्या दिल मोमिन, और भेज दिया इलम ।
क्यों आवें अर्स दिल झूठ में, इत है हक का हुकम ॥११०॥

ताथें बरनन इन दिल, अर्स हक का होए ।
इस्क हक के से जल जाए, और जरा न रेहेवे कोए ॥१११॥

इन दिल को अर्स तो कह्या, जो खोल दिए बका द्वार ।
ताथें फेर फेर बरनवूं, हक वाहेदत का सिनगार ॥११२॥

किसोर सूरत हादी हक की, सुन्दर सोभा पूरन ।
मुख कमल कहूं मुकट की, पीछे सब अंग वस्तर भूखन ॥११३॥

नख सिख लों बरनन करूं, याद कर अपना तन ।
खोल नैन खिलवत में, बैठ तले चरन ॥११४॥
जैसा केहेत हों हक को, यों ही हादी जान ।
आसिक मासूक दोऊ एक हैं, ए कर दई मसिएँ पेहेचान ॥११५॥
जुगल किसोर तो कहे, जो आसिक मासूक एक अंग ।
हक खिन में कई रूप बदलें, याही विध हादी रंग ॥११६॥
हमारे फुरमान में, हकें केते लिखे कलाम ।
मासूक मेरा महंमद, आसिक मेरा नाम ॥११७॥

मंगला चरण सम्पूर्ण

केस तिलक निलाट पर, दोऊ रेखा चली लग कान ।
केस न कोई घट बढ़, सोभा चाहिए जैसी सुभान ॥११८॥
एक स्याम नूर केसन की, चली रोसन बांध किनार ।
दूजी गौर निलाट संग, करे जंग जोत अपार ॥११९॥
सोभा चली आई लवने लग, पीछे आई कान पर होए ।
आए मिली दोऊ तरफ की, सोभा केहेवे न समर्थ कोए ॥१२०॥
याही भांत भौंह नेत्र संग, करत जंग दोऊ जोर ।
स्याह उज्जल सरभर दोऊ, चली चढ़ि टेढ़ी अनी मरोर ॥१२१॥
दोऊ अनियां भौंह केसन की, निलाट तले नैन पर ।
रेखा बांध चली दोऊ किनारी, आए अनियां मिली बराबर ॥१२२॥
दोऊ नेत्र किनारी सोभित, घट बढ़ कोई न केस ।
उज्जल स्याह दोऊ लरत हैं, कोई दे ना किसी को रेस ॥१२३॥
तिलक निलाट न किन किया, असल बन्यो रोसन ।
कई रंग खूबी खिन में, सोभा गिनती होए न किन ॥१२४॥
देह इन्द्री फरेब की, देखत इल्लत[1] फना ।
सो क्यों कहे बका सुभान मुख, इन अंग की जो रसना ॥१२५॥

१. बीमारी, झंझट ।

नासिका हक सूरत की, ए जो स्वांस देत खुसबोए ।
ब्रह्मांड फोड़ इत आवत, इत रूह बास लेत सोए ॥१२६॥

बिन मोमिन कोई ना ले सके, हक नासिका गुन ।
कह्या अर्स हक वतन, सो किया दिल जिन ॥१२७॥

हक सूरत की बारीकियां, ए जानें अर्स अरवाए ।
हक सूरत तो जान हीं, जो कोई और होए इप्तदाए[1] ॥१२८॥

तीन खूंनें तले नासिका, खूंना चढ़ता चौथा ऊपर ।
ए खूबी जानें रूह अर्स की, ए जो अनी आई नमती उतर ॥१२९॥

दोऊ छेद्रों के गिरदवाए, यों पांखड़ी फूल कटाव ।
बीच अनी आई जो नासिका, ए मोमिन जानें मुख भाव ॥१३०॥

इन अनिएँ और अनी मिली, तिन उतर अनी हुई दोए ।
किनार तले दो छेद्र के, सोभा लेत अति सोए ॥१३१॥

दोऊ छेद्र तले अधुर ऊपर, तिन बीच लांक खूंने तीन ।
सोई सोभा जाने इन अधुर की, जो होए हुकम आधीन ॥१३२॥

और तले जो अधुर, दोऊ जोड़ सोभित जो मुख ।
रेखा लाल दोऊ सोभित, रूह देख पावे अति सुख ॥१३३॥

तले अधुर के लांक जो, मुख बराबर अनी तिन ।
सेत बीच बिन्दा खुसरंग, ए मुख सोभा जानें मोमिन ॥१३४॥

इन तले गौर हरवटी, जानें मुख सदा हँसत ।
ए सोभा जाने अरवा अर्स की, जिन दिल में हक बसत ॥१३५॥

ए रंग कहे मैं इन मुख, पर किन विध कहूं सलूक ।
ए करते मुख बरनन, दिल होत नहीं टूक टूक ॥१३६॥

फेर कहूं हरवटीय से, ज्यों सुध होए मुख कमल ।
हक मुख मोमिन निरखहीं, जिन दिल अर्स अकल ॥१३७॥

१. शुरुआत से ।

हरवटी गौर मुख मुतलक, खुसरंग बिन्दा ऊपर ।
बीच लांक तले अधुर, चार पांखड़ी हुई बराबर ॥१३८॥

गौर पांखड़ी दो लांक की, लाल पांखड़ी दो तिन पर ।
अधुर अधुर दोऊ जुड़ मिले, हुई लांक के सरभर ॥१३९॥

जोड़ बनी दोऊ अधुर की, निपट लाल सोभित ।
तिन ऊपर दो पांखड़ी, हरी नेक टेढ़ी भई इत ॥१४०॥

दन्त सलूकी रंग की, इन जुबां कही न जाए ।
मुख मुस्कत दन्त देखत, क्या केहे देऊं बताए ॥१४१॥

क्यों कहूं रंग रसना, मुख मीठा बोल बोलत ।
स्वाद लेत रस अर्स के, जुबां केहे ना सके सिफत ॥१४२॥

रस जानत सब अर्स के, रस बोलत रसना बैन ।
रूहें एक सब्द सुनें रस का, तो पावें कायम सुख चैन ॥१४३॥

नेक अधुर दोऊ खोलहीं, दन्त लाल उज्जल झलकत ।
अधुर लाल दो पांखड़ी, जानों के नित्य मुसकत ॥१४४॥

दन्त उज्जल ऐनक ज्यों, मांहें जुबां देखाई देत ।
देख दन्त की नाजुकी, अति सुख मोमिन लेत ॥१४५॥

कबूं दन्त रंग उज्जल, कबूं रंग लालक ।
दोऊ खूबी दन्तन में, मांहें रोसन ज्यों ऐनक ॥१४६॥

दोऊ बीच अधुर रेखा मुख, कटाव तीन तीन तरफ दोए ।
पांखें रंग सुरंग दोऊ उपली, चढ़ि टेढ़ी सोभा देत सोए ॥१४७॥

खुसरंग बीच सिंघोड़ा, तले दो अनी ऊपर एक ।
इन दोऊ पांखें खुसरंग, ए कटाव सोभा विसेक ॥१४८॥

तिन अनी पर दूजी अनी, सोभित सिंघोड़ा सुपेत ।
ऊपर पांखें दोऊ फिरवली, बीच छेद्र सोभा दोऊ देत ॥१४९॥

इन फूल ऊपर आई नासिका, सो आए बीच अनी सोभाए ।
तिन पर रेखा दोऊ तिलक की, रंग खिन में कई देखाए ॥१५०॥

दोऊ नेत्र टेढ़े कमल ज्यों, अनी सोभा दोऊ अतन्त ।
जब पांपण दोऊ खोलत, जानों कमल दो विकसत ॥१५१॥

नासिका के मूल सें, जानों कमल बने अदभूत ।
स्याम सेत झांईं लालक, सोभा क्यों कहूं अंग लाहूत ॥१५२॥

और कई रंग दोऊ कमल में, टेढ़े चढ़ते निपट कटाव ।
मेहेर भरे नूर बरसत, हक सींचत सदा सुभाव ॥१५३॥

गौर गलस्थल गिरदवाए, और बीच नासिका गौर ।
स्याह पांखड़ी कमल पर, सोभित टेढ़ियां नूर जहूर ॥१५४॥

अनी चार दोऊ कमल की, दो बंकी चढ़ती ऊपर ।
अति स्याह टेढ़ी पांखड़ी, कछू अधिक दोऊ बराबर ॥१५५॥

उज्जल निलाट तिन पर, आए मिली केस किनार ।
सोहे रेखा बीच तिलक, जुबां कहा कहे सोभा अपार ॥१५६॥

दोऊ तरफों रेखा हरवटी, आए मिली कानन ।
गौर कान सोभा क्यों कहूं, नहीं नेत्र जुबां मेरे इन ॥१५७॥

गौर गाल दोऊ निपट, मांहें झलकत मोती लाल ।
ए सोभा कान की क्यों कहूं, इन जुबां बिना मिसाल ॥१५८॥

केस रेखा कानों पीछे, बीच में अंग उज्जल ।
हक मुख सोभा क्यों कहिए, इन जुबां इन अकल ॥१५९॥

मुकट बन्यो सिर पाचको, रंग नंग तामें अनेक ।
जुदे जुदे दसों दिस देखत, रंग एक पे और विसेक ॥१६०॥

असल नंग पाच एक है, असल रंग तामें दस ।
दस दस रंग हर दिसें, सोभा क्यों कहूं जवेर अर्स ॥१६१॥

और मुकट सिर हक के, केहेनी सोभा तिन ।
सो न आवे सोभा सब्द में, मुकट क्यों कहूं जुबां इन ॥१६२॥

दस रंग कहे एक तरफ के, दूजी तरफ दस रंग ।
सो रंग रंग कई किरने उठें, किरन किरन कई तरंग ॥१६३॥

किन विध कहूं सलूकियां, हर दिस सलूकी अनेक ।
देख देख जो देखिए, जानों उनथें एह नेक ॥१६४॥

एक दोरी रंग नंग दस की, ऐसी मूल मुकट दोरी चार ।
गिरदवाए निलवट पर, सुख क्यों कहूं सोभा अपार ॥१६५॥

यामें एक दोरी अव्वल तले, कांगरी दस रंग ता पर ।
तिन दोरी पर बनी बेलड़ी, और कहूं सुनो दिल धर ॥१६६॥

इन पर भी दोरी बनी, ता पर बेल और जिनस ।
तिन पर दोरी और कांगरी, जानों उनथें एह सरस ॥१६७॥

चारों दोरी के रंग कहे, और दस रंग कांगरी दोए ।
और जिनस दो बेल की, रंग बोहोत ना गिनती होए ॥१६८॥

दस रंग कांगरी के कहूं, चार मनके ऊपर तीन ।
दो तीन पर एक दो पर, ए जानें दस रंग रूह प्रवीन ॥१६९॥

ए दस रंग के मनके दस, ऊपर एक रंग तले दोए ।
दोए रंग तले तीन हैं, तीन रंग तले चार सोए ॥१७०॥

इन विध चार दोरी भई, और दोए भई कांगरी ।
दोए बेली कई रंगों की, ए गिनती जाए न करी ॥१७१॥

ऊपर फिरते फूल कटाव कई, कई बूटियां नकस ।
तिन पर कही जो कांगरी, फिरती अति सरस ॥१७२॥

तिन ऊपर टोपी बनी, ऊपर चढ़ती अनी एक ।
तले कटाव कई रंग नंग, ए अनी फूल बन्यो विसेक ॥१७३॥

तीन खूंने तिन ऊपर, दो दोऊ तरफों बीच एक ।
दस दस नंग तिनों में, सो मोमिन कहें विवेक ॥१७४॥

मानीक मोती पांने नीलवी, गोमादिक पाच पुखराज ।
और हीरा नंग लसनियां, बीच मनि दसमी रही बिराज ॥१७५॥

ए दस रंग नंग तिनों में, फिरते बने तीन फूल ।
तले डांड़ियां रंग अनेक हैं, ए सोभा देख हूजे सनकूल ॥१७६॥

दसों दिसा जित देखिए, मन चाह्या रूप देखाए ।
बिना निमूने इन जुबां, किन बिध देऊं बताए ॥१७७॥

जिन रूह का दिल जिन विध का, सोई विध तिन भासत[1] ।
एक पलक में कई रंग, रूह जुदे जुदे देखत ॥१७८॥

एह मुकट इन भांत का, पल में करे कई रूप ।
जो रूह जैसा देख्या चाहे, सो तैसा ही देखे सरूप ॥१७९॥

मैं मुकट कहू बुध माफक, ए तो अर्स जवेर के नंग ।
नए नए कई भांत के, कई खिन में बदले रंग ॥१८०॥

और विध मुकट में, रूहें आवें सब मिल ।
सब रूप रंग देखे इनमें, जो चाहे जैसा दिल ॥१८१॥

याही भांत सब भूखन, याही भांत वस्तर ।
वस्तर भूखन सब एक रस, ज्यों कुन्दन में जड़तर ॥१८२॥

ए जड़े घड़े किन ने नहीं, ना पेहेर उतारत ।
दिल चाहे रंग खिन में, मन पर सोभा फिरत ॥१८३॥

जिन खिन रूह जैसा चाहत, सो तैसी सोभा देखत ।
बारे हजार देखें दिल चाहे, ए किन विध कहूं सिफत ॥१८४॥

मोती करन फूल कुंडल, कहूं केते नाम भूखन ।
पलमें अनेक बदलें, सुन्दर सरूप कानन ॥१८५॥

१. देखत ।

जवेर कहे मैं अर्स के, और जवेर तो जिमी से होत ।
सो हक बका के अंग को, कैसी देखावे जोत ॥१८६॥
और नई पैदास अर्स में नहीं, ना पुरानी कबूं होए ।
या रसांग या जवेर, जिन जानों अर्स में दोए ॥१८७॥
अर्स साहेबी बुजरक, तिनको नाहीं पार ।
ए नूर के एक पलथें, कई उपजे कोट संसार ॥१८८॥
सो नूर नूरजमाल के, नित आवें दीदार ।
तिन हक के वस्तर भूखन, ए मोमिन जानें विचार ॥१८९॥
जिन मोमिन की सिफायत, करी होए मेंहेंदी महंमद ।
सो जानें अर्स बारीकियां, और क्या जाने दुनी जो रद ॥१९०॥
पेहेनावा नूरजमाल का, वस्तर या भूखन ।
ज्यों नूर का जहूर, ए जानत अर्स मोमिन ॥१९१॥
ए कबूं न जाहेर दुनी में, अर्स बका हक जात ।
सो इन जुबां इत क्या कहूं, जो इन सरूप को सोभात ॥१९२॥
वस्तर भूखन हक के, ए केहेनी में ना आवत ।
सिनगार करें दिल चाह्या, जो सबों को भावत ॥१९३॥
तो ए क्यों आवे बानी में, कर देखो सहूर हक ।
ए अर्स तनों विचारिए, तुम लीजो बुध माफक ॥१९४॥
अर्स में भी रूहें लेत हैं, जैसी खाहिस जिन ।
रूह जैसा देख्या चाहे, तिन तैसा होत दरसन ॥१९५॥
वस्तर भूखन किन ना किए, हैं नूर हक अंग के ।
ए क्यों आवें इन केहेनी में, अंग सांई के सोभावें जे ॥१९६॥
अपार सूरत साहेब की, अपार साहेब के अंग ।
अपार वस्तर भूखन, जो रेहेत सदा अंगों संग ॥१९७॥

जो सोभा हक सूरत की, सो क्यों पुरानी होए ।
नई पुरानी तित कहावत, जित कहियत हैं दोए ॥१९८॥

इत कबूं न होए पुराना, ना पैदा कबूं नया ।
दीदार करें रूहें खिन में, खिन खिन दिल चाह्या ॥१९९॥

जामा पटुका और इजार, ए सबे हैं एक रस ।
कण्ठ हार सोभा जामें पर, जानों एक दूजे पे सरस ॥२००॥

कण्ठ तले हार दुगदुगी, कई विध विध के विवेक ।
कई रंग जंग जोतें करे, देखत अलेखे रस एक ॥२०१॥

जुड़ बैठी जामें पर चादर, सोभा याही के मान ।
ए नाम लेत जुदे जुदे, हक सोभा देख सुभान ॥२०२॥

बगलों कोतकी कटाव, और बंध बेल गिरवान ।
रंग जुदे जुदे झलकत, रस एकै सब परवान ॥२०३॥

बांहें बाजू बंध सोभित, रंग केते कहूं गिन ।
तेज जोत लरें आकास में, क्यों असल निरने होए तिन ॥२०४॥

क्यों कहूं सोभा फुंदन, लटकत हैं एक जुगत ।
आहार देत हैं आसिकों, देख देख न होए तृपित ॥२०५॥

या विध काड़ों पोहोंचियां, या विध कड़ों बल ।
कई ऊपर रंग जंग करें, तामें गिने न जाए असल ॥२०६॥

हस्त कमल अति कोमल, उज्जल हथेली लाल ।
केहेते लीकें सलूकियां, हाए हाए लगत न हैड़े भाल ॥२०७॥

पतली पांचों अंगुरियां, पांचों जुदी जुगत ।
जुदे जुदे रंग नंग मुंदरी, सोभा न पोहोंचे सिफत ॥२०८॥

निरमल अंगुरियों नख, ताकी जोत भरी आकास ।
सब्द न इन आगूं चले, क्यों कहूं अर्स प्रकास ॥२०९॥

अब चरन कमल चित्त देय के, बैठ बीच खिलवत ।
देख रूह नैन खोल के, ज्यों आवे अर्स लज्जत ॥२१०॥

इत बैठ निरख चरन को, देख चकलाई चित्त दे ।
नरम तली अति उज्जल, रूह तेरा सुख दायक ए ॥२११॥

जोत देख चरन नख की, जाए लगी आसमान ।
चीर चली सब जोत को, कोई ना इन के मान ॥२१२॥

तेज कोई ना सेहे सके, बिना अर्स रूह मोमिन ।
तेजें उड़े परदा अन्धेरी, ए सहे बका अर्स तन ॥२१३॥

अर्स तन की एह बैठक, ए जोतै के सींचेल ।
ए अरवा तन सब अर्स के, इनों नजरों रहे ना खेल ॥२१४॥

पांउं देख देख भूखन, कई विध सोभा करत ।
सो नए नए रूप अनेक रंगों, खिन खिन में कई फिरत ॥२१५॥

चारों जोड़े चरन तो कहूं, जो घड़ी साइत ठेहेराय ।
खिन में करें कोट रोसनी, सो क्यों आवे मांहें जुबांएँ ॥२१६॥

हरी इजार मांहें कई रंग, ऊपर जामा दावन सुपेत ।
कई रंग झांई देख के, अर्स रूहें सुख लेत ॥२१७॥

फुन्दन बन्ध अति सोभित, मांहें रंग अनेक झलकत ।
ए सेत हरे के बीच में, मांहें नरम झाबे खलकत ॥२१८॥

जामें दावन सेत झलकत, जोत उठत आकास ।
और जोत चढ़त करती जंग, पीत पटुके की प्रकास ॥२१९॥

हार सोभित हिरदे पर, बाजू बन्ध पोहोंची कड़े ।
सुन्दर सरूप सिर मुकट, दिल आसिकों देखत खड़े ॥२२०॥

चोली चादर हार झलकत, आकास रह्यो भराए ।
तो सोभा मुख मुकट की, किन बिध कही जाए ॥२२१॥

मीठी सूरत किसोर की, गौर लाल मुख अधुर ।
ए आसिक नीके निरखत, मुख बानी बोलत मधुर ॥२२॥

चारों चरन बराबर, सुभान और बड़ी रूह जी ।
गौर सब गुन पूरन, सुन्दर सोभा और सलूकी ॥२३॥

तेज जोत नूर भरे, लाल तली कोमल ।
लाल लांके लीकें क्यों कहूं, रूह निरखे नेत्र निरमल ॥२४॥

चारों तरफों चकलाई, फना अदभुत रूह खैंचत ।
एड़ियां अति अचरज, इत आसिक तले बसत ॥२५॥

चारों चरन अति नाजुक, जो देखूं सोई सरस ।
ए अंग नाहीं तत्व के, याकी जात रूह अर्स ॥२६॥

ए मेहेर करें चरन जिन पर, देत हिरदे पूरन सरूप ।
जुगल किसोर चित्त चुभत, सुख सुन्दर रूप अनूप ॥२७॥

जुगल किसोर अति सुन्दर, बैठे दोऊ तखत ।
चरन तले रूहों मिलावा, बीच बका खिलवत ॥२८॥

महामत कहे मेहेबूब की, जेती अर्स सूरत ।
सो सब बैठीं कदमों तले, अपनी ए निसबत ॥२९॥

॥प्रकरण॥२१॥ चौपाई॥१४४६॥

सिनगार कलस तिन सिनगार बरनन विरहा रस

क्यों बरनों हक सूरत, अब लों कही न किन ।
ए झूठी देह क्यों रहे, सुनते एह बरनन ॥१॥

बरनन आसिक कर ना सके, और कोई पोहोंचे न आसिक बिन ।
हक जाहेर क्यों होवहीं, देखतहीं उड़े तन ॥२॥

हक देखे वजूद ना रहे, ज्यों दारू[1] आग से उड़त ।
यों वाहेदत देखें दूसरा, पाव पल अंग न टिकत ॥३॥

१. बारुद ।

हक इस्क आग जोरावर, इनमें मोमिन बसत ।
आग असल जिनों वतनी, यामें आठों जाम अलमस्त ।।४।।

जो निस दिन रहे आग में, ताए आगै के सब तन ।
वाको जलाए कोई ना सके, उछरे आगै के वतन ।।५।।

आग जिमी पानी आग का, आग बीज आग अंकूर ।
फल फूल बिरिख आग का, आग मजकूर आग सहूर ।।६।।

बिरिख मोमिन आग इस्क, और आग इस्क अर्स ।
सब पीवें आग इस्क रस, दिल आगै अरस-परस ।।७।।

घर मोमिन आग इस्क में, हक अगनी के पालेल ।
सोई इस्क आग देखावने, ल्याए जो मांहें खेल ।।८।।

जो पैदा हुआ आग का, सो आग में जलत नाहें ।
वह वजूद आग इस्क के, रहें हमेसा आग मांहें ।।९।।

सोई बात करें हक अर्स की, सहूर या बेसहूर ।
हुए सब विध पूरन पकव, हक अर्स दिन जहूर ॥१०॥

जो हक देखे टिक्या रहे, सोई अर्स के तन ।
सोई करें मूल मजकूर, सोई करे बरनन ॥११॥

पर ए देख्या अचरज, जो विरहा सब्द सुनत ।
क्यों तन रह्या जीव बिना, हाए हाए ए सुनत न अरवा उड़त ॥१२॥

आसिक अरवा कहावहीं, तिन मुख विरहा ना निकसत ।
जब दिल विरहा जानिया, तब आह अंग चीर चलत ॥१३॥

ए हाँसी कराई हुकमें, इस्क दिया उड़ाए ।
मुरदा ज्यों इस्क बिना, गावत विरहा लड़ाए ॥१४॥

कबूं अर्स रूहें ऐसी ना करें, जैसी हमसे हुई इन बेर ।
अर्स रूहों को विरहा रसें, हुए बेसक न लैयां घेर ॥१५॥

चरन तली की जो लींकें, सो एक लीक न होए बरनन ।
तो मुख से चरन क्यों बरनवूं, जो नूरजमाल का तन ॥१६॥

इन चरनों विध क्यों कहूं, नाजुक निपट नरम ।
ए बरनन करतें इन जुबां, हाए हाए उड़त न अंग बेसरम ॥१७॥

चरन केहेती हों मुखथें, जो निरखती थी निस दिन ।
सो समया याद न आवहीं, क्यों न लगे कलेजे अगिन ॥१८॥

चरन अंगूठे चित्त दे, नैनों नखन देखती जोत ।
नजरों निमख न छोड़ती, हाए हाए सो अब लोहू भी ना रोत ॥१९॥

नैनों अंगुरियां देखती, कोमलता हाथ लगाए ।
सो मेरे नैन नाम धराए के, हाए हाए जल बल क्यों न जाए ॥२०॥

चरन तली रेखा देखती, मेरी आखों नीके कर ।
ए कटाव किनार पर कांगरी, हाए हाए नैना जले न नाम धर ॥२१॥

रंग लाल कहूं के उज्जल, के देख खूबियाँ होत खुसाल ।
सो देखन वाले नाम धराए के, हाए हाए ओ जले न मांहें क्यों झाल ॥२२॥

नाजुक सलूकी मीठी लगे, नैना देखत ना तृपिताए ।
हाए हाए ए अनुभव दिल क्यों भूलै, ए हुकमें भी क्यों पकराए ॥२३॥

नाम जो लेते विरह को, मेरी रसना गई ना टूट ।
सो विरहा नैनों देख के, हाए हाए गैयां न आंखां फूट ॥२४॥

हक बानी कानों सुनती, कानों सुन के करती मैं बात ।
सो अवसर हिरदे याद कर, हाए हाए नूर कानों का उड़ न जात ॥२५॥

क्यों कहूं चरन के भूखन, अर्स जड़ सबे चेतन ।
सोभा सुन्दर सब दिल चाही, बोल बोए नरम रोसन ॥२६॥

क्या वस्तर क्या भूखन, असल अंग के नूर ।
हाए हाए रूह मेरी क्यों रही, करते एह मजकूर ॥२७॥

रंग रेसम हेम जवेर, ना तेज जोत सब्द लगत ।
एही अचरज अरवाहें अर्स की, ए सुनते क्यों ना उड़त ॥२८॥

याही भांत इजार की, भांत भूखन की सब ।
रूप करें कई दिल चाहें, जैसा रूह चाहे जब ॥२९॥

इजार बंध याही रस का, भांत भांत झलकत ।
देख लटकते फुंदन, हाए हाए अरवा क्यों न कढ़त ॥३०॥

चरन से कमर लग, भूखन या वस्तर ।
हेम जवेर या रेसम, सब एकै रस बराबर ॥३१॥

दिल चाही नरम सोभित, दिल चाही जोत खुसबोए ।
जिन खिन जैसा दिल चाहे, सब विध दे सुख सोए ॥३२॥

कई रंग हैं इजार में, उठत जामें में झांईं ।
अरवा क्यों सखत हुई, दिल देख उड़त क्यों नाहीं ॥३३॥

आसमान जिमी के बीच में, भरी जोत उठें कई रंग ।
घट बढ़ काहूं है नहीं, करें दिल चाही कई जंग ॥३४॥

ए सब विध दिल देखत, करे जुबां अकल बरनन ।
तो भी अरवा ना उड़ी, कोई सखत अंतस्करन ॥३५॥

दिल सखत बिना इन सरूप की, इत लज्जत लई न जाए ।
ए हुकम करत सब हिकमतें, हक इत ए सुख दिया चाहें ॥३६॥

ए रूह के नैनों देखिए, नाजुक कमर निपट ।
अति देखी सुन्दर चढ़ती, कही जाए न सोभा कटि ॥३७॥

कटि कमर सलूकी देख के, नैना क्यों रहे अंग को लाग ।
ए बातें दिल से विचारते, हाए हाए लगी न दिल को आग ॥३८॥

ए गौर रंग लाल उज्जल, छाती कई विध देत तरंग ।
नाहीं निमूना जोत जवेर, जो दीजे अर्स के नंग ॥३९॥

हैड़ा हक का देख कर, मेरा जीव रह्या अंग मांहें ।
हाए हाए मुरदा दिल मेरा क्यों हुआ, ए देख चलया नाहें ॥४०॥

हक हैड़ा देख कर, मेरे हैड़े रेहेत क्यों दम ।
मांग्या सुख इत देवे को, सो राखत मासूक हुकम ॥४१॥

हाथ पांउं मेरे क्यों रहे, देख हक हाथ पांउं ।
हाए हाए ए जुलम क्यों सह्या, क्यों भूले अवसर दाउ ॥४२॥

चकलाई दोऊ खभन की, अंग उतरता सलूक ।
देख कमर कटि पतली, हाए हाए दिल होत ना टूक टूक ॥४३॥

मैं देख्या अंग जामें बिना, नाजुक जोत नरम ।
ए केहेनी में न आवही, ए अंग होए न मांस चरम ॥४४॥

जामे दावन बांहें चोली, सिंध सागर रल्या मानो खीर ।
जोत भरी जिमी आसमान, मानो चलसी ऊपर चीर ॥४५॥

चीन मोहोरी बगल या बीच, गिरवान कोतकी नकस ।
सब जामा जानों के भूखन, ठौर एक दूजे पे सरस ॥४६॥

जब जैसा दिल चाहत, तिन खिन तैसा देखत ।
वस्तर भूखन हक अंग के, केहेनी में न आवत ॥४७॥

ए वस्तर भूखन भांत और हैं, अर्स अंग का नूर ।
जो सोभा देत इन अंग को, सो क्यों आवे मांहें सहूर ॥४८॥

और क्या चीज ऐसी अर्स में, जो सोभा देवे सरूप को ।
हक सरभर कछू न आवहीं, रूह देखे विचार दिल मों ॥४९॥

ए निपट बात बारीक है, अर्स रूहें करना विचार ।
और कोई होवे तो करे, बात अलेखे अपार ॥५०॥

सोभा हक के अंग की, सो अंग ही की सोभा अंग ।
ऐसी चीज कोई है नहीं, जो सोभे इन अंग संग ॥५१॥

कहूं पटुके की सलूकी, के ए भूखन कहूं कमर ।
ए छब फब दिल देख के, न जानों रूह रेहेत क्यों कर ॥५२॥

ए कहे जांए न वस्तर भूखन, ए चीज दुनियां के ।
जो सोभा देत हक अंग को, ताए क्यों नाम धरिए ए ॥५३॥

हक के अंग का नूर जो, ए रूहों अर्स में सुध होत ।
इत सब्द न कोई पोहोंचहीं, जो कोट रोसन कहूं जोत ॥५४॥

नख अंगुरियां अंगूठे, कोई दिया न निमूना जाए ।
जोत क्यों कहूं इन मुख, रहे अंबर जिमी भराए ॥५५॥

पतली अंगुरियां उज्जल, सोभा क्यों कहूं मुंदरियों मुख ।
ए देखे रूह मोमिन, सोई जानें ए सुख ॥५६॥

लीकें हथेली उज्जल, सलूकी पोहोंचों ऊपर ।
ए बेवरा केहेते अकल, हाए हाए अरवा रेहेत क्यों कर ॥५७॥

पोहोंची काड़ों कड़े झलकत, हेम जवेर कई रंग रस ।
दिल चाह्या रूप रंग ल्यावहीं, जो देखिए सोई सरस ॥५८॥

मोहोरी चूड़ी बांहें बाजू बंध, सोभा बारीक कई बरनन ।
नाम लेत इन चीज का, हाए हाए अरवा उड़त ना मोमिन ॥५९॥

हक हुकम राखत जोरावरी, बात आई ऊपर हुकम ।
ना तो रहे ना सुन वचन, पर ज्यों जानें त्यों करें खसम ॥६०॥

सोभा लेत हैड़े खभे, कर हेत सुनत श्रवन ।
विचार किए जीवरा उड़े, या उड़े देख भूखन ॥६१॥

गौर हरवटी अति सुन्दर, या देख के लांक सलूक ।
लाल अधुर देख ना गया, लोहू मेरे अंग का सूक ॥६२॥

मुख चौक छबि सलूकियां, सुन्दर अति सरूप ।
गाल लाल अति उज्जल, सुखदायक सोभा अनूप ॥६३॥

निलवट तिलक नासिका, रंग पल में अनेक देखाए ।
दंत बीड़ी मुख मोरत, हाए हाए जीवरा उड़ न जाए ॥६४॥

रंग नासिका की मैं क्यों कहूं, गुन सलूक अदभूत ।
सुन्य ब्रह्मांड को फोड़ के, अर्स बास लेत बीच नासूत ॥६५॥

नैन सैन जो करत हैं, सामी रूह मोमिन ।
ए सैन दिल लेय के, हाए हाए चिराए न गया ए तन ॥६६॥

ए नैना नूरजमाल के, देख सलोंने सलूक ।
ए सुन नैन बिछोड़ा मोमिन, हाए हाए हो न गए भूक भूक ॥६७॥

अंबर धरा के बीच में, केस लवने नूर झलकत ।
ए सोभा मुख क्यों कहूं, कानों मोती लाल लटकत ॥६८॥

कानन मोती केहेत हों, पल में बदलत भूखन ।
आसिक देखे कई भांतों, सुख देवें दिल रोसन ॥६९॥

कानों कड़ी गठौरी-मुरकी[1], जुगत जिनस नहीं पार ।
नाम नंग रंग रसायन क्यों कहूं, रूप खिन में बदलें बेसुमार ॥७०॥

उज्जल निलाट लाल तिलक, क्यों कहूं सोभा असल ।
सुन्दर सलूकी सरूप की, मांहें आवत ना अकल ॥७१॥

पाग कही सिर हक के, और कह्या सिर मुकट ।
हाए हाए जीवरा क्यों रह्या, खुलते हिरदे ए पट ॥७२॥

कलंगी दुगदुगी तो कहूं, जो पगरी होए और रस ।
वस्तर भूखन या अंग तीनों, हर एक पे एक सरस ॥७३॥

ताथें रस तो सब एक है, तामें अनेक रंग ।
कलंगी दुगदुगी ठौर अपने, करत माहों मांहें जंग ॥७४॥

मोमिन असल सूरत अर्स में, अबलों न जाहेर कित ।
खोज खोज कई बुजरक गए, सो अर्स रूहें ल्याई हकीकत ॥७५॥

१. गुथी हुई बाली को कान में पहनते हैं ।

नूर खूबी कही केसन की, हक सरूप की इत ।
हाए हाए मेरा अंग मुरदा ना हुआ, केहेते बका निसबत ॥७६॥

नख सिख लों बरनन किया, और गाया लड़ाए लड़ाए ।
मोमिन चाहिए विरहा सुनते, तबहीं अरवा उड़ जाए ॥७७॥

जो परआतम पोहोंचे नहीं, सो क्यों पोहोंचे हक अंग को ।
आसिक और मासूक, कैसी तफावत इनमों ॥७८॥

नाजुक सोभा हक की, जो रूह के आवे नजर ।
तो अबहीं तो को अर्स की, होए जाए फजर ॥७९॥

ज्यों सूरत दिल देखत, त्यों रूह जो देखे सूरत ।
बेर नहीं रूह लज्जत, तेरे अंग जात निसबत ॥८०॥

फरक नहीं दिल रूह के, ए तो दोऊ रहे हिल मिल ।
अर्स में जो रूह है, तो हकें कह्या अर्स दिल ॥८१॥

तेरा दिल लग्या ज्यों सूरत को, त्यों जो सूरतें रूह लगे ।
तो अबहीं ले रूह लज्जत, एक पलक में जगे ॥८२॥

रूह तो तेरी दिल बीच में, तो कह्या दिल अर्स ।
सेहेरग से नजीक तो कह्या, जो रूह दिल अरस-परस ॥८३॥

सूरत केहेते हक की, आगूं रूह मोमिन ।
हाए हाए रूह मुरग ना उड़या, बरनन करते अर्स तन ॥८४॥

आगूं अरवाहें अर्स की, करी बातें हक जुबान ।
हाए हाए तन मेरा क्यों रह्या, करते खिलवत बयान ॥८५॥

रूहें रहें अर्स दरगाह में, जो दरगाह नूर-जमाल ।
ए किया बयान खिलवत का, हाए हाए रूह रही किन हाल ॥८६॥

फेर फेर मेहेबूब देखिए, लगे मीठड़ा मुख मासूक ।
अंग गौर जोत अंबर लों, छब देख दिल होत न भूक भूक ॥८७॥

रूप रंग अंग छबि सलूकी, कहे वस्तर भूखन ।
ए केहेते अरवा ना उड़ी, हाए हाए कैसी हुज्जत मोमिन ॥८८॥

पांउं लीक केहेते अरवा उड़े, क्यों बरनवी हक सूरत ।
बंध बंध छूट ना गए, हाए हाए कैसी अर्स हुज्जत ॥८९॥

कह्या गौर मुख मासूक का, और निलवट असल तिलक ।
हाए हाए ए बयान करते क्यों जिए, हम में रही नहीं रंचक ॥९०॥

बरनन किया श्रवन का, जाके ताबे दिल हुकम ।
मासूक अंग बरनवते, हाए हाए मोमिन रहे क्यों हम ॥९१॥

कहे गौर गलस्थल हक के, कई छब नाजुक कोमलता ।
हाए हाए रूह इत क्यों रही, मुख देख मासूक बका ॥९२॥

बड़ी रूहें देख्या हक को, हकें देख्या सामी भर नैन ।
हाए हाए बात करते जीव क्यों रह्या, एह देख नैन की सैन ॥९३॥

भौंह स्याह नैन अनियां कही, और कह्या जोड़ गौर अंग ।
हाए हाए ए तन हुकमें क्यों रख्या, हुआ कतल न होते जंग ॥९४॥

देखी निरमलता दंतन की, न आवे मिसाल लाल मानिक ।
ज्यों देखत बीच चसमों, त्यों देखी जाए जुबां मुतलक ॥९५॥

कबूं हीरा कबूं मानिक, इन रंग सोभा कई लेत ।
दोऊ निरमल ऐनक ज्यों, परे होए सो देखाई देत ॥९६॥

लालक इन अधुर की, हक कबूं दिलों देखावत ।
बंध बंध जुदे होए ना पड़े, मेरा हैड़ा निपट सखत ॥९७॥

हक मुख सलूकी क्यों कहूं, छबि सोभित गौर गाल ।
बरनन करते ए सूरत, हाए हाए लगी न हैड़े भाल ॥९८॥

मैं कही जो मुख मांड़नी, और कह्या मुख सलूक ।
ए केहेते सलूकी मेरा अंग, हाए हाए हो न गया टूक टूक ॥९९॥

कही गौर हरवटी हक की, लांक पर लाल अधुर ।
कही दंत जुबां बीड़ी मुख, हाए हाए रूह क्यों रही सुन मधुर ॥१००॥

लाल अधुर कहे मासूक के, सो दिलें भी देखी लालक ।
ए देख लोहू मेरा क्यों रह्या, सूक न गया मांहें पलक ॥१०१॥

कंठ खभे बंध बंध का, नख सिख किया बरनन ।
हाए हाए जीवरा मेरा क्यों रह्या, टूट्या न अन्तस्करन ॥१०२॥

बरनन किया बका हक का, मैं हुकम लिया दिल ल्याए ।
केहेते हैड़े की सलूकी, हाए हाए मेरी छाती न गई चिराए ॥१०३॥

हकें अर्स किया दिल मोमिन, ए मता आया हक दिल से ।
हकें दिल दिया किया लिख्या, हाए हाए मोमिन डूब न मुए इनमें ॥१०४॥

हार कहे हैड़े पर, जोत भरी जिमी आसमान ।
हाए हाए ए मुरदा जल ना गया, नूर एता होते सुभान ॥१०५॥

कटि पेट पांसे कहे हक के, ले दिल के बीच नजर ।
हाए हाए ख्वाबी तन क्यों रह्या, ए दिल को लेकर ॥१०६॥

कांध पीठ लीक सलूकी, कही इलमें दिल दे ।
हाए हाए हुकमें ए तन क्यों रख्या, जो हुकम बैठा हुज्जत रूह ले ॥१०७॥

अर्स जवेर की क्यों कहूं, देखे बाजू बंध के नंग ।
जिमी से आसमान लग, हाए हाए जीव कतल न हुआ देख जंग ॥१०८॥

हक हाथों की बरनन करी, मच्छे कोनी कलाई काड़े ।
ए सुन जीव क्यों रेहेत है, ले ख्वाब झूठे भांडे ॥१०९॥

पोहोंचे लीकें हथेलियां, छबि अंगुरियां नख तेज ।
देखो अचरज मुख केहेते, हो न गया रेजा रेज ॥११०॥

रंग सलूकी भूखन, देख काड़े हाथों के ।
ए जोत ले जीव ना उड़या, हाए हाए बड़ा अचम्भा ए ॥१११॥

कई रंग इजार मासूक की, दावन में झांई लेत ।
छेड़े पटुके दावन पर, हाए हाए दिल अजूं न घाव देत ॥११२॥

चरन कमल मासूक के, चित्त में चुभें जिन ।
ए छबि सलूकी भूखन, क्यों कर छोड़ें मोमिन ॥११३॥

ए चरन आवें जिन दिल में, सो दिल अर्स मुतलक ।
कई मुतलक बातें अर्स की, दिल सब विध हुआ बेसक ॥११४॥

क्यों कहूं खूबी चरन की, और खूबी भूखन ।
अदभुत सोभा हक की, क्यों न होए अर्स तन ॥११५॥

चकलाई इन चरन की, भूखन छबि अनूपम ।
दिल ताही के आवसी, जा को मुतलक मेहेर खसम ॥११६॥

जो होवे अरवा अर्स की, सो इन कदम तले बसत ।
सराब चढ़े दिल आवत, सो रूह निस दिन रहे अलमस्त ॥११७॥

निमख न छोड़े चरन को, मोमिन रूह जो कोए ।
निस दिन रहे खुमार में, आवत है चरन बोए ॥११८॥

मासूक के चरनों का, किया बेवरा बरनन ।
जीव उड़या चाहिए केहेते लीक, हाए हाए क्यों रहे मोमिन तन ॥११९॥

हाथ पांउं मुख हैयड़ा, वस्तर भूखन हक सूरत ।
ए ले ले अर्स बारीकियां, हाए हाए रूह क्यों न जागत ॥१२०॥

जो जोत कहूं अंग नंग की, देऊं निमूना नरम पसम ।
ए तो अर्स पत्थर या जानवर, सो क्यों पोहोंचे परआतम ॥१२१॥

जो परआतम पोहोंचे नहीं, सो क्यों पोहोंचे हक अंग को ।
खेलौने और खावंद, बड़ो तफावत इन मों ॥१२२॥

जित आद अन्त न पाइए, तित तेहेकीक होए क्यों कर ।
इत सब्द फना का क्या कहे, जित पाइए न अव्वल आखिर ॥१२३॥

ए निरने करना अर्स का, तिन में भी हक जात ।
इत नूर अकल भी क्या करे, जित लदुन्नी गोते खात ॥१२४॥

जवेर पैदा जिमीय से, सो भी नहीं कह्या अर्स में ।
चौदे तबक उड़ावे अर्स कंकरी, इत भी बोलना नहीं ताथें ॥१२५॥

जित चीज नई पैदा नहीं, ना कबूं पुरानी होए ।
तित सब्द जुबां जो बोलिए, सो ठौर न रही कोए ॥१२६॥

जो कहूं हक दिल माफक, तो इत भी सब्द बंधाए ।
ताथें अर्स बारीकियां, सो किसी विध कही न जाए ॥१२७॥

चुप किए भी ना बने, हुकम इलम आया इत ।
और काम इनको नहीं, जो अर्स अरवा लई हुज्जत ॥१२८॥

इलम कह्या जो लदुन्नी, सो तो हक का मुतलक ।
इत मोमिन मिल पूछसी, क्यों रही रूहों को सक ॥१२९॥

जो अर्स बातें सक हमको, तो हकें क्यों कह्या अर्स कलूब ।
मोमिन कहे बीच वाहेदत, इन आसिकों हक मेहेबूब ॥१३०॥

मेहेबूब आसिक एक कहें, वाहेदत भी एक केहेलाए ।
अर्स भी दिल मोमिन कह्या, ए तो मिली तीनों विध आए ॥१३१॥

और भी कहूं सो सुनो, मोमिन अर्स से आए उतर ।
इलम दिया हकें अपना, अब इनों जुदे कहिए क्यों कर ॥१३२॥

फुरमान आया इनों पर, अहमद इनों सिरदार ।
हक बिना कछुए ना रखें, इनों दुनियां करी मुरदार ॥१३३॥

ए सब बुजरकी इनों की, क्यों जुदे कहिए वाहेदत ।
इने कुन्नकी दुनी क्या जानही, रूहें अर्स हक निसबत ॥१३४॥

तिन से अर्स मता क्यों छिपा रहे, जो दिल अर्स कह्या मोमिन ।
एक जरा न छिपे इन से, ए देखो फुरमान वचन ॥१३५॥

बका पट किने न खोलिया, अव्वल से आज दिन ।
हाए हाए तन न हुआ टुकड़े, करते जाहेर ए वतन ॥१३६॥

अर्स बका द्वार खोल के, करी जाहेर हक सूरत ।
अंग मेरा रह्या अचरजें, द्वार खोलते वाहेदत ॥१३७॥

मेरी रूहे कह्या आगे रूहन, सुन्या मैं हक के मुख इलम ।
ए बात केहेतें तन ना फट्या, हाए हाए ए देख्या बड़ा जुलम ॥१३८॥

यों चाहिए मोमिन को, रूह उड़े सुनते हक नाम ।
बेसक अर्स से होए के, क्यों खाए पिए करे आराम ॥१३९॥

हक अर्स याद आवते, रूह उड़ न पोहोंचे खिलवत ।
बेसक होए पीछे रहे, हाए हाए कैसी ए निसबत ॥१४०॥

क्यों न खेलावें खिलवत में, रूह अपनी रात दिन ।
हक इलमें अजूं जागी नहीं, कहावें अर्स अरवा तन ॥१४१॥

बैठ इन ख्वाब जिमीय में, कहे अर्स अजीम का बातन ।
हड्डी हड्डी जुदी होए ना पड़ी, तो कैसी रूह मोमिन ॥१४२॥

याद न जेता हक अर्स, एही मोमिनों बड़ा कुफर ।
हक वाहेदत इलम चीन्ह के, अजूं क्यों देखे दुनी नजर ॥१४३॥

सुनते नाम हक अर्स का, तबहीं अरवा उड़ जात ।
हाए हाए ए बल देख्या हुकम का, अजूं एही करावे बात ॥१४४॥

वस्तर और भूखन कहे, हक अंग वाहेदत के ।
ए केहेते बारीकियां अर्स की, हाए हाए तन उड़्या न ख्वाबी ए ॥१४५॥

बेसक इलम ले दिल में, बरनन किया बेसक ।
हुए बेसक रूह ना उड़ी, हाए हाए पोहोंची ना खिलवत हक ॥१४६॥

कहे इलम रूहें इत हैं नहीं, है हुकम तो हक का ।
हुए बेसक हुकम क्यों रहे, ले हुज्जत रूह बका ॥१४७॥

बेसक हुए जो अर्स से, और बेसक हुए वाहेदत ।
मुतलक इलम पाए के, हाए हाए हुकम क्यों रह्या ले हुज्जत ॥१४८॥
नैन रहे नैन देख के, एही बड़ा जुलम ।
न जानो क्यों सुरखरू, करसी हक हुकम ॥१४९॥
ए विरहा सुन श्रवन रहे, लगी न सीखां कान ।
हाए हाए वजूद न गल गया, सुन विरहा हादी सुभान ॥१५०॥
संध संध टूटी नहीं, सुनते विरहा सुकन ।
रोम रोम इन तन के, क्यों न लगी अगिन ॥१५१॥
बातें इन विरह की, मैं गाई अंग अंग कर ।
अचरज इन निसबतें, अरवा ना गई जर बर ॥१५२॥
मेरे अंग सबे उड़ ना गए, सब देख हक के अंग ।
सेज सुरंगी हक छोड़ के, रही पकड़ मुरदे का संग ॥१५३॥
क्यों न उड़ी अकल अंग थें, जो बरनन किया अर्स हक ।
ए पूरी हांसी बीच अर्स के, मांहें गिरो आसिक ॥१५४॥
करी हांसी हकें हम पर, ता विधसों चले न किन ।
अब सो क्योंए न बनि आवहीं, जो रोऊं पछताऊं रात दिन ॥१५५॥
सोई देखी जो कछू देखाई, अब देखसी जो देखाओगे ।
हंसो खेलो जानों त्यों करो, बीच अर्स खिलवत के ॥१५६॥
मोमिन दिल अर्स कर के, आए बैठे दिल मांहें ।
खुदी रूहों इत ना रही, इत गुनाह मोमिनों सिर नाहें ॥१५७॥
फेर हिसाब कर जो देखिए, तो गुनाह रूहों आवत ।
ए बेवरा है कलस में, मोमिन लेसी देख तित ॥१५८॥
रूहें मोमिन इत आई नहीं, तिन वास्ते नहीं गुना ।
पर एता गुनाह लगत है, इनों में जेता हिस्सा अर्स का ॥१५९॥

महामत कहे मोमिनों पर, करी हाँसी हुकमें ।
ना तो अरवाहें इत क्यों रहें, बेसक होए हक सें ॥१६०॥

॥प्रकरण॥२२॥चौपाई॥१६०६॥

मोमिन दुनी का बेवरा

अरवा आसिक जो अर्स की, ताके हिरदे हक सूरत ।
निमख न न्यारी हो सके, मेहेबूब की मूरत ॥१॥

और न पावे पैठने, इत बका बीच खिलवत ।
बका अर्स अजीम में, कौन आवे बिना निसबत ॥२॥

और तो कोई है नहीं, बिना एक हक जात ।
जात मांहें हक वाहेदत, हक हादी गिरो केहेलात ॥३॥

वस्तर भूखन पेहेर के, मेरे दिल में बैठे आए ।
हकें सोई किया अर्स अपना, रूह टूक टूक होए बल जाए ॥४॥

दई बड़ाई मेरे दिल को, हक बैठे अर्स कर ।
अपनी अंगना जो अर्स की, रूह क्यों न खोले नजर ॥५॥

दम न छोड़े मासूक को, मेरी रूह की एह निसबत ।
क्यों बातें याद दिए न आवहीं, जो करियां बीच खिलवत ॥६॥

जा को अनुभव होए इन सुख को, ताए अलबत[१] आवे याद ।
अर्स की रूहों को इस्क का, क्यों भूले रस मीठा स्वाद ॥७॥

रूह केहेलाए छोड़े क्यों अपना, क्यों याद दिए जाय भूल ।
हकें याही वास्ते, भेज्या अपना नूरी रसूल ॥८॥

हम अरवाहें जो अर्स की, तिन सब अंगों इस्क ।
सो क्यों जावे हम से, जो आड़ा होए न हुकम हक ॥९॥

ए निसबत नूरजमाल से, जो रूह को पोहोंचे रंचक ।
तो लाड़ अर्स अजीम के, क्यों भूलें मुतलक ॥१०॥

१. बेशक ।

पर हुआ हाथ हुकम के, जो हुकम देवे याद ।
हुकमें पेहेचान होवहीं, हुकमें आवे स्वाद ॥११॥

कबूल करी हम हाँसी को, और अपनी मानी भूल ।
सब सुध पाई कुंजी से, और फुरमान रसूल ॥१२॥

अब हुई पेहेचान हुकम की, एक जरा न रही सक ।
बोझ हम सिर ना रह्या, हक इलमें देखाया मुतलक ॥१३॥

अब भूल हमारी जरा नहीं, और हक कर थके हांसी ।
बात आई सिर हुकम के, अब काहे बिलखे रूह खासी ॥१४॥

देखना था सो सब देख्या, हक इस्क और पातसाई ।
और हाँसी रूहों इस्क पर, सब देखी जो देखाई ॥१५॥

क्यों न होए हुकम को हुकम, जो पेहेले किया इप्तदाए[1] ।
हुई उमेद सब की पूरन, अब क्यों न दीजे रूहें जगाए ॥१६॥

लाड़ हमारे अर्स के, हम से न छूटें खिन ।
अक्स हमारे के अक्स, क्यों लगे दाग तिन ॥१७॥

अब जो दिन राखो खेल में, सो याही के कारन ।
इस्क दे बोलाओगे, ऐसा हुकमें देखें मोमिन ॥१८॥

एक तिनका हमारे अर्स का, उड़ावे चौदे तबक ।
तो क्यों न उड़े रूह अक्सें, बल इलम लिए हक ॥१९॥

जो कदी कहोगे रूहें इत न हुती, ए तो हुकमें किया यों ।
तो नाम हमारे धर के, हुकम करे यों क्यों ॥२०॥

जो कदी हम आइयां नहीं, तो नाम तो हमारे धरे ।
और तिन में हुकम हक का, हक तासों ऐसी क्यों करे ॥२१॥

अब तो सब ही करोगे, टालने हमारे दाग ।
तुम रखियां ऐसा जान के, ना तो क्यों रहें पीछे हम जाग ॥२२॥

१. शुरु में ।

हुकम पर ले डारोगे, तेहेकीक कराओगे दिल ।
दाग अक्सों[1] क्यों मिटे, जो हमारे नामों किए सब मिल ॥२३॥

जो कदी ए दाग धोए डारोगे, मन वाचा कर करमन ।
अक्स हमारे नाम के, कदी रूहें बातें तो करसी वतन ॥२४॥

इन बात की हाँसियां, अक्स नाम भी क्यों सहे ।
हक विरहा बात सुन के, झूठी देह पकड़ क्यों रहे ॥२५॥

सो मैं गाया याद कर कर, कबूं पाया न विरहा रस ।
नाम सहे ना हुकम सहे, ना कछू सहे अक्स ॥२६॥

और हाँसी सब सोहेली, पर ए हाँसी सही न जाए ।
अक्स भी ना सेहे सकें, जब इलमें दिए पढ़ाए ॥२७॥

ना रह्या इस्क अपना, ना रह्या वतन सों ।
हक सों भी ना रह्या, तो कहा कहूं हुकम कों ॥२८॥

तुम हीं आप देखाइया, पेहेचान तुम इलम ।
तुम हीं दई हिंमत, तुम हीं पकड़ाए कदम ॥२९॥

तुम हीं इस्क देत हो, तुम हीं दिया जोस ।
सोहोबत भी तुम ही दई, तुम हीं ल्यावत मांहें होस ॥३०॥

तुम हीं उतर आए अर्स से, इत तुम हीं कियो मिलाप ।
तुम हीं दई सुध अर्स की, ज्यों अर्स में हो आप ॥३१॥

तुम हीं देखाई निसबत, तुम हीं देखाई खिलवत ।
तुम हीं देखाया सुख अखण्ड, तुम हीं देखाई वाहेदत ॥३२॥

खेल भी तुम देखाईया, दई फरामोसी भी तुम ।
तुम हीं जगावत जुगतें, कोई नहीं तुम बिना खसम ॥३३॥

काहूं तरफ न देखाई अपनी, यों रहे चौदे तबक सें दूर ।
सो सेहेरग से नजीक तुम हीं, हमको लिए कदमों हजूर ॥३४॥

१. प्रतिबिंब ।

मैं भी इत हों नहीं, ए भी कहावत तुम ।
जब दूजे कर बैठाओगे, तब खसम को कहेंगे हम ॥३५॥

दूजे तो हम हैं नहीं, ए बोले बेवरा वाहेदत का ।
ज्यों खेलावत त्यों खेलत, ना तो क्या जाने बात बका ॥३६॥

ना तो नींद उड़े तन सुपना, ए रेहेवे क्यों कर ।
देखो अचरज अदभुत, धड़ बोले सिर बिगर ॥३७॥

धड़ दो एक सुकन कहे, तित अचरज बड़ा होए ।
ए तन बिन बोले रूह अर्स की, कहे बानी बिना हिसाबें सोए ॥३८॥

सो भी बानी नहीं फना मिने, अर्स बका खोल्या द्वार ।
जो अब लग किने न खोलिया, कई हुए पैगंमर अवतार ॥३९॥

अर्स रूहें पेहेचान जाहेर, इनों कौल फैल हाल पार ।
सोई जानें पार वतनी, जा को बातून रूहसों विचार ॥४०॥

सो पट बका खोलिया, और बोले न बका बिन ।
इनों पीठ दई चौदे तबकों, करें जाहेर अर्स रोसन ॥४१॥

चौदे तबक की दुनी में, बका तरफ न पाई किन ।
सो सबों ने देखिया, किया जाहेर बका हक दिन ॥४२॥

बेवरा किया फुरमान में, और हदीसें महंमद ।
जिने खुली हकीकत मारफत, सोई जाने बातून सब्द ॥४३॥

महंमद सिखापन ए दई, जो उतरीं अरवाहें सिरदार ।
हक बका सिर लीजियो, छोड़ो दुनियां कर मुरदार ॥४४॥

महंमद कहें ए मोमिनों, ए अर्स अरवाहों रीत ।
हक बका ल्यो दिल में, छोड़ो दुनियां कर पलीत ॥४५॥

अर्स रूहें मोमिनों, लई महंमद हिदायत ।
चौदे तबक को पीठ दे, आए मांहें हक खिलवत ॥४६॥

कहें महंमद अर्स रूहें, तुम मछली हौज कौसर ।
जो जीव दुनी मुरदार के, सो रहें ना तिन बिगर ॥४७॥

अर्स अल्ला दिल मोमिन, और दुनी दिल सैतान ।
दे साहेदी महंमद हदीसें, और हक फुरमान ॥४८॥

कहे कुरान दूजा कछुए नहीं, एक हक न्यामत वाहेदत ।
और हराम सब जानियो, जो कछू दुनी लज्जत ॥४९॥

दुनी दोजख दरिया मछली, पातसाह सैतान दिल पर ।
हराम खात है अबलीस, तिन तले दुनी का घर ॥५०॥

ओलिया लिल्ला दोस्त, मोमिन बीच खिलवत ।
ए अरवाहें अर्स की, इनों दिल में हक सूरत ॥५१॥

तो अर्स कह्या दिल मोमिन, सो कायम हक वतन ।
रूहें कही दरगाह की, जित असल मोमिनों तन ॥५२॥

आदम नसल हवा बिना, ज्यों मछली जल बिन ।
यों असल न छूटे अपनी, कही जुलमत दुनी वतन ॥५३॥

मोमिन अर्स बका बिना, रेहे ना सके एक पल ।
जो हौज कौसर की मछली, तिन हैयाती वह जल ॥५४॥

मोमिन और दुनी के, कह्या जाहेर बड़ा फरक ।
करे दुनी आहार फना मिने, अर्स मोमिन बका हक ॥५५॥

आए मोमिन नूर बिलंद से, और दुनियां कही जुलमत ।
यों जाहेर लिख्या फुरमान में, किन पाई न तफावत ॥५६॥

ए तो जाहेर कुरान पुकारहीं, और महंमद हदीस ।
ए बेवरा क्या जानहीं, जिन नसलें लिख्या अबलीस ॥५७॥

जो मोमिन होते इन दुनी के, तो करते दुनी की बात ।
चलते चाल इन दुनी की, जो होते इन की जात ॥५८॥

जो यारी होती मोमिन दुनी सों, तो दुनी को न करते मुरदार ।
रूहें इनसे जुदी तो हुई, जो हम नाहीं इन के यार ॥५९॥

दुनी चलन इन जिमी का, चलना हमारा आसमान ।
मोमिन दुनी बड़ी तफावत, ए जानें मोमिन विध सुभान ॥६०॥

हादी मिल्या बोहोतों को, कोई ले न सक्या हादी चाल ।
चलना हादी का सोई चले, जो होवे इन मिसाल ॥६१॥

चलना हादी के पीछल, रखना कदम पर कदम ।
आदमी चले न चाल रूह की, इत दुनी मार न सके दम ॥६२॥

आदमी छोड़ वजूद को, ले न सके रूह की चाल ।
दुनियां बंदी[1] हवाए[2] की, मोमिन बंदे[3] नूरजमाल ॥६३॥

रूहें आइयां बीच दुनी के, धरे नासूती वजूद ।
रूहें चाल न छोड़ें अपनी, जो कदी आइयां बीच नाबूद ॥६४॥

दुनी रूहें एही तफावत, चाल एक दूजे की लई न जाए ।
रूह मोमिन पर ईमान के, दुनी पर बिन क्यों उड़ाए ॥६५॥

करना दीदार हक का, एही मोमिनों ताम ।
पानी पीवना दोस्ती हक की, इनों एही सुख आराम ॥६६॥

मोमिन तब लग बंदगी, जो लों आया नहीं इस्क ।
इस्क आए पीछे बंदगी, ए जानें मासूक या आसिक ॥६७॥

आसिक की एही बंदगी, जाहेर न जाने कोए ।
और आसिक भी न बूझहीं, एक होत दोऊ से सोए ॥६८॥

ए जाहेर है तफावत, जो कर देखो सहूर ।
दुनियां सहूर भी ना कर सके, क्या करे बिना जहूर ॥६९॥

मोमिन खाना अर्स में, हुआ दुनी जिमी में आहार ।
दुनी रोजगार नासूती, जो मोमिनों करी मुरदार ॥७०॥

१. कैदी । २. कंचन, कामिनी, कीर्ति (ज़र - ज़मीन एवं जन) । ३. सेवक ।

मोमिन उतरे नूर बिलंद से, कही दुनी आई जुलमत ।
जो देखो वेद कतेब को, तो जाहेर है तफावत ॥७१॥

मोमिन लिखे आसमानी, दुनियां जिमी की कही ।
ना तो वजूद दोऊ आदमी, ए तफावत क्यों भई ॥७२॥

कहे पर इस्क ईमान के, सो मोमिन छोड़ें न पल ।
सो दुनी को है नहीं, उत पाँउं न सके चल ॥७३॥

हकें फुरमाया चौदे तबक, है चरकीन का चरकीन[१] ।
सो छोड़ें एक मोमिन, जिनमें इस्क आकीन ॥७४॥

सो दुनी को है नहीं, जासों उड़ पोहोंचे पार ।
ईमान इस्क जो होवहीं, तो क्यों रहें बीच मुरदार ॥७५॥

ऊपर तले अर्स ना कह्या, अर्स कह्या मोमिन कलूब[२] ।
ए जानें रूहें अर्स की, जिन का हक मेहेबूब ॥७६॥

दुनी दिल मजाजी[३] कह्या, मोमिन हकीकी[४] दिल ।
बिना तरफ दुनी क्यों पावहीं, जो अर्सें रहे हिल मिल ॥७७॥

वेद कतेब पढ़ पढ़ गए, किन पाई न हक तरफ ।
खबर अर्स बका की, कोई बोल्या न एक हरफ ॥७८॥

इंतहाए[५] नहीं अर्स भोम का, सब चीजों नहीं सुमार ।
ऊपर तले मांहें बाहेर, दसों दिसा नहीं पार ॥७९॥

तो भी दुनियां अर्स देखे नहीं, यों देखावत कतेब वेद ।
पावे न लाम[६] इलम बिना, कोई इन विध का है भेद ॥८०॥

सुध दई महंमद ने, अर्स पाइए मोमिन बीच दिल ।
जिनपे इलम हक का, दिल अर्स रहे हिल मिल ॥८१॥

दुनी जाने मोमिन दुनी से, ए नहीं बीच इन खलक ।
एता भी ना समझै, पुकारत कलाम हक ॥८२॥

१. गंदा । २. दिल । ३ झूठा । ४. सांचा । ५. अंत, सीमा । ६. श्री देवचंद्रजी का ज्ञान ।

कहे मोमिन उतरे अर्स से, इनों दिल में हक सूरत ।
ए अर्स में अर्स इन दिल में, यों हिल मिल बीच खिलवत ॥८३॥

खुली मुसाफ हकीकत, तिन इतहीं हक वाहेदत ।
अर्स बरकत सब इतहीं, इतहीं हक निसबत ॥८४॥

इतहीं न्यामत मोमिनों, सब खुली जो इसारत ।
इतहीं मेला रूहों असल, इतहीं रूहों कयामत ॥८५॥

ए बारीक बातें रूह मोमिनों, सो समझें रूह मोमिन ।
सो आदमी कहे हैवान, जो इस्क इमान बिन ॥८६॥

दुनी जाने तन मोमिन, बैठे हैं हम मांहें ।
बोलत हैं बानी बका, ए रूहें तन दुनी में नाहें ॥८७॥

रूहें तन मांहें अर्स बका, और अर्स में बैठे बोलत ।
तो नजीक कहे सेहेरग से, देखो मोमिनों हक हिकमत ॥८८॥

इनों तन असल अर्स में, इनों दिल में जो आवत ।
सोई इनों के अक्स[1] में, सुकन सोई निकसत ॥८९॥

मोमिन तन असल से, अर्स मता कछू न छिपत ।
तो बका सूरज फुरमान में, कह्या फजर होसी इत ॥९०॥

ए बारीक बातें अर्स की, जो गुजरीं मांहें वाहेदत ।
हक हादी और मोमिन, सो जाहेर हुई खिलवत ॥९१॥

तो दुनियां होसी हैयाती, ले मोमिनों बका बरकत ।
ए बात दुनी क्यों बूझहीं, ओ जात हक निसबत ॥९२॥

ए हक मता रूह मोमिन, इनों ताले[2] लिखी न्यामत ।
सो क्यों कर दुनियां समझै, कही असल जाकी जुलमत ॥९३॥

आब हैयाती बका मिने, झूठी जिमी आवे क्यों कर ।
दिल आवे अर्स मोमिन के, और न कोई कादर ॥९४॥

१. प्रतिबिंब । २. भाग्य में ।

ए मोहोरे जो खेल के, झूठे खाकी नाबूद ।
आब हैयाती पीय के, क्यों होसी बका बूद ॥९५॥

ए मोहोरे पैदा जो खेल के, हक मोमिनों देखावत ।
याही बराबर अक्स, मोमिनों के बका बोलत ॥९६॥

जो तन अर्स में मोमिनों, सो मता अक्सों पोहोंचावत ।
सो अक्सों से बीच दुनी के, मोमिन मेहेर करत ॥९७॥

आब हैयाती इन विध, अर्स से रूहें ल्यावत ।
ए बरकत रूह अल्लाह की, यों अर्स मता आया इत ॥९८॥

और बरकत महंमद की, साहेदी देत फुरमान ।
तिन साहेदी से ईमान, पोहोंच्या सकल जहान ॥९९॥

ए इलम जानें रूहें अर्स की, और न काहूं खबर ।
खेल मोहोरे तो कछू हैं नहीं, एक जरे भी बराबर ॥१००॥

ए खाकीबुत सब नाबूद, इनको कायम किए मोमिन ।
आब हैयाती अर्स की, पिलाए के सबन ॥१०१॥

ऐसा मता मोमिन, अर्स सेती ल्यावत ।
बुतखाकी सरभर रूहों की, समझे बिना करत ॥१०२॥

अर्स इलम हुआ जाहेर, जब सब हुए रोसन ।
तब अंधेरी और उजाला, जुदे हुए रात दिन ॥१०३॥

अर्स तो दूर है नहीं, कहें दोऊ कतेब वेद ।
अर्स में रूहें दुनी फना जिमी, ए इलम लदुन्नी जानें भेद ॥१०४॥

पर ए सुध दुनी में है नहीं, तो क्या जाने कित अर्स ।
क्यों हक क्यों हादी रूहें, क्यों दिल मोमिन अरस-परस ॥१०५॥

बका जिमी जल तेज वाए, और बका आसमान ।
आपन बैठे वाही अर्स में, पर नजरों देखें जहान ॥१०६॥

जहान तो कछू है नहीं, है अर्स बका हक ।
हक इलम ले देखिए, तो होइए अर्स माफक ॥१०७॥

नाबूद[1] कही जो दुनियां, तिनकी नजर भी नाबूद ।
अर्स रूहें हक इलमें, ए आसिकै देखे मेहेबूब ॥१०८॥

इत आँखें चाहिए हक इलम की, तो हक देखिए नैना बातन ।
नैना बातून खुलें हक इलमें, ए सहूर है बीच मोमिन ॥१०९॥

जिन बेचून बेचगून नजरों, ताए खबर न इलम हक ।
हक इलम देखावे मासूक, इन हाल मोमिन कहे आसिक ॥११०॥

कहे पांच तत्व ख्वाब के, तामें बुजरक केहेलाए कई लाख ।
पर अर्स बका हक ठौर की, कहूं जरा न पाइए साख ॥१११॥

ख्वाब पैदा बका जिमी से, पर देखे न बका को ।
एक जरा बका आवे जो ख्वाब में, तो सब ख्वाब उड़े तिनसों ॥११२॥

ना तो ख्वाब जिमी बका जिमी सों, एक जरा न तफावत ।
पर झूठ न रहे सांच नजरों, आंखें खुलतै ख्वाब उड़त ॥११३॥

ए जाहेर दुनी जो ख्वाब की, करे मोमिनों की सरभर ।
हक देखे जो ना टिके, ताए दूजा कहिए क्यों कर ॥११४॥

हक देखे जो खड़ा रहे, तो दूजा कह्या जाए ।
दम ख्वाबी दूजे क्यों कहिए, जो नींद उड़े उड़ जाए ॥११५॥

ए इलमें सुनो अर्स बारीकियां, जो सहें अर्स हक रोसन ।
ताए भी दूजा क्यों कहिए, कहे कुल्ल मोमिन वाहिद[2] तन ॥११६॥

हक हादी रूहें मोमिन, ए अर्स में वाहेदत ।
पर ए जानें अरवाहें अर्स की, जो रूहें हक खिलवत ॥११७॥

इतहीं कजा होएसी, इतहीं होसी भिस्त ।
दोजख इतहीं होएसी, दुनी तले नूर नजर कयामत ॥११८॥

१. नाचीज । २. एक ।

दम ख्वाबी देखें क्यों बका को, कर देखो सहूर ।
ख्वाब दुनी तब क्यों रहे, जब हुआ दिन बका जहूर ॥११९॥

दुनी मगज न जाने मुसाफ का, तो देखे अर्स को दूर ।
जो जानें हक इलम को, तो देखें मोमिन हक हजूर ॥१२०॥

भिस्त दोजख दोऊ जाहेर, ए लिख्या मांहें फुरमान ।
तिन छोड़ी दुनियां हराम कर, जिन हुई हक पेहेचान ॥१२१॥

तो तरक करी इनों दुनियां, जो अर्स दिल मोमिन ।
दुनी जलसी इत दोजख, जब दिन हुआ बका रोसन ॥१२२॥

हकें दिया लदुन्नी जिनको, सो बैठे अर्स में बेसक ।
जब कौल पोहोंच्या सरत का, तब होसी दुनी इत दोजक ॥१२३॥

अर्स नासूत दोऊ इतहीं, होसी जाहेर अपनी सरत ।
देखें मोमिन दुनी जलती, बीच बैठे अपनी भिस्त ॥१२४॥

काफर देखें मोमिनों भिस्त में, आप पड़े बीच दोजक ।
सुख मोमिनों का देख के, जलसी आग अधिक ॥१२५॥

मोमिन दुनी दोऊ आदमी, हुई तफावत क्यों कर ।
ए बेवरा है फुरमान में, पर कोई पावे न हादी बिगर ॥१२६॥

बीते नब्बे साल हजार पर, मुसाफ मगज न पाया किन ।
तो गए एते दिन रात में, हुआ जाहेर न बका दिन ॥१२७॥

मोमिन उतरे अर्स से, इनों दिल में हक सूरत ।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, खोली हक हकीकत मारफत ॥१२८॥

दुनी दिल पर अबलीस, और पैदास कही जुलमत[1] ।
काम हाल इनों अंधेर में, हवा[2] को खुदा कर पूजत ॥१२९॥

कुलफ हवा का दुनी के, दिल आंखों कानों पर ।
ईमान क्योंए न आए सके, लिख्या फुरमान में यों कर ॥१३०॥

१. नींद, शुन्य । २. निराकार ।

कौल हाल मोमिन के नूर में, रूहअल्ला आया इनों पर ।
दिया इलम लदुन्नी इन को, खोलनें मुसाफ खातिर ॥१३१॥

राह[१] तौहीद पाई इनों नें, जो राह मुस्तकीम[२] सिरात ।
ए मेहेर मोमिनों पर तो भई, जो तले कदम हक जात ॥१३२॥

हुई लानत अजाजील को, सो उलट लगी सब जहान ।
अबलीस लिख्या दुनी नसलें, कही ए विध मांहें कुरान ॥१३३॥

देसी पैगंमर की साहेदी, गिरो अदल से उठाई जे ।
करी हकें हिदायत इन को, बहत्तर नारी[३] एक नाजी[४] ए ॥१३४॥

तन मोमिन अर्स असल, आड़ी नींद हुई फरामोस ।
सो नींद वजूद ले उड़या, तब मूल तन आया मांहें होस ॥१३५॥

दुनी तन जुलमत से, इन की असल न बका में ।
जब फरामोसी उड़ी जुलमत, तब जरा न रह्या दुनी सें ॥१३६॥

अरवाहें जो सुपन की, देखें न जाग्रत को ।
जो होए जाग्रत में असल, सो आवे जाग्रत मों ॥१३७॥

कही दुनियां हुई कुंन सों, सो जुलमत उड़ें उड़त ।
ताको भिस्त देसी हादी हुकमें, गिरो मोमिनों की बरकत ॥१३८॥

सिफत करेंगे सब कोई, दुनी भिस्त की जे ।
हक हादी रूहें वाहेदत, भिस्त हुई इनों वास्ते ॥१३९॥

खुदाए कर पूजेंगे, बका मिनें बेसक ।
पाक होसी हक इलम सों, करें बंदगी होए आसिक ॥१४०॥

मोमिन उतरे अर्स अजीम से, दुनी तिन सों करे जिद ।
ए अर्स से आए हक पूजत, दुनी पूजना हवा लग हद ॥१४१॥

दुनियां दिल अबलीस कह्या, हक अर्स दिल मोमिन ।
ए जाहेर किया बेवरा, कुरान में रोसन ॥१४२॥

१. रास्ता । २. सीधा रास्ता । ३. नरकी, दोजखी । ४. मोक्ष प्राप्त करने वाला ।

अबलीस सोई बतावसी, जिन सों होसी दोजक ।
बोली चाली मोमिन अर्स की, जासों पाइए बका हक ॥१४३॥
बैठे बातें करें बका अर्स की, सोई भिस्त भई बैठक ।
दुनी बातें करे दुनी की, आखिर तित दोजक ॥१४४॥
ए बोहोत भांत है बेवरा, मोमिन और दुनियां ।
मोमिन नजर बका मिने, दुनी नजर बीच फना ॥१४५॥
कहे महामत अर्स अरवाहें, किया पेहेलें बेवरा फुरमान ।
जिन हुई हक हिदायत, सोई बातून करे बयान ॥१४६॥

॥प्रकरण॥२३॥चौपाई॥१७५२॥

हकीकत मारफत का बेवरा

सोई कहूं हकीकत मारफत, जो रखी थी गुझ रसूल ।
वास्ते अर्स रूहन के, जिन जावें आखिर भूल ॥१॥
फिरके बनी असराईल, हुए पीछे मूसा महत्तर[1] ।
एक नाजी नारी सत्तर, कहे फुरमान यों कर ॥२॥
याही भांत ईसा के, फिरके बहत्तर कहे ।
एक नाजी[2] तिन में हुआ, और नारी[3] इकहत्तर भए ॥३॥
तेहत्तर फिरके कहे महंमद के, बहत्तर नारी एक नाजी ।
नारी जलसी आग में, नाजी हिदायत हक की ॥४॥
जाहेर पेहेचान है तिन की, ले चलत माएने बातन ।
कौल फैल चाल रूह नजर, इनों असल बका अर्स तन ॥५॥
फुरमान आया जिन पर, ए सोई जानें इसारत ।
ले मारफत बैठे अर्स में, बीच बका खिलवत ॥६॥
ए इलम कहे खेल उड़ जावे, बका कंकरी के देखे ।
तो अर्स रूहों की नजरों, ख्वाब रेहेवे क्यों ए ॥७॥

१. बुजरक । २. ईमानदार । ३. दोजखी ।

तो मोमिन तन में हुकम, फैल करे लिए रूह हुज्जत ।
वास्ते हादी रूहन के, ए हकें करी हिकमत ।।८।।

तो कह्या अर्स दिल मोमिन, ना मोमिन जुदे अर्स से ।
पर ए जानें अरवाहें अर्स की, जो करी बेसक हक इलमें ।।९।।

बसरी मलकी और हकी, तीन सूरत महंमद की जे ।
ए तीनों सूरत दे साहेदी, आखिर अर्स देखावें ए ॥१०॥

रूहों हक अर्स नजरों, हुकम नजर खेल मांहें ।
अर्स नजीक रूहों को खेल से, इत धोखा जरा नाहें ॥११॥

तो हक सेहेरग से नजीक, कोई जाने ना लदुन्नी बिन ।
एही लिख्या फुरमान में, यों ही रूहअल्ला कहे वचन ॥१२॥

ज्यों ज्यों होवे अर्स नजीक, खेल त्यों त्यों होवे दूर ।
यों करते छूट्या खेल नजरों, तो रूहें कदमै तले हजूर ॥१३॥

नजर खेल से उतरती देखिए, त्यों अर्स नजीक नजर ।
यों करते लैल मिटी रूहों, दिन हुआ अर्स फजर ॥१४॥

ए जो देत देखाई वजूद, रूह मोमिन बीच नासूत ।
ए दुनी जाने इत बोलत, ए बैठे बोलें मांहें लाहूत ॥१५॥

तो बातून गुझ लाहूत का, जाहेर सब करत ।
ना तो अर्स बका की रोसनी, क्यों होवे जाहेर इत ॥१६॥

अर्स बका हमेसगी, हक हादी रूहें वाहेदत ।
ए तीन खेल हुए जो लैल में, ऐसा हुआ न कोई कबूं कित ॥१७॥

तो खाकीबुत कायम किए, जो किया वास्ते खेल उमत ।
रूहों पट दे बका बुलाए के, दई चौदे तबकों भिस्त ॥१८॥

सिफत करेंगे सब कोई, दुनी भिस्त की जे ।
हक हादी रूहें वाहेदत, भिस्त हुई इनों वास्ते ॥१९॥

अर्स रूहें हक बिना न रहें, विरहा न सहें एक खिन ।
जब इलमें हुई अर्स बेसकी, रूहें रहें न बिना वतन ॥२०॥

जो कदी मोमिन तन में हुकम, तो हुकम भी रहे ना इत ।
क्यों ना रहे इत हुकम, हुकम हुकम बिना क्यों फिरत ॥२१॥

हुकम आया तन मोमिनों, लई अर्स रूह हुज्जत ।
ले इत लज्जत अर्स हक की, क्यों हुकम रेहे सकत ॥२२॥

ए हुकम सो भी मासूक का, सो क्यों जुदागी सहे ।
खिलवत वाहेदत सुध सुन, पल एक ना रहे ॥२३॥

ए हुकम तिन मासूक का, जो आप उलट हुआ आसिक ।
सो हुकम विरहा ना सहे, बिना मासूक एक पलक ॥२४॥

ए अर्स बका बातें सुन के, एक पलक न रहें अरवाहें ।
रूहों हुकम राखे आड़ा पट दे, हक इत लज्जत देखाया चाहें ॥२५॥

रूहों हक पे मांगी लज्जत, सो क्यों रहें देखे बिगर ।
कोट गुनी देखावें लज्जत, जो रूहों मांगी प्यार कर ॥२६॥

ना तो इस्क इनों का असल, सब अंगों इस्क रूहन ।
इस्क उड़ावे अंग लज्जत, आया इलम वास्ते इन ॥२७॥

हक को काम और कछू नहीं, देवें रूहों लाड़ लज्जत ।
ए तो बिगर चाहे सुख देत हैं, तो मांग्या क्यों न पावत ॥२८॥

सुख उपजें कई विध के, आगूं अर्स में बड़ा विस्तार ।
सो रूहें सब इत देखहीं, जो कर देखें नीके विचार ॥२९॥

सो बिगर कहे सुख देत हैं, ए तो रूहों मांग्या मिल कर ।
इन जिमी बैठाए सुख अर्स के, हक देत हैं उपरा ऊपर ॥३०॥

दुनी में बैठाए न्यारे दुनी से, किए ऐसी जुगत बनाए ।
सुख दिए दोऊ ठौर के, अर्स दुनी बीच बैठाए ॥३१॥

एक तन हमारा लाहूत में, नासूत में और तन ।
असल तन रूहें अर्स बीच में, तन नासूत में आया इजन ॥३२॥

अर्स तन देखें तन नासूती, तन नासूत में जो हुकम ।
सो सुध दई अर्स अरवाहों को, इने सेहेरग से नजीक हम ॥३३॥

दुनियां चौदे तबक में, किन पाई न बका तरफ ।
तिन अर्स में बैठाए हमको, जा को किन कह्यो ना एक हरफ ॥३४॥

जो जाहेर माएने देखिए, तो बीच पड़यो ब्रह्मांड ।
एता बिछोड़ा कर दिया, हक अर्स और इन पिंड ॥३५॥

हुआ बिछोड़ा बीच ब्रह्मांड के, एते पड़े थे हम दूर ।
सो हकें इलम ऐसा किया, बैठे कदमों तले हजूर ॥३६॥

हुकमें कई मता पोहोंचाईया, बीच ऐसी जुदागी में ।
हकें न्यामत दे अघाए, कई हांसी करियां हम सें ॥३७॥

अर्स-अजीम की कंकरी, उड़ावे चौदे तबक ।
तो तिन को है क्यों कहिए, जो देख ना सके हक ॥३८॥

जो हक को देखे ना उड़े, सो दूजा कहिए क्यों कर ।
ए बातें अर्स वाहेदत की, पाइए हक इलमें खबर ॥३९॥

हकें इलम दिया अपना, सो आया इस्क बखत ।
सो इस्क न देवे बढ़ने, ऐसे किए हिरदे सखत ॥४०॥

और जित आया हक इलम, अर्स दिल कह्या सोए ।
हक न आवें इस्क बिना, और हक बिना इस्क न होए ॥४१॥

अर्स कहिए दिल तिन का, जित है हक सहूर ।
इलम इस्क दोऊ हक के, दोऊ हक रोसनी नूर ॥४२॥

इस्क इलम बारीकियां, दिल जाने अर्स मोमिन ।
जो जागी होए रूह हुकमें, ताए लज्जत आवे अर्स तन ॥४३॥

जो जोरा करे इस्क, तन मोमिन देवे उड़ाए ।
दिल सखती बिना अर्स अजीम की, इत लज्जत लई न जाए ॥४४॥

इस्क नूर-जमाल बिना, और जरा न कछुए चाहे ।
इस्क लज्जत ना सुख दुख, देवे वाहेदत बीच डुबाए ॥४५॥

ना तो सखत दिल मोमिन के, हक करें क्यों कर ।
पर अर्स लज्जत बीच दुनी के, लिवाए न सखती बिगर ॥४६॥

एकै नजर मोमिन की, हक सुख दिया चाहें दोए ।
रूहें अर्स सुख लेवें खेल में, और खेल सुख अर्स में होए ॥४७॥

हकें दई जुदागी हमको, इस्क बेवरे को ।
बिना जुदागी बेवरा, पाइए ना अर्स मों ॥४८॥

होए न जुदागी अर्स में, तो क्यों पाइए बेवरा इस्क ।
ताथें दई नेक फरामोसी, बीच अर्स के हक ॥४९॥

हम खेल देखें बैठे अर्स में, ए जो चौदे तबक ।
रूह हमारी इत है नहीं, लई परदे में हक ॥५०॥

फेर दिया इलम अपना, जासों फरामोसी उड़ जाए ।
खेल में मता सब अर्स का, इलमें सब विध दई बताए ॥५१॥

जो रूह हमारी आवे खेल में, तो खेल रहे क्यों कर ।
याको उड़ावे अर्स कंकरी, झूठ क्यों रहे रूहों नजर ॥५२॥

देखत है दिल खेल को, लिए अर्स रूह हुज्जत ।
फुरमान आया इनों पर, और इलम आया न्यामत ॥५३॥

या विध करी जो साहेब ने, हम हुए दोऊ के दरम्यान ।
सुध अर्स नासूत की, दोऊ हम को देवें सुभान ॥५४॥

हुकम तन बीच नासूत, हम फरामोस अर्स तन ।
नासूत देखें हम नजरों, अर्सें पोहोंचे ना दृष्ट मन ॥५५॥

बोले हुकम दावा ले रूहन, बीच तन नासूत ।
ले सब सुध अर्स इलमें, देत दुनी में लज्जत लाहूत ॥५६॥

खिलवत निसबत वाहेदत, जेती अर्स हकीकत ।
ए लज्जत हुकम सिर लेवहीं, अर्स रूहें सिर ले हुज्जत ॥५७॥

यों हुकम नूरजमाल का, अर्स सुख देत रूहों इत ।
चुन चुन न्यामत हक की, रूहों हुकम पोहोंचावत ॥५८॥

कई सुख लें हक के खेल में, फेर हुकम पोहोंचावे खिलवत ।
कई अनहोंनी कर सुख दिए, हुकमें जान हक निसबत ॥५९॥

कई विध के सुख हुकमें, दोऊ तरफों आड़ा पट दे ।
अर्स दुनी बीच रूहों को, दिए सुख दोऊ तरफों के ॥६०॥

ए झूठ न आवे अर्स में, ना कछू रहे रूहों नजर ।
ताथें दोऊ काम इन विध, हकें किए हिकमत कर ॥६१॥

जेती अरवाहें अर्स की, हक सेहेरग से नजीक तिन ।
दे कुंजी अर्स पट खोलिया, हादिएं किए सब रोसन ॥६२॥

इलम लदुन्नी[1] पाए के, अर्स रूहें हुई बेसक ।
जगाए खड़े किए अर्स में, बीच खिलवत खासी हक ॥६३॥

यो तो खड़ी रहे रूह खिलवतें, या तो देवे तवाफ[2] ।
हौज जोए या अर्स में, तूं इन विध हो रहे साफ ॥६४॥

पाक पानी से न होइए, ना कोई और उपाए ।
होए पाक मदत तौहीद की, हकें लिख भेज्या बनाए ॥६५॥

फेर फेर हक अंग देखिए, ज्यों याद आवे निसबत ।
है अनुभव तो एक अंग का, जो हमेसा वाहेदत ॥६६॥

ताथें तूं चेत रूह अर्स की, ग्रहे अपने हक के अंग ।
रहो रात दिन सोहोबत में, हक खिलवत सेवा संग ॥६७॥

१. तारतम ज्ञान । २. परिकरमा ।

जो खावंद अर्स अजीम[1] का, ए हक नूरजमाल ।
आए तले झरोखे झांकत, दीदार को नूरजलाल ॥६८॥

जाके पलथें पैदा फना, कई दुनी जिमी आसमान ।
सो आवत दायम दीदार को, ऐसा खावंद नूर-मकान ॥६९॥

तिन चाह्या दीदार रूहन का, जो रूहें बीच बड़ी दरगाह ।
ए मरातबा[2] मोमिनों, जिन वास्ते हुकम हुआ ॥७०॥

देख देख मैं देखया, ए सब करत हक हुकम ।
ना तो अर्स दिल एता मता लेय के, खिन रहे न बिना कदम ॥७१॥

हकें अर्स लिख्या मेरे दिल को, क्यों रहे रूह सुन सुकन ।
एक दम ना रहे बिना कदम, पर रूहों ठौर बैठा हक इजन[3] ॥७२॥

हुकम कहे सो हुकमें, अर्स बानी बोले हुकम ।
रूहों दिल हुकम क्यों रेहे सके, ए तो बैठी तले कदम ॥७३॥

खेल तन में हुकम ना रेहे सके, हुज्जत लिए रूहन ।
हुकम हमारे खसम का, क्यों देवे दाग मोमिन ॥७४॥

पर हक अर्स लज्जत तो पाइए, बैठे मांग्या खेल में जे ।
सो हुकमें मांग्या दे हुकम, हकें करी वास्ते हाँसी के ॥७५॥

ए बातें होसी सब अर्स में, हँस हँस पड़सी सब ।
ए हुकमें करी कई हिकमतें, सब वास्ते हमारे रब ॥७६॥

हक मुख हुकमें देख हीं, हुकम देखावे खेल ।
हुकम देवे सुख लदुन्नी, हुकम करावे इस्क केलि ॥७७॥

हुकमें जोस गलबा करे, हुकमें जोर बढ़े इस्क ।
हुकमें इलम रखे सुख को, हुकम प्याले पिलावे माफक ॥७८॥

हुकम बेहोस ना करे, हुकम जरा जरा दे लज्जत ।
हुकम पनाह करे सब रूहन, हुकमें जानी जात निसबत ॥७९॥

१. परमधाम । २. पद । ३. हुकम ।

प्याला हुकम पिलावहीं, करें हुकम रखोपा ताए ।
ना तो इन प्याले की बोए से, तबहीं अरवा उड़ जाए ॥८०॥

ए प्याला कबूं किन ना पिआ, हम रूहें आइयां तीन बेर ।
ए प्याले पेहेले तो पिए, जो हम थे बीच अंधेर ॥८१॥

ए प्याले पिए जाए क्यों जागतें, तन तबहीं जाए चिराए ।
बोए भी ना सेहे सके, तो प्याला क्यों पिआ जाए ॥८२॥

हुकम जो प्याला देवहीं, सो संजमें संजमें[१] पिलाए ।
पूरी मस्ती न हुकम देवहीं, जानें जिन कांच सीसा फूट जाए ॥८३॥

ना तो ए प्याला पीय के, ए कच्चा वजूद न रख्या किन ।
पर हुकम राखत जोरावरी, प्याला पिलावे रखे जतन ॥८४॥

हुकम मेहेर बारीकियां, ए मैं कहूं बिध किन ।
नजर हमारी एक बिध की, सब बिध सुध ना रूहन ॥८५॥

हुकम देवे लज्जत, प्याला जेता पिआ जाए ।
हर रूहों जतन करें कई बिध, जानें जिन प्याला देवे गिराए ॥८६॥

जिन जेता हजम होवहीं, ज्यों होए नहीं बेहोस ।
तब हीं फूटे कुप्पा[२] कांच का, पाव प्याले के जोस ॥८७॥

सही जाए न बोए जिनकी, सो क्यों सकिए मुख लगाए ।
सो पैदरपे[३] क्यों पी सके, पर हुकम करत पनाह[४] ॥८८॥

ए अंग लगे प्याला जिनके, सब खलड़ी[५] जाए उतर ।
ना तो ए प्याला हजम क्यों होवहीं, पर हक राखत पनाह नजर ॥८९॥

ए प्याला कोई न पी सके, जुबां लगते मुरदा होए ।
पर हक राखत हैं जीव को, ना तो याकी खैंच काढ़े खुसबोए ॥९०॥

प्याले पर प्याले पिलावहीं, ताको निस दिन रहे खुमार ।
देवे तवाफ[६] निस दिन, हुकम मेहेर को नहीं सुमार ॥९१॥

१. धीरे - धीरे । २. बरतन । ३. लगातार । ४. शरण । ५. चमड़ी । ६. परिकरमा ।

बड़ा अचरज इन हुकम का, मुरदे राखत जिवाए ।
मौत सरबत निस दिन पीवै, सो मुरदे रखे क्यों जाए ॥९२॥

हुकम मुरदों बोलावत, और ऐसी देत अकल ।
करत नजीकी हक के, मुरदे कहावें अर्स दिल ॥९३॥

हुकम लाख विधों जतन करे, हर रूहों ऊपर सबन ।
हुकम जतन तो जानिए, जो याद आवे अर्स वतन ॥९४॥

जो पेहेले आप मुरदे हुए, तो दुनियां करी मुरदार ।
हक तरफ हुए जीवते, उड़ पोहोंचे नूर के पार ॥९५॥

दुनियां इस्क न ईमान, क्यों उड़या जाए बिना पर ।
तो दुनी कही जिमी नासूती, रूहें आसमानी जानवर ॥९६॥

ए दुनियां जो खेल की, छोड़ सूरिया आगे ना चलत ।
सो कायम फना क्या जानहीं, जाकी पैदास कही जुलमत ॥९७॥

महामत कहे ए मोमिनों, बका हासिल[१] अर्स रूहन ।
कह्या दिल जिनों का अर्स बका, ए मोमिन असल अर्स में तन ॥९८॥

॥प्रकरण॥२४॥चौपाई॥१८५०॥

मोमिनों की सरियत, हकीकत, मारफत इस्क रब्द का प्रकरण

इस्क रब्द खिलवत में, हुआ हक हादी रूहों सों ।
सबों ज्यादा इस्क कह्या अपना, तो तिलसम देखाया रूहों कों ॥१॥

तिन फरेब में रल गैयां, जित पाइए ना इस्क हक ।
कहें हक मोहे तब पाओगे, जब ल्योगे मेरा इस्क ॥२॥

यों हकें छिपाइयां खेल में, दे इलम करी खबरदार ।
रब्द किया याही वास्ते, ल्याओ प्यार करो दीदार ॥३॥

१. प्राप्त ।

मोमिन हक को जानत, नजीक बैठे हैं इत ।
हक कदम हमारे हाथ में, पर हम नजरों ना देखत ।।४।।

ए तेहेकीक किया हक इलमें, इनमें जरा न सक ।
यों नजीक जान पेहेचान के, हम बोलत ना साथ हक ।।५।।

ए फरामोसी फरेबी, हम जान के भूलत ।
हक छिपे हमसों हाँसीय को, हाए हाए ए भूल दिल में भी न आवत ।।६।।

बैठे मासूक जाहेर, पर दिल ना लगे इत ।
मासूक मुख देखन को, हाए हाए नैना भी ना तरसत ।।७।।

सुनने कान ना दौड़त, मासूक मुख की बात ।
इस्क न जानों कहां गया, जो था मासूक सों दिन रात ।।८।।

रूह अंग ना दौड़े मिलन को, ऐसा अर्स खावंद मासूक ।
मेहेबूब जुदागी जान के, अंग होत नहीं टूक टूक ।।९।।

जो याद आवे ए कदम की, तो तबहीं जावे उड़ देह ।
कोई बन्ध पड़्या फरेब का, आवे जरा न याद सनेह ॥१०॥

इस्क हमारा कहां गया, जो दिल बीच था असल ।
तिन दिलें सहूर क्यों छोड़िया, जो विरहा न सेहेता एक पल ॥११॥

जो दिल से ए सहूर करें, तो क्यों रहें मिले बिगर ।
अर्स बेसकी सुन के, अजूं क्यों रहें नींद पकर ॥१२॥

बातें सबे सुपन की, करें जागे पीछे सब कोए ।
पर आगे की बातें सबे, सुपने में कबूं न होए ॥१३॥

सो जरे जरे जाग्रत की, सब बातें होत बेसक ।
नींद रेहेत अचरज सों, आए दिल में अर्स मुतलक ॥१४॥

सो कराई मासूकें हम पे, सब अर्स बातें सुपने ।
सब गुजरी जो हक हादी रूहों, सो सब करत हम आप में ॥१५॥

हुआ जाती सुमरन जिन को, अर्स अजीम जैसा सुख ।
निसबत बका नूरजमाल, अजूं क्यों पकड़ रहें देह दुख ॥१६॥

ज्यों जाहेर खड़े देखिए, त्यों देखिए इन इलम ।
यों लाड़ लज्जत सुख देवहीं, बैठाए अपने तले कदम ॥१७॥

सुपन त्यों का त्यों खड़ा, लिए नींद वजूद ।
अर्स मता सब देख्या बका, देह झूठी इन नाबूद ॥१८॥

जब सुपन से जागिए, तब नींद सबे उड़ जात ।
सो जागे में सक ना रही, करें मांहों-मांहें सुपन बात ॥१९॥

ऐसा किया हकें सुपन में, जानों जागे में सक नाहें ।
ऐसी हुई दिल रोसनी, फेर बोलत सुपनें मांहें ॥२०॥

जानों सुपनें नींद उड़ गई, मुरदे हुए वजूद ।
हकें हक अर्स देखाइया, सुपन हुआ नाबूद ॥२१॥

फेर सुपन तरफ जो देखिए, तो मुरदे खड़े बोलत ।
बातें करें अकल में, ऐसा हुकमें देख्या खेल इत ॥२२॥

कबूं कोई न बोलिया, बका बातें हक मारफत ।
दे मुरदों को इलम अपना, सो बातें हुकम बोलावत ॥२३॥

हुए वजूद नींद के अर्स में, सो नींद दई उड़ाए ।
दे जाग्रत बातें दिल में, दिल अरसै किया बनाए ॥२४॥

असल मुरदा वजूद, भी हक इलमें दिया मार ।
जगाए दिए बीच अर्स के, बातें मुरदा करे समार ॥२५॥

यों कई बातें हाँसीय को, मासूक करत हम पर ।
वास्ते रब्द इस्क के, ए हकें बनाई यों कर ॥२६॥

अब जो हिंमत हक देवहीं, तो उठ मिलिए हक सों धाए ।
सब रूहें हक सहूर करें, तो जामें तबहीं देवें उड़ाए ॥२७॥

सहूर बिना ए रेहेत है, तेहेकीक जानियो एह ।
ए भी हुकम हक बोलावत, हक सहूरें आवत सनेह ॥२८॥

सनेह आए झूठ ना रहे, जो पकड़ बैठे हैं हम ।
ए झूठ नजरों तब क्यों रहे, जब याद आवें सनेह खसम ॥२९॥

हकें इलम भेज्या याही वास्ते, देने हक अर्स लज्जत ।
सो मांगी लज्जत सब देय के, आखिर उठावसी दे हिंमत ॥३०॥

जो हक न देवे हिंमत, तो पूरा होए न हाँसी सुख ।
जो रूह भाग जाए आखिर लग, हांसी होए न बिना सनमुख ॥३१॥

हक हिंमत देसी तेहेकीक, हाँसी होए न हिंमत बिन ।
ए गुझ बातें तब जानिए, हक सहूर आवे हादी रूहन ॥३२॥

ए बारीक बातें मारफत की, तिन बारीक का बातन ।
ए बातें होंए हक हिंमतें, हक सहूर करें मोमिन ॥३३॥

हिंमत तो भी हुकम, रूह हुज्जत सो भी हुकम ।
तन हुकम सो भी हुकम, सब हुकम तले कदम ॥३४॥

इलम इस्क तो भी हुकम, सहूर समझ सो हुकम ।
जोस होस सो भी हुकम, आद अंत हुकम तले हम ॥३५॥

बातें हकसों अर्स में, जो करते थे प्यार ।
सो निसबत कछूए ना रही, ना दिल चाहे दीदार ॥३६॥

ना तो बैठे हैं ठौर इतहीं, इतहीं किया रब्द ।
पर ऐसा फरेब देखाइया, जो पोहोंचे ना हमारा सब्द ॥३७॥

इतथें कोई उठी नहीं, बैठा मिलावा मिल ।
बेर साइत एक ना हुई, यों इलमें बेसक किए दिल ॥३८॥

इस्क मिलावा और है, और मिलावा मारफत ।
इलमें लई कई लज्जतें, इस्क गरक वाहेदत ॥३९॥

ताथें बड़ी हकीकत मोमिनों, बड़ी मारफत लज्जत ।
मोमिन लीजो अर्स दिल में, ए नेक हुकम कहावत ॥४०॥

जो कदी इस्क आवे नहीं, तो मोमिन बैठ रहें क्यों कर ।
अर्स हकसों बेसक होए के, क्यों रहें अर्स बिगर ॥४१॥

इस्क क्यों ना उपजे, पर रूहों करना सोई उद्दम ।
राह सोई लीजिए, जो आगूं हादिएँ भरे कदम ॥४२॥

ए तिलसम क्योंए ना छूटहीं, जहां साफ न होवे दिल ।
अर्स दिल अपना करके, चलिए रसूल सामिल ॥४३॥

पाक न होइए इन पानिएं, चाहिए अर्स का जल ।
न्हाइए हक के जमाल में, तब होइए निरमल ॥४४॥

पाक होना इन जिमिएं, और न कोई उपाए ।
लीजे राह रसूल इस्कें, तब देवें रसूल पोहोंचाए ॥४५॥

अब कहूं सरीयत मोमिनों, जिन लई हकीकत हक ।
हक के दिल की मारफत, ए तिन में हुए बेसक ॥४६॥

मोमिन उजू जब करें, पीठ देवें दोऊ जहान को ।
हौज जोए जो अर्स में, रूहें गुसल करे इनमों ॥४७॥

दम दिल पाक तब होवहीं, जब हक की आवे फिराक[१] ।
अर्स रूहें दिल जुदा करें, और सबसे होए बेबाक[२] ॥४८॥

चौदे तबक को पीठ देवहीं, ए कलमा कह्या तिन ।
कलाम अल्ला यों कहेवहीं, ए केहेनी है मोमिन ॥४९॥

ला फना सब ला[३] करें, और इला[४] बका ग्रहें हक ।
ए कलमा हकीकत मोमिनों, और हक मारफत बेसक ॥५०॥

नूर के पार नूर तजल्ला, रसूल अल्ला पोहोंचे इत ।
मोमिन उतरे नूर बिलंद से, सो याही कलमें पोहोंचें वाहेदत ॥५१॥

१. वियोग । २. फारिक (जुदा) । ३. नहीं । ४. है ।

जब हक बिना कछू ना देखे, तब बूझ हुई कलमें ।
जब यों कलमा जानिया, तब बका होत तिनसें ॥५२॥

ए मोमिनों की सरीयत, छोड़ें ना हकको दम ।
अर्स वतन अपना जानके, छोड़ें ना हक कदम ॥५३॥

महंमद ईसा इमाम, बैत[१] बका[२] निसान ।
सोई तीन सूरत महंमद की, देखावें अर्स रेहेमान ॥५४॥

दुनी किबला[३] करें पहाड़ को, और हक तरफों में नाहें ।
अर्स बका तरफ न राखत, ए देखे फना के मांहें ॥५५॥

हकें देखाया किबला, बीच पाइए मोमिन के दिल ।
ऊपर तले न दाएँ बाएँ, सूरत हमेसा असल ॥५६॥

मजाजी और हकीकी, दिल कहे भांत दोए ।
ए बेवरा हकी सूरत बिना, कर न सके दूजा कोए ॥५७॥

इतहीं रोजा इत बन्दगी, इतहीं जकात[४] ज्यारत[५] ।
साथ हकी सूरत के, मोमिनों सब न्यामत ॥५८॥

मोमिन हक बिना न देखें, एही मोमिनों ताम[६] ।
बन्दगी तवाफ[७] सब इतहीं, मोमिनों इतहीं आराम ॥५९॥

खाना पीना सब इतहीं, इतहीं मिलाप मजकूर ।
इतहीं पूरन दोस्ती, इत बरसत हक का नूर ॥६०॥

सरूप ग्रहिए हक का, अपनी रूह के अन्दर ।
पूरन सरूप दिल आइया, तब दोऊ उठे बराबर ॥६१॥

ए सरीयत अपनी मोमिनों, और है हकीकत ।
क्यों न विचार के लेवहीं, हक हादी बैठे तखत ॥६२॥

जो कदी दिल में हक लिया, कछू किया ना प्रेम मजकूर ।
क्यों कहिए ताले मोमिन, जा को लिख्या बिलन्दी नूर ॥६३॥

१. घर । २. अखंड । ३. पूज्य स्थान । ४. दान । ५. दर्शन करने वाला तीर्थ स्थान । ६. खुराक । ७. परिकरमा ।

ए हकीकत मोमिनों, और ले न सके कोए ।
बेसक होए बातें करें, तो मजकूर हजूर होए ॥६४॥

जो तूं ले हकीकत हक की, तो मौत का पी सरबत ।
मुए पीछे हो मुकाबिल, तो कर मजकूर खिलवत ॥६५॥

जो लों जाहेरी अंग ना मरें, तो लों जागें ना रूह के अंग ।
ए मजकूर रूह अंग होवहीं, अपने मासूक संग ॥६६॥

कौल फैल आए हाल आइया, तब मौत आई तोहे ।
तब रूह की नासिका को, आवेगी खुसबोए ॥६७॥

रूह नैनों दीदार कर, रूह जुबां हक सों बोल ।
रूह कानों हक बातें सुन, एही पट रूह का खोल ॥६८॥

ए सहूर करो तुम मोमिनों, जब फैल से आया हाल ।
तब रूह फरामोसी ना रहे, बोए हाल में नूरजमाल ॥६९॥

बेसक होए दीदार कर, ले जवाब होए बेसक ।
एही मोमिनों मारफत, खिलवत कर साथ हक ॥७०॥

रूह हकसों बात विचार कर, दिल परदा दे उड़ाए ।
रूह बातें वतन की, कर मासूक सों मिलाए ॥७१॥

जो गुझ अपनी रूह का, सो खोल मासूक आगूं ।
यों कर जनम सुफल, ऐसी कर हक सों तू ॥७२॥

सब अंग सुफल यों हुए, करी हकसों सलाह सबन ।
देख बोल सुन खुसबोए सों, जिनका जैसा गुन ॥७३॥

जेते अंग आसिक के, सो सारे किए सुफल ।
सोई असल रूह आसिक, जिन मोमिन अर्स दिल ॥७४॥

ए निसबत बिना होए नहीं, मासूक सों मजकूर ।
ए मजकूर इन बिध होवहीं, यों कहे हक सहूर ॥७५॥

मोमिनों हकीकत मारफत, इनमें भी बिध दोए ।
एक गरक होत इस्क में, और आरिफ[1] लदुन्नी[2] सोए ॥७६॥

एक इस्क दूजा इलम, ए दोऊ मोमिनों हक न्यामत[3] ।
इस्क गरक वाहेदत में, इलमें हक अर्स लज्जत ॥७७॥

मारफत लदुन्नी मोमिनों, बंदा हक का कामिल ।
बड़ी बुजरकी इन की, करें बातें हक सामिल ॥७८॥

सक नाहीं लदुन्नीय में, कहे अर्स की जाहेर बातन ।
करें हकसों बातें इन विध, ज्यों करें अर्स के तन ॥७९॥

हक दिया चाहें लज्जत, ताए इलम देवें बेसक ।
रूह बातें करें हकसों, देखे हौज जोए हक ॥८०॥

मारफत लदुन्नी जिन लई, सो करे हक सहूर ।
सहूर किए हाल आवहीं, सो हाल बीच हक मजकूर ॥८१॥

यों हक कहावत मोमिनों, नजीक हाल है तुम ।
हक बातें किया चाहें, रूह सों वाहेदत खसम ॥८२॥

पीछे हक सब करसी, रूह सुख लिया चाहे अब ।
सुख लेने को अवसर, पीछे लेसी मोमिन सब ॥८३॥

रूह विरहा खिन एक ना सहें, सो अब चली जात मुद्दत ।
अर्स रूहें यों भूल के, क्यों छोड़ें हक मारफत ॥८४॥

मारफत हुई हाथ हक के, क्यों ले सकिए सोए ।
ए दोस्ती तब होवहीं, जब होए प्यार बराबर दोए ॥८५॥

मारफत देवे इस्क, इस्कें होए दीदार ।
इस्कें मिलिए हकसों, इस्कें खुले पट द्वार ॥८६॥

सोई रब्द जो हकसों किया, वास्ते इस्क के ।
सो इस्क तब आइया, जब हकें दिया ए ॥८७॥

१. ब्रह्मज्ञानी । २. तारतम । ३. बहुमूल्य, अलभ्य पदार्थ ।

हांसी करी रूहन पर, दे इलम बेसक ।
मासूक हंस के तब मिले, जब हकें दिया इस्क ॥८८॥

महामत कहे ए मोमिनों, सब बातों का ए मूल ।
ए काम किया सब हुकमें, आए इमाम मसी रसूल ॥८९॥

॥प्रकरण॥२५॥चौपाई॥१९३९॥

कलस का कलस

बसरी मलकी और हकी, कही महंमद तीन सूरत ।
कारज सारे सिध किए, अव्वल बीच आखिरत ॥१॥

ए तीनों मिल किया जहूर, अव्वल आखिर रोसन ।
हक बैठे इन इलम में, तो दिल अर्स हुआ मोमिन ॥२॥

ए जुबां मैं हक की, और बोलत है हुकम ।
हक अर्स बरनन तो हुआ, जो वाहेदत बका खसम ॥३॥

गैब खिलवत जाहेर तो हुई, जो हकें कराई ए ।
ए खबर नहीं नूर को, करी लदुन्निएँ जाहेर जे ॥४॥

बरनन किया अर्स का, सो सब हिसाब अर्सें के ।
गिनती सो भी अर्स की, ए बातें मोमिन समझेंगे ॥५॥

या पहाड़ या तिनका, सो सब चीज बिध आतम ।
सब देत देखाई जाहेर, ज्यों देखिए मांहें चसम ॥६॥

और भी खूबी रूह नैन की, चीज दसों दिसा की सब देखत ।
पाताल या आसमान की, रूह नजरों सब आवत ॥७॥

रूह का एही लछन, बाहेर अन्दर नहीं दोए ।
तन दिल दोऊ एकै, रूह कहियत हैं सोए ॥८॥

दूर नजीक भी अर्स के, सो भी पाइए अर्स सहूर ।
नैन चरन अंग तीनों हीं, एक यादै में हजूर ॥९॥

चाल मिलाप या दीदार, ए तीनों रूह के नेक ।
जब हीं याद जो आवहीं, तब हीं होए मांहें एक ॥१०॥

यातो जिमी के दूर लग, या नजीक आगूं नजर ।
दूर नजीक सब याद में, ए दोऊ बराबर ॥११॥

अर्स दिल मोमिन तो कह्या, जो हक सों रूह निसबत ।
ना तो अर्स दिल आदमी का, क्यों कह्या जाए ख्वाब में इत ॥१२॥

रूह तन की असल अर्स में, अर्स ख्वाब नहीं तफावत ।
तो कह्या सेहेरग से नजीक, हक अर्स दुनी बीच इत ॥१३॥

दिल मोमिन अर्स तन बीच में, उन दिल बीच ए दिल ।
केहेने को ए दिल है, है अर्सैं दिल असल ॥१४॥

तो हक नजीक कह्या रूहन को, और नूर नजीक फरिस्तन ।
और आम खलक देखन को, जो कहे जुलमत से तन ॥१५॥

ए तीनों गिरो कही जाहेर, पर ए बीच मारफत राह ।
ए कलाम अल्ला में बेवरा, योंही कह्या रूह अल्लाह ॥१६॥

पर आम खलक ना समझैं, जाकी पैदास कही जुलमत ।
इलम लदुन्नी से जानत, रूह मोमिन बीच वाहेदत ॥१७॥

इलम नुकते की साहेदी, हक सूरत अर्स मारफत ।
सो सब बातें फुरमान में, खोले हकी सूरत हकीकत ॥१८॥

बसरी मलकी और हकी, जो कही महंमद तीन सूरत ।
दो देवे हक की साहेदी, फरदा रोज कयामत ॥१९॥

नबी नबुवत कुरान माजजा, ए दोऊ साबित होवें इन से ।
कुरान न खुले बिना खिताब, ना तो लिख्या सब इनमें ॥२०॥

इन साहेदिएँ सब मिलसी, हिंदू या मुसलमीन ।
मुआ दज्जाल सब का कुफर, यों सब पाक हुए एक दीन ॥२१॥

और भी साहेदी फुरमान में, तबक चौदे जरा नाहें ।
खेल नाम धर्‌या सब केहेने को, ए जरा नहीं अर्स मांहें ॥२२॥

और ठौर न काहूं अर्स बिना, अर्स न कहूं इंतहाए ।
जो आप कछुए है नहीं, तिन क्यों अर्स नजरों आए ॥२३॥

ए अर्स देखें रूह मोमिन, जो उतरे नूर बिलन्द से ।
नाहीं क्यों देखे है को, ए तो जाहेर लिख्या किताबों में ॥२४॥

बंझापूत फूल आकास, और ससिक सिंग ।
कह्या वेद कतेब में, भंग न कछू अभंग ॥२५॥

यों असल खेल की है नहीं, ए तो दिल में देखाई देत ।
किया हुकमें महंमद रूहों देखने, तो भिस्त में इनों को लेत ॥२६॥

हक हुकमें सब बेवरा किया, वास्ते हादी रूहन ।
जो सहूर कीजे मिल महामती, तो लज्जत लीजे अर्स तन ॥२७॥

॥प्रकरण॥२६॥चौपाई॥१९६६॥

मता हक-ताला ने मोमिनों को दिया

एता मता तुम को दिया, सो जानत है तुम दिल ।
बेसक इलमें ना समझे, तो सहूर करो सब मिल ॥१॥

ए तो देख्या बड़ा अचरज, पाए सुख बका अपार ।
भी बेसक हुए हक इलमें, तो भी छूटे ना नींद विकार ॥२॥

ए बोलावत है हुकम, खुदी भी हुकम की ।
तो हमेसा पाक होए, हक इस्क प्याले पी ॥३॥

खुदी हक हुकम की, सो तो भूलें नाहीं कब ।
वह काम सोई करसी, जो भावे अपने रब ॥४॥

हुकम तो है हक का, और खुदी भी ना हुकम बिन ।
खुदी हुकम दोऊ हक के, इत क्या लगे रूहन ॥५॥

हक केहेवे नेकों को, दोस्त रखता हों मैं ।
या खुदी या हुकम, टेढ़ी होए नहीं इनों सें ।।६।।

हुकमें लिया भेख रूह का, सो भी हाँसी खुसाली रूहन ।
क्यों सिर लेना खुदी हुकम, पाक होए पकड़े चरन ।।७।।

जब भेख काछा रूह का, फैल सोई किया चाहे तिन ।
नाम धराए क्यों रद करे, हक एती देत बड़ाई जिन ।।८।।

ए निस दिन बातें विचार हीं, सोई हुकम हुज्जत मोमिन ।
पाक हुआ सो जो अर्स दिल, जाके हक कदम तले तन ।।९।।

हूकम तो तन में सही, और लिए रूह की हुज्जत ।
हिस्सा चाहिए तिन का, सो भी मांहें बोलत ॥१०॥

कह्या दिल अर्स मोमिन का, दिल कह्या न हुकम का ।
देखो इनों का बेवरा, हिस्से रूह के हैं बका ॥११॥

मोमिन तन में हुकम, तामें हिस्से रूह के देख ।
दिल अर्स हक इलम, रूह की हुज्जत नाम भेख ॥१२॥

जो कदी रूहें इत हैं नहीं, तो भी एता मता लिए आमर[1] ।
सो अर्स बका हक बिना, ले हुज्जत रहे क्यों कर ॥१३॥

एता मता रूह का, हुकम के दरम्यान ।
तिन का जोरा चाहिए, जो हक आगूं होसी बयान ॥१४॥

हाँसी न होसी हुकम पर, है हाँसी रूहों पर ।
जा को गुनाह पोहोंच्या खिलवतें, कहे कलाम अल्ला यों कर ॥१५॥

मोमिन बैठे खेल में, अजूं बीच ख्वाब ।
गुनाह पेहेले पोहोंच्या अर्स में, करें मासूक रूहें हिसाब ॥१६॥

हक हुकम तो है सब में, बिना हुकम कोई नाहें ।
पर यामें हुकम नजर लिए, और रूह का बड़ा मता या मांहें ॥१७॥

१. हुकम ।

जेता हिस्सा तन में जिनका, सो जोरा तेता किया चाहे ।
ए विचार करें सो मोमिन, हक हुकम देसी गुहाए[1] ॥१८॥

ताथें हुकम के सिर दोस दे, बैठ न सकें मोमिन ।
अर्स दिल खुदी से क्यों डरें, लिए हक इलम रोसन ॥१९॥

गुनाह नूरतजल्ला मिनें, पोहोंच्या रूहों का जित ।
कह्या गुनाह कुलफ मुंह मोतिन, दिल महंमद कुंजी खोलत ॥२०॥

हिसाब जिनों हाथ हक के, अर्स-अजीम के मांहें ।
अर्स तन बीच खिलवत, ताको डर जरा कहूं नाहें ॥२१॥

करी हाँसी हकें रूहों पर, जिन वास्ते किया खेल ।
रूहों बहस किया इस्क का, बेर तीन देखाया मांहें लैल ॥२२॥

हक आगूं कहे महंमद, मोहे अर्स में बिना उमत ।
हकें दिया प्याला मेहेर का, कहे मोहे मीठा न लगे सरबत ॥२३॥

हकें दोस्त कहे औलिए, भए ऐसे बुजरक ।
इनों को देखे से सवाब, जैसे याद किए होए हक ॥२४॥

जित पर जले जबराईल, पोहोंच्या न बिलंदी नूर ।
बिना रूहें इसारतें खिलवत, दूजा ए कौन जाने मजकूर ॥२५॥

अलस्तो बे रब कह्या हक ने, तब जवाब दिया रूहन ।
कोई और होवे तो देवहीं, ए फुरमान कहे सुकन ॥२६॥

तुम रूहें जात नासूत में, जाओगे मुझे भूल ।
तब तुम ईमान ल्याइयो, मैं भेजोंगा रसूल ॥२७॥

तुम माहों मांहें रहियो साहेद, इत मैं भी साहेद हों ।
ए जिन भूलो तुम सुकन, मैं फुरमान भेजों तुमको ॥२८॥

और साहेद किए हैं फरिस्ते, सो भी देवेंगे साहेदी ।
सो रसूल याद देसी तुमें, जो मेरे आगूं हुई इतकी ॥२९॥

१. साक्षी ।

ऐसी बड़ाई औलियों, हक अपने मुख दें ।
कोई याको न जाने मुझ बिना, मैं छिपाए तले कबाए के ॥३०॥

मांगी हुकमें रूह की हुज्जतें, दीजे दुनी में लाड़ लज्जत ।
सो हक आप मंगावत, कर हाँसी जुदाई बीच वाहेदत ॥३१॥

कबूं न जुदागी बीच वाहेदत, ए इलमें किए बेसक ।
तेहेकीक बैठे तले कदमों, न जुदे रूहें हादी हक ॥३२॥

हुआ रब्द वास्ते इस्क, सबों बड़ा कह्या अपना ।
हकें हाँसी करी हादी रूहोंसों, कहे देखो खेल फना ॥३३॥

खेल का जोस आया सबों, इस्क न रह्या किन ।
सब चाहें साहेबी खेल की, हक इस्क न नजीक तिन ॥३४॥

था रब्द सबों इस्क का, हक देत फेर फेर याद ।
रूहें क्योंए न छोड़ें खेल को, दुख लाग्या ऐसा कोई स्वाद ॥३५॥

जब देखिए सामी खेल के, तो बीच पड़्यो ब्रह्मांड ।
एती जुदाई हक अर्स के, और खेल वजूद जो पिंड ॥३६॥

हक इलमें ए पिंड देखिए, ए पिंड बीच अर्स तन ।
एक जरा जुदागी ना रही, अर्स वाहेदत बीच वतन ॥३७॥

जाहेर नजरों खेल देखिए, कहूं नजीक न अर्स हक ।
तरफ भी न पाई किनहूं, बीच इन चौदे तबक ॥३८॥

जबथें पैदा भई दुनियां, रही दूर दूर थें दूर ।
फना बका को न पोहोंचहीं, ताथें कोई न हुआ हजूर ॥३९॥

दोऊ गिरो उतरी दोऊ अर्स से, रूहें और फरिस्ते ।
हकें इलम भेज्या इनों पर, सो ले दोऊ अर्सों पोहोंचे ए ॥४०॥

आए फरिस्ते नूर मकान से, अर्स अजीम मकान रूहन ।
कलाम अल्ला हक इलम, ए आए ऊपर रूह मोमिन ॥४१॥

दोऊ गिरो जो उतरी, दोऊ अर्सों से आई सोए ।
सो आप अपने अर्स में, बिना लदुन्नी न पोहोंचे कोए ॥४२॥

आप अपने अर्स में, जाए ना सके बिना इलम ।
तो फुरमान इलम भेजिया, रूहें दरगाही जान खसम ॥४३॥

तो अर्स कह्या दिल मोमिन, जो पकड़्या इलम हक ।
हक सूरत सुध अर्सों की, रूहों रही न जरा सक ॥४४॥

सोई मोमिन जा को सक नहीं, और दिल अर्स हक हुकम ।
पट खोले नूर पार के, आए दिल में हक कदम ॥४५॥

पेहेले पट दे खेल देखाइया, दई फरामोसी हाँसी को ।
दिया बेसक इलम अपना, तो भी न आवें होस मों ॥४६॥

इलमें अंदर जगाइया, तिन में जरा न सक ।
कहे हुई है होसी अर्सों की, रूहें बैठी कदम तले हक ॥४७॥

इन बातों सक जरा नहीं, तो दिल अर्स कह्या मोमिन ।
तो भी टले ना बेहोसी, वास्ते हाँसी बीच वतन ॥४८॥

विरहा सुनत रूहें अर्स की, तबहीं जात उड़ तन ।
सो गवाए याद कर कर हकें, जो बीतक अर्स वचन ॥४९॥

मैं जान्या प्रेम आवसी, विरहे के वचनों गाए ।
सो अव्वल से ले अबलों, विरहा गाया लडाए लडाए ॥५०॥

सो गाए विरहा न आइया, प्रेम पड़्या बीच चतुराए ।
हाँसी कराई हुकमें, वचनों प्यार लगाए ॥५१॥

सो गाए गाए हुआ दिल सखत, मूल इस्क गया भुलाए ।
मन चित्त बुध अहंकारे, गुझ अर्स कह्या बनाए ॥५२॥

अर्स मता जेता हुता, किया जाहेर नजर में ले ।
हमें न आया इस्क सुपने, ए किया वास्ते जिन के ॥५३॥

चौदे तबक बेसक हुए, इन बानी के रोसन ।
सो इलम ले कायम हुए, सुख भिस्त पाई सबन ॥५४॥
हक खिलवत गाए सें, जान्या हम को देसी जगाए ।
इस्क पूरा आवसी, पर हकें हाँसी करी उलटाए ॥५५॥
जो देते हम को इस्क, तो क्यों सकें हम गाए ।
दिल अर्स पोहोंचे रूह इस्कें, तो इत क्यों रह्यो रूहों जाए ॥५६॥
सब अंग हमारे हक हाथ में, इस्क मांगें रोए रोए ।
सब अंग हमारे बांध के, हक आप करें हाँसी सोए ॥५७॥
हम हुकम के हाथ में, हक के हाथ हुकम ।
इत हमारा क्या चले, ज्यों जानें त्यों करे खसम ॥५८॥
महामत कहे ए मोमिनों, हकें भुलाए हाँसी कों ।
हम दौड़े जान्या लें इस्क, हम को डारे बका इलम मों ॥५९॥

॥प्रकरण॥२७॥चौपाई॥२०२५॥

बरनन कराए मुझपे, हकें सब अपने अंग ।
सो विध विध विवेक सों, सो गाया दिल रूह संग ॥१॥
जो जोरा होए इस्क का, तो निकसे ना मुख दम ।
सो गाए के इस्क गमाइया, जोरा कराया इलम ॥२॥
इलम दिया याही वास्ते, कहूं जरा न रही सक ।
अव्वल से आज लगे, ऐसा कराया हक ॥३॥
इस्क हमसे जुदा किया, दिया दुनी को सुख कायम ।
वचन गवाए हम पे, जो हमेसगी दायम ॥४॥
नैन श्रवन या रसना, जो अंग किए बरनन ।
तिन इस्क देखाया हक का, और देख्या न या बिन ॥५॥
जो अंग देखे आखिर लग, तिन से देखे चौदे तबक ।
और काहूं न देख्या कछूए, बिना हक इस्क ॥६॥

बूझी तुमारी साहेबी, दिया सब अंगों इस्क देखाए ।
तुमारे हर अंगों ऐसा किया, रहे चौदे तबक भराए ।।७।।

रसनाएं इस्क देखाइया, तिन भर्‌या जिमी आसमान ।
इस्क बिना न पाइए, बीच सकल जहान ।।८।।

सब अंग देखे ऐसे हक के, ऐसा दिया इलम ।
हक इस्क सबों में पसर्‌या, इस्क न जरा मांहें हम ।।९।।

यों हर अंग हक के, सब सो ए किए रोसन ।
आसमान जिमी के बीच में, कछू देख्या न इस्क बिन ॥१०॥

इस्क हमारा हक सों, दिया हुकमें आड़ा पट ।
हक का इस्क हम सों, किया दुनियां में प्रगट ॥११॥

यों हाँसी हम पर करी, बनाए हमारे अक्स ।
इस्क लिया खैंच के, होसी एही हाँसी बीच अर्स ॥१२॥

हक फेर फेर ऊपर जगावहीं, बिना हुकम न जागे अंदर ।
फेर फेर बड़ाई मांगें इत, हक हाँसी करें इनों पर ॥१३॥

मांगे दुनी में हक लज्जत, सो भी बुजरकी वास्ते ।
इलमें हुए यों बेसक, एक जरा न दुनियां ए ॥१४॥

यों जान मांगें फना मिने, लज्जत दुनी में हक ।
यों हुकम हाँसी करावहीं, दे अपना इलम बेसक ॥१५॥

आप मंगावें आप देवहीं, ए सब हाँसी कों ।
ए सब जानें मोमिन, सक नहीं इनमों ॥१६॥

कैयों पेहेचान होवहीं, कैयों नहीं पेहेचान ।
सो सब होत हाँसीय को, करत आप सुभान ॥१७॥

ए किया वास्ते इस्क बेवरे, सो इस्क न आया किन ।
काहूं जोस जरा आइया, काहूं जरा न किस तन ॥१८॥

वास्ते रब्द इस्क के, जो किया बीच खिलवत ।
सो हुकम आड़ा सब दिलों, तो इस्क न काहूं आवत ॥१९॥

इलम दिया सबन को, किया अर्स दिल मोमिन ।
दूर कर सब हिजाब[1], आप आए अर्स दिल इन ॥२०॥

पेहेचान सब अर्सों की, अर्सों बीच की हकीकत ।
सो जरा छिपी ना रखी, सब दई हक मारफत ॥२१॥

पर इस्क न दिया आवने, वास्ते रब्द के ।
हक आए इस्क क्यों न आवहीं, किया हुकमें हाँसी को ए ॥२२॥

रूहों लज्जत मांगी हकपे, अर्स की दुनियां मांहें ।
तो इलम दिया सबों अपना, बिना इलम लज्जत नाहें ॥२३॥

जो हक देवें इस्क, तो इस्क देवे सब उड़ाए ।
सुध न लेवे वार पार की, देवे वाहेदत बीच डुबाए ॥२४॥

जब इलम सबों आइया, सो कछू सखती देवे दिल ।
तिन सखती तन अर्स की, पाइए लज्जत असल ॥२५॥

हुकम मांगे देवे हुकम, सो सब वास्ते हाँसी के ।
ए बातें होसी सब खिलवतें, इस्क रब्द किया जे ॥२६॥

अनेक हकें हिकमत करी, जो इन जुबां कही न जाए ।
होसी हाँसी सबों अर्स में, जब करसी बातें बनाए ॥२७॥

हकें किया सब हाँसीय को, जो जरे जरा मांहें खेल ।
इस्क रब्द के कारने, तीन बेर आए मांहें लैल ॥२८॥

हक हाँसी बातें जानें हक, या जाने हक इलम ।
इन इलमें सिखाई रूहों, सो बातें अर्स में करसी हम ॥२९॥

एही खुलासा सब बात का, हकें किया हाँसी को ।
रेहेता रब्द रूहों इस्क का, सब केहेतियां बड़ा हम मों ॥३०॥

१. परदा ।

याही वास्ते खेल देखाइया, इस्क गया सबों भूल ।
फेर के सब सुध दई, भेज फुरमान रसूल ॥३१॥

इनमें इसारतें रमूजें, सो खोल न सके कोए ।
कुंजी भेजी हाथ रूहअल्ला, इमाम हाथ खोलाया सोए ॥३२॥

हाँसी याही बात की, किए सब खेल में खबरदार ।
तो भी इस्क न आवत, हुई हाँसी बे-सुमार ॥३३॥

हक इस्क जाहेर हुआ, खेल मांहें दम दम ।
और न चौदे तबकों, बिना इस्क खसम ॥३४॥

ऐसा इलम हकें दिया, हुआ इस्क चौदे भवन ।
मूल डार पात पसरया, नजरों आया सबन ॥३५॥

तले सात तबक जिमीय के, या बीच ऊपर आसमान ।
मूल बिरिख पात फूल फैलिया, सब हुआ इस्क सुभान ॥३६॥

नजरों आया सबन के, जब पसरया ए इलम ।
तब और न देखे कछू नजरों, बिना इस्क खसम ॥३७॥

हकें अर्स कह्या दिल मोमिन, ऐसी दई बुजरकी रूहन ।
ढूंढ़ ढूंढ़ थके चौदे तबकों, पर बका तरफ न पाई किन ॥३८॥

तबक चौदमें मलकूत, ला हवा सुन्य तिन पर ।
ता पर बका नूरमकान, जो नूरजलाल अछर ॥३९॥

कई ऐसे खेल पैदा फना, होंए नूरजलाल के एक पल ।
इन कादर की कुदरत, ऐसा रखत है बल ॥४०॥

तरफ अर्स अजीम की, कोई जाने ना एक नूर बिन ।
पर गुझ मता न जानहीं, जो है नूरजमाल बातन ॥४१॥

सो गुझ हक हादीय का, दिया खेल में बीच मोमिन ।
तो दिल अर्स किया हकें, जो अर्स अजीम में इनों तन ॥४२॥

हकें अर्स की सुध सब दई, पाई हकीकत मारफत ।
हक हादी रूहें खिलवत, ए बीच असल वाहेदत ॥४३॥
कहे हुकमें महामत मोमिनों, हक इस्क बोले बेसक ।
इस्क रब्द वाहेदत में, हक उलट हुए आसिक ॥४४॥

॥प्रकरण॥२८॥चौपाई॥२०६९॥

हक मेहेबूब के जवाब

रूहों मैं-रे तुमारा आसिक, मैं सुख सदा तुमें चाहों ।
वास्ते तुमारे कई विध के, इस्क अंग उपजाओं ॥१॥
मैं आसिक तुमारा केहेलाया, मैं लिखे इस्क के बोल ।
मासूक कर लिखे तुमको, सो भी लिए ना तुम कौल ॥२॥
अव्वल बीच और आखिर, लिखे तीनों ठौर निसान ।
ए बीतक हम तुम जानहीं, भेजी तुमको पेहेचान ॥३॥
दो बेर दुनियां नई कर, किन दो बेर डुबाई जहान ।
तुमको लैलत कदर में, दो बेर किन बचाए तोफान ॥४॥
फेर तीसरी बेर दुनी कर, जिनमें होसी फजर ।
सब विध बेसक करके, तुमें खेल देखाया और नजर ॥५॥
तुम जो अरवाहें अर्स की, साथ हक जात निसबत ।
ए जो दोस्ती हक हमेसगी, बीच खिलवत के वाहेदत ॥६॥
कोई तरफ न जाने अर्स की, तो मुझे जाने क्यों कर ।
नूरजलाल नूर मकाने, एक इने मेरे तरफ की खबर ॥७॥
दूजा तरफ तो जानहीं, कोई और ठौर बका होए ।
नाहीं क्यों जाने तरफ है की, किन ठौर से तरफ ले कोए ॥८॥
खेल कई कोट एक पल में, देख उड़ावे पैदा कर ।
ऐसी कुदरत नूरजलालपे, नूर-मकान ऐसा कादर ॥९॥

ए बातून जो मेरे अर्स का, सो सुध नूर को भी नाहें ।
मेरी गुझ अर्स जो खिलवत, तुम इन खिलवत के मांहें ॥१०॥

दोस्ती हक हमेसगी, क्यों भुलाए दई मोमिन ।
तुम जो रूहें अर्स की, मेरे अर्स के तन ॥११॥

अंग हादी मेरे नूर से, तुम रूहें अंग हादी नूर ।
तो अर्स कह्या तुम दिल को, जो रूहें वाहिद[1] तन हजूर ॥१२॥

और भी लिख्या महंमद को, आसमान से तेहेतसरा[2] ।
ए बहुविध बेहेरूल हैवान[3], जल सिर लग कुफर भर्‌या ॥१३॥

कई विध के मांहें हैवान, कई जिन देव इन्सान ।
बीच मरजिया होए काढ़ी सीप, मिने मोती महंमद पेहेचान ॥१४॥

सो तुम अजूं न समझे, मैं कर लिख्या मासूक ।
ए सुकन सुन तुम मोमिनों, हाए हाए हुए नहीं टूक टूक ॥१५॥

बसरी मलकी हकी लिखी, आई महंमद तीन सूरत ।
एक अव्वल दो आखिर, सो वास्ते तुम उमत ॥१६॥

बंदगी मजाजी और हकीकी, ए जो कहियाँ जुदियां दोए ।
एक फरज दूजा इस्क, क्यों न देख्या बेवरा सोए ॥१७॥

ए जो फरज मजाजी बंदगी, बीच नासूत हक से दूर ।
होए मासूक बंदगी अर्स में, कही बका हक हजूर ॥१८॥

दोस्ती कही हक की, तिन में समनून पातसाह ।
पातसाह कौन होए बिना मासूक, देखो इस्म[4] कुरान खुलासा ॥१९॥

अव्वल दोस्ती हक की, लिखी मांहें फुरमान ।
पीछे दोस्ती बंदन की, क्यों करी न पेहेचान ॥२०॥

मैं कदीम लिखी मेरी दोस्ती, ए किए न सहूर सुकन ।
तुमको बेसक किए इलम सों, हाए हाए अजूं याद न आवें रूहन ॥२१॥

१. एक । २. पाताल । ३. पशुओं का दरियाव (भवसागर के जीव) । ४. नाम ।

दोस्त मेरे मोमिन, और मासूक हादी बेसक ।
तो नाम लिख्या अपना, मैं तुमारा आसिक ॥२२॥

मैं लिख्या है तुम को, जो एक करो मोहे साद ।
तो दस बेर मैं जी जी कहूं, कर कर तुमें याद ॥२३॥

और भी लिख्या मैं तुमको, मैं करत तुमारी जिकर ।
मेरी तुम पीछे करत हों, क्यों कर ना देखी फिकर ॥२४॥

ए जो मैं लिखी बुजरकियाँ, सो है कोई तुम बिन ।
जित भेजों मासूक अपना, जो चीन्हे मेरे सुकन ॥२५॥

मैं किन पर भेजों इसारतें, पढ़ी जाएं न रमूजें किन ।
तुम जानत हो कोई दूसरा, है बिना अर्स रूहन ॥२६॥

ए जो औलाद आदम की, सब पूजत हैं हवा ।
सो जाहेर लिख्या फुरमान में, क्या तुम पाया न खुलासा ॥२७॥

ए जो दुनियां खेल कबूतर, तित भी दिए कुलफ दिल पर ।
पावे हकीकत कलाम अल्लाह की, सो खुले ना लदुन्नी बिगर ॥२८॥

सो तो दिया मैं तुम को, सो खुले ना बिना तुम ।
जो मेरी सुध द्यो औरों को, तित चले तुमारा हुकम ॥२९॥

ए सुकन हकें अव्वल कहे, अर्स में महंमद को ।
केतेक जाहेर कीजियो, बाकी गुझ रखियो दिल मों ॥३०॥

सरा सुकन कराए जाहेर, गुझ रखे बका बातन ।
मूंद्या रख्या द्वार मारफत का, वास्ते पेहेचान अर्स रूहन ॥३१॥

पट बका किने न खोलिया, कई अवतार हुए तीर्थंकर ।
हक इलम बिना क्योंए ना खुले, कई लाखों हुए पैगंमर ॥३२॥

अर्स बका पट खोलसी, आखिर बखत मोमिन ।
साहेब जमाने की मेहेर से, दिन करसी बका रोसन ॥३३॥

राह देखाई तौहिद की, महंमद चढ़ उतर ।
सो ए तुमारे वास्ते, क्यों न देखो सहूर कर ॥३४॥

और जो पैदा जुलमत से, सो तुम जानत हो सब ।
ए क्यों छोड़ें हवा को, जिनों असल देख्या एही रब ॥३५॥

इलम लदुन्नी तुमपे, जिन पेहेले पाई खबर ।
और न कोई वाहेदत बिना, तो इत आवेंगे क्यों कर ॥३६॥

मेयराज हुआ महंमद पर, सो कौल अर्स बका के ।
सो साहेदी के दो एक सुकन, बीच मुहककों पसरे ॥३७॥

बका सुकन सब मेयराज के, जाहेर किए सब में ।
सब अर्स बका मुख बोलहीं, और सुकन ना गिरो से ॥३८॥

सो खासी गिरो महंमद की, तामें ए बात होत निस दिन ।
मुख छोटे बड़े एही सुकन, और बोले न बका बिन ॥३९॥

बका सब्द मुख सब के, सो इलम सब में गया पसर ।
सब्द फना को न देवे पैठने, ऐसा किया बखत रूहों आखिर ॥४०॥

सब्द फना गए रात में, किया बका सब्दों फजर ।
कुफर अंधेरी उड़ गई, बोल पाइए न बका बिगर ॥४१॥

ए कह्या था अव्वल, रसूलें इत आए ।
सो रूहें रूहअल्ला इमाम, फजर करी बनाए ॥४२॥

अव्वल कह्या इलम ल्यावसी, आया तिनसे ज्यादा बेसक ।
सो नीके लिया मोमिनों, पाई अर्स मारफत हक ॥४३॥

ए इलम लिए ऐसा होत है, आप बेसक होत हैयात ।
और कायम हुए देखे सब को, पावे दीदार बातून हक जात ॥४४॥

देखी अपनी भिस्त आप नजरों, जो होसी बका परवान ।
सब करम काटे हक इलम सों, ए देखी बेसक मेहेर सुभान ॥४५॥

हक तरफ जानें नूर अछर, और दूजा न जाने कोए ।
पर बातून सुध तिन को नहीं, हक इलम देखावे सोए ॥४६॥

कई सुख कायम इन इलम में, आवें न मांहें हिसाब ।
हक सुराही बका खिलवत में, ए इलम पिलावे सराब ॥४७॥

सो मैं भेज्या तुमें मोमिनों , देखो पोहोंच्या इस्क चौदे तबक ।
ऐसा इस्क मेरा तुमसों, इनमें पाइए न जरा सक ॥४८॥

यों किया वास्ते ईमान के, आवे आखिर रूहन ।
सो आए हुआ सबों रोसन, जाहेर बका अर्स दिन ॥४९॥

अव्वल से बीच अब लग, तरफ पाई न बका की ।
महंमद एता ही बोलिया, जासों ईसा पावें साहेदी ॥५०॥

सो लई रूहअल्ला साहेदी, दूजी साहेदी आप दई ।
त्यों करी इमामें जाहेर, ज्यों सब में रोसन भई ॥५१॥

लई ईसे महंमद की साहेदी, बका जाहेर किया इमाम ।
हक हादी रूहन की, करी खिलवत जाहेर तमाम ॥५२॥

इन आखिर दिनों इमाम, बानी बोले न बका बिन ।
सो सिर ले सुकन गिरोहने, कायम किए सबन ॥५३॥

दुनियां चौदे तबक के, दिए इलमें मुरदे उठाए ।
ताए मौत न होवे कबहूं, लिए बका मिने बैठाए ॥५४॥

बड़ाई इन इलम की, क्यों इन मुख करों सिफत ।
सो आया तुममें मोमिनों, जा को सब्द न कोई पोहोंचत ॥५५॥

और सराब मेरी सुराही का, सो रख्या था मोहोर कर ।
सो खोलने बोहोतों किया, पर क्यों खोलें कबूतर ॥५६॥

सो रख्या तुमारे वास्ते, सो तुमहीं ल्यों दिल धर ।
लिखे फूल प्याले तुम ताले, अछूत पियो भर भर ॥५७॥

सराब मेरी सुराही का, सो रूहों मस्ती देवे पूरन ।
दे इलम लदुन्नी लज्जत, हक बका अर्स तन ॥५८॥

जो बैठे हैं होए पहाड़ ज्यों, सो उड़ाए असराफीलें सूर ।
सूरें खोले मगज मुसाफ के, हुए जाहेर तजल्ला नूर ॥५९॥

तब उड़े काफर हुते जो पहाड़ से, हुए मोमिनों बान चूर ।
लगे और बान अर्स इलमें, तिन हुए कायम नूर हजूर ॥६०॥

जो लिखी सिफतें फुरमान में, सो सब तुम अर्स रूहन ।
और सिफत तो होवहीं, जो कोई होवे वाहेदत बिन ॥६१॥

चौदे तबक पढ़ पढ़ गए, किन खोली नहीं किताब ।
इसारतें रमूजें क्यों खुलें, देखो किन खोलाई दे खिताब ॥६२॥

मुकता हरफ तुम वास्ते, अखत्यार दिया हादी पर ।
जो चौदे तबक दुनी मिले, तो माएने होए न हादी बिगर ॥६३॥

जाहेर खिताब हादी पर, दिया वास्ते मोमिन ।
सो मुकता हरफ के माएने, होए न लदुन्नी बिन ॥६४॥

सो दिया लदुन्नी तुम को, तुम खोलो मुकता हरफ ।
मैं अर्स किया दिल मोमिन, जाकी पाई न किन तरफ ॥६५॥

ए जाहेर तुमारा माजजा, पढ़े हरफ कर पढ़ते थे ।
ए भेद हक हादी रूहों, बीच खिलवत का जे ॥६६॥

सो रख्या तुमारे वास्ते, ए खोलो तुम मिल ।
दुनी पावे ना इन तरफ को, सो बीच अर्स तुमारे दिल ॥६७॥

हक बका मता जाहेर किया, पर ए समझया नाहीं कोए ।
कह्या हरफै के बयान में, बिना ताले न पेहेचान होए ॥६८॥

ए बयान पुकारे जाहेर, इत पोहोंचे ना दुनी सहूर ।
ए हादी जाने या अर्स रूहें, हक खिलवत का मजकूर ॥६९॥

तरफ भी किन पाई नहीं, पावे तो जो दूसरा होए ।
तुम तो बीच वाहेदत के, और जरा न कित काहूं कोए ॥७०॥

तुम जानो हम जाहेर, होएं जुदे हक बिगर ।
हम तुम अर्स में एक तन, तुम जुदे होए सको क्यों कर ॥७१॥

दुनी जुदे तुमें तो जानहीं, जो तुम जुदे हो मुझ सें ।
हम तुम होसी भेले जाहेर, अपन वाहेदत हैं अर्स में ॥७२॥

मैं तेहेत-कबाए[1] तुमको रखे, कोई जाने ना मुझ बिन ।
तुमको तब सब देखसी, होसी जाहेर बका अर्स दिन ॥७३॥

जब पेहेले मोको सब जानसी, तब होसी तुमारी पेहेचान ।
हम तुम अर्स जाहेर हुए, दुनी कायम होसी निदान ॥७४॥

मैं तुमारा मासूक, तुम मेरे आसिक ।
और तुम मासूक मैं आसिक , ए मैं पुकारया मांहें खलक ॥७५॥

हैं को नाहीं कीजिए, सो तो कबूं न होए ।
नाहीं को है कीजिए, सो कर न सके कोए ॥७६॥

हक आप काजी होए बैठसी, सो क्या सहूर न किए सुकन ।
ला सरीक न बैठे किन में, ना कोई वाहेदत बिन ॥७७॥

सहूर बिना सब रेहे गया, और सहूर लदुन्नी मांहें ।
सो तो सूरत हकीय पे, और वाहेदत बिना कोई नाहें ॥७८॥

चौदे तबक इतना नहीं, जाके कीजे टूक दोए ।
बिना वाहेदत कछूए ना रख्या, क्यों ना देख्या लिख्या सोए ॥७९॥

दई कुंजी सनाखत[2] तुम को, मैं भेज्या मासूक रसूल ।
बेसक करियां दे इलम, सो भी गैयां तुम भूल ॥८०॥

तुम बैठे जिमी नासूती, आड़ा मलकूत जबरूत ।
सात आसमान हवा बीच में, मैं बैठा ऊपर लाहूत ॥८१॥

१. खिलवत खाना में । २. पहेचान ।

सो दूर राह आसमान लग, बीच ऐसे सात आसमान ।
सो भी राह फरिस्तन की, ऊपर जुलमत ला मकान ॥८२॥

नूर-मकान हुआ तिन पर, राह चले ना नूर पर ।
जित पर जले जबराईल, तित वजूद आदम पोहोंचे क्यों कर ॥८३॥

तित पोहोंच्या मेरा मासूक, कई गुझ बातें करी हजूर ।
सो फिर्‌या तुम रूहों वास्ते, आए जाहेर करी मजकूर ॥८४॥

मैं तुम पे भेजी रूह अपनी, अपन एते पड़े थे बीच दूर ।
मैं इलम भेज्या बेसक, तुमें दम में लिए हजूर ॥८५॥

राह सेहेरग सें देखाई नजीक, दई हादिएँ हकीकत ।
पुल-सरात सें फिराए के, पोहोंचाए अर्स वाहेदत ॥८६॥

ऐसे परदेस में बैठाए के, इन बिध लिखी गुहाए ।
इन धनी की गुहाई ले ले, हाए हाए उड़त ना अरवाए ॥८७॥

मैं साख देवाई दोऊ हादियों पे, सो तुमें मिले सब निसान ।
अब तो बोले सब कागद, योंही बोली सब जहान ॥८८॥

अब पांचों तत्व पुकारहीं, आई रोड़े बीच आवाज ।
सो सब किए तुम कायम, वास्ते तुमारे राज ॥८९॥

इस्क सबों में अति बड़ा, बका भोम चेतन ।
दायम नजर तले नूर के, पेहेचान सबों पूरन ॥९०॥

सो ए करें तुमारी बंदगी, एही इनों जिकर ।
इनों सिर हक एक तुम हीं, और कोई ना वाहेदत बिगर ॥९१॥

ए कायम सब आगे ही किए, तुम हादी रूहों वास्ते ।
जो देखो अन्दर विचार के, तो रूह साहेदी देवे ए ॥९२॥

जिन हरबराओ[1] मोमिनों, हुकम करत आपे काम ।
खोल देखो आंखें रूह की, जिन देखो दृष्ट चाम ॥९३॥

१. जल्दी (जल्दबाजी) ।

राज रोज रूहन का, जब पोहोंच्या इत आए ।
तखत बैठे साह कहावते, देखो क्यों डारे उलटाए ॥९४॥

पैगाम दिए तुम जिन को, जो कहावते थे सुलतान ।
सो पटके उसी हुकमें, जिन फेरया हादी फुरमान ॥९५॥

भरत खंड सुलतान कहावते, सो दिए सब फंदाए ।
इन विध उरझे आपमें, सो किनहूं न निकस्यो जाए ॥९६॥

उलट पलट दुनियां भई, तो भी देखत नाहीं कोए ।
काढ़ ईमान कुफर दिया, ए जो सबे दुनी दीन दोए ॥९७॥

हुकमें वेद कतेब में, लिखे लाखों निसान ।
सो मिले कौल देखे तुम, हाए हाए अजूं न आवे ईमान ॥९८॥

चाक[1] चढ़ी सब दुनियां, आजूज[2] माजूज[3] हुए जोर ।
सो तुम अजूं न देखत, एता पड़्या आलम में सोर ॥९९॥

हुकम ल्याया जो हकीकत, सो क्यों कर ना देख्या सहूर ।
ल्याया तुमारे अर्स में, हुकम जबराईल जहूर ॥१००॥

सिजदा जित सरीयत का, तित आए लिखाई पुकार ।
एते किन वास्ते लिखे, ए तुम अजहूं न किया विचार ॥१०१॥

किन लिखाए सखत सौगंद, जो सरीयत सामी बल ।
तिन सबको किए सरमिंदे, हाए हाए अजूं याद न आवे असल ॥१०२॥

दुनी बरकत सफकत फकीरों, और अल्ला कलाम ।
उठाए दुनी से जबराईल, ल्याया अपने मुकाम ॥१०३॥

महंमद मेंहेंदी ईसा अहमद, बड़ा मेला इसलाम ।
जित सूर फूंक्या असराफीले, होसी चालीस सालों तमाम ॥१०४॥

किन उठाए हिंदू ठौर सिजदे, किन मिलाए आखिर निसान ।
किन खड़े किए मोमिन, कराए पूरन पेहेचान ॥१०५॥

१. चक्र में फँसी । २. दिन । ३. रात ।

ए झंडा किने खड़ा किया, ए जो हकीकी दीन ।
ए लाखों लोक हिंदुअन के, इनको किनने दिया आकीन ॥१०६॥

ए जो द्वार अर्स अजीम का, किन खोल्या कुंजी ल्याए ।
इलम लदुन्नी मसी बिना, और काहू न खोल्या जाए ॥१०७॥

ए जो बुजरकी महंमद की, मेयराज हुआ इन पर ।
महंमद साहेदी ईसे मेंहेंदी बिना, कोई दूजा देवे क्यों कर ॥१०८॥

उठे दीन सखत बखत में, पसर्‌या सबों में कुफर ।
करें रूहें कुरबानी इन समें, ए क्यों होए रसूल रब बिगर ॥१०९॥

किन सुख देखाय अर्स के, बहु विध बिना हिसाब ।
अनुभव अपना देख के, हाए हाए अजूं न उड़्या ख्वाब ॥११०॥

उतर आए कही रूहअल्ला, सुख सब अर्सों हकीकत ।
पाई हक सूरत की अनुभव, दई निसबत मारफत ॥१११॥

बहु बिध भेज्या फुरमान, तिन में सब अर्सों न्यामत ।
खिलवत वाहेदत सुध भई, और सुध दई कयामत ॥११२॥

दोऊ हादियों दई साहेदी, मिलाए दिए निसान ।
तो भी लज्जत ना पाई रूहों नें, हाए हाए जो एती भई पेहेचान ॥११३॥

हौज जोए की साहेदी, और जिमी बाग जानवर ।
दई जुदी जुदी दोऊ साहेदी, तो भी दिल गल्या नहीं पत्थर ॥११४॥

दोए अर्स कहे दोऊ हादियों, कही अर्सों की मोहोलात ।
कही अमरद और किसोर, ए अर्स सूरत हक जात ॥११५॥

भेज्या बेसक दारू हैयाती, तुम पे मेरे हाथ हबीब[1] ।
किए चौदे तबक मुरदे जीवते, तुम को ऐसे किए तबीब[2] ॥११६॥

न थी हिंमत आप उठे की, सो तुम उठाए चौदे तबक ।
ऐसा किया बैठ नासूत में, तुमें इनमें रही न सक ॥११७॥

१. प्यारा । २. वैध ।

ऐसे बेसक होए के, तुमें अजूं न अर्स लज्जत ।
एता मता ले दिल में, हाए हाए तुमें दरदा भी न आवत ॥११८॥

हाए हाए ए देख्या बल जुलमत का, दिल ऐसा किया सखत ।
ना तो एक साख मिलावते, अर्स अरवा तबहीं उड़त ॥११९॥

स्याबास तुमारी अरवाहों को, स्याबास हैड़े सखत ।
स्याबास तुमारी बेसकी, स्याबास तुमारी निसबत ॥१२०॥

धंन धंन तुमारे ईमान, धंन धंन तुमारे सहूर ।
धंन धंन तुमारी अकलें, भले जागे कर जहूर ॥१२१॥

अर्स बताए दिया तुमको, और बताए दई वाहेदत ।
सहूर इलम कुंजी सब दई, बैठाए मांहें खिलवत ॥१२२॥

एता मता जिन दिया, तिन आप देखावत केती बेर ।
पर तुमें राखत दोऊ के दरम्यान, ना तो क्यों रहे मोह अंधेर ॥१२३॥

बड़ाई तुमारी बका मिनें, निपट दई निहायत ।
तुमें खुदा कर पूजसी, ऐसी और ना काहू सिफत ॥१२४॥

ऐसी हुई न होसी कबहूं, जो तुम को दई साहेबी ।
ए सुध अजूं तुमें ना परी, सुध आगूं तुमें होएगी ॥१२५॥

तुम खेल में आए वास्ते, करी कायम जिमी आसमान ।
तिन सब के खुदा तुमको किए, बीच सरभर लाहूत सुभान ॥१२६॥

सो भी पूजें तुमारे अक्स[1] को, तुम आए असल वतन ।
तिन सबकी लज्जत तुमें आवसी, सब तले तुमारे इजन[2] ॥१२७॥

ए सब बातें ले दिल में, और दिलको लिख्या अर्स ।
भिस्त करी तुम कायम, होसी तामें बड़ा तुमें जस ॥१२८॥

तुम दई भिस्त बका ब्रह्मांड को, तिनमें जरा न सक ।
किए नाबूद से आपसे, तो भी गुन जरा न देख्या हक ॥१२९॥

१. प्रतिबिंब । २. हुकम ।

सो तुमें याद आवसी, ओ तुमें करसी याद ।
तुमें पूजें जिमी बका मिने, अजूं इनका केता ल्योगे स्वाद ॥१३०॥

तुम मांगी है बुजरकी, तिन से कोट गुनी दई ।
दे साहेबी ऐसे अघाए, चाह चित्त में कहूं न रही ॥१३१॥

क्यों देवें तुमको साहेबी, बीच जिमी फना मिने ।
तिन से तुमारी उमेदें, होएं न पूरन तिने ॥१३२॥

तुम मांगी बीच ख्वाब के, जित आगे अकल चलत नाहें ।
धनी देवें आप माफक, याकी सिफत न होए जुबांएँ ॥१३३॥

तुम आए तिन जिमीय में, जिनमें न काहूं सबर ।
पेहेलें बिन मांगे दई तुमको, अब होसी सब खबर ॥१३४॥

खेल देखाया तिन वास्ते, उपजे तुमको चाह ।
ए खेल देख के मांगोगे, जानो होवें हम पातसाह ॥१३५॥

सो कई पातसाही जिमी पर, करें पातसाही बीच नासूत ।
कई तिन पर इंद्र ब्रह्मा फरिस्ते, तापर पातसाह मांहें मलकूत ॥१३६॥

कई कोट मलकूत जात हैं, जबरूत के एक पलक ।
ए सब पातसाही फना मिने, इनों का खुदा नूर हक ॥१३७॥

नूरजलाल आवे दीदारें, जो अपन बैठे मांहें लाहूत ।
तिन चाह्या देखों रूहों इस्क, तुमें तो देखाया नासूत ॥१३८॥

तुमें नासूत देख दिल उपज्या, करें पातसाही फना में हम ।
मैं दई पातसाही बका मिने, सो अब देखोगे सब तुम ॥१३९॥

ए सुध तुमको ना हुती, तो तुम थोड़ा मांग्या निपट ।
कोट गुना दिया तुमको, खोल देखो अंतर पट ॥१४०॥

जैसी तुमारी साहेबी, करी मेहेर तिन माफक ।
सुध हुए खुसाली होएसी, जो करी अपने मासूक हक ॥१४१॥

देखो अचरज महामत मोमिनों, जो बेसक हुए हो तुम ।
तुमें किन दई एती बुजरकी, दिल अर्स कर बैठे खसम ॥७४२॥

॥प्रकरण॥२९॥चौपाई॥२२११॥

प्रकरण तथा चौपाइयों का संपूर्ण संकलन

प्रकरण ४६८, चौपाई १६३७६

॥ सिनगार सम्पूर्ण ॥